जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक 18वां

सितंबर 2022



राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता



माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी को पी17ए की द्वितीय स्टील्थ युद्धपोत 'उदयगिरी' के जलावतरण के अवसर पर वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा एमडीएल स्मृतिचिन्ह से सम्मानित करते हुए



माननीय राज्यपाल महाराष्ट्र राज्य श्री भगत सिंह कोशयारी द्वारा राजभवन में 'उत्कृष्ट गृहपत्रिका' का आशीर्वाद पुरस्कार ग्रहण करते हुए – डॉ संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मा.सं.), श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं राजभाषा) एवं श्री पी डी सिद्दीकी, उप प्रबंधक (राजभाषा)

सितंबर 2022

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि)

मुख्य परामर्शदाता

डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक मण्डल

श्री अरुण कुमार चान्द, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध)
श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)
श्री पी डी सिद्दीकी, उप प्रबंधक (राजभाषा)
सुश्री जयंतिका मुखर्जी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
डॉ. सुमेध के हाडके, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मुद्रक

रेखा प्रिन्टर्स
7, गांवदेवी दर्शन, ब्रम्हदेव खोत मार्ग,
डॉकयार्ड रोड, माझगांव, मुंबई - 400010.

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड,
डॉकयार्ड रोड, मुंबई - 400010.
फोन - 22-23710456

सितंबर 2022

विषय-सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से..... 3

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश..... 4

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश..... 5

संपादकीय..... 6

परियोजना 17ए की तीसरी स्टेल्थ फ्रीगेट "तारागिरी" 7
- सौमित्र मिश्रा, मुख्य प्रबंधक (पी15बी)

पनडुब्बी और देश में उसकी भूमिका 11
- श्री कैलाश सिंह, प्रबंधक (हल-पूर्व खंड)

"आज़ादी का अमृत महोत्सव" 17
- श्री जे एम डाभी, उप प्रबंधक (त.से.)

मेगजीन अग्निशमन प्रणाली के स्वदेशी विकास का संक्षिप्त विवरण 20
- श्री गजराज सिंह मीणा, प्रबंधक (स्वदेशीकरण)

गुरु की महानता 21
- अरुण बाळकृष्ण राणे (ऑफिस स्टाफ)

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग 22
- श्री पराग दुसाने, पीए कम क्लर्क (पूर्व खंड योजना)

तकनीकी युग में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव 24
- श्री संजय शिरसाट (मुख्य प्रबंधक - सीआईटी)

हिंदी का साथ, हिंदी का विकास, हिंदी पर विश्वास 27
- श्री पी डी सिद्दीकी, उप प्रबंधक-राजभाषा

रिश्तो की एक बहुत सुंदर कहानी 28
- मोना अग्रवाल, (पत्नी) प्रवीण अग्रवाल, मुख्य प्रबंधक (पी15बी-योजना)

गांव की याद 29
- श्री प्रकाश चंद्र झा, उप महाप्रबंधक (जनि-कार्य)

वो मार्च 2021 का दौर 30
- श्री विनीत एस वाघ, उप महाप्रबंधक (रुपांकन)/ ज.नि. रुपांकन-उपस्कर

अनुवाद क्षेत्र में विविध आयाम 32
- जयंतिका मुखर्जी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

वीर योद्धा की झलक 35
- श्री मनोहर घोले (ऑफिस स्टाफ)

कोरोनाकाल में मेरी देवभूमि की यात्रा 37
- श्री सिमनलाल आर्य, लिपिक-ए (राजभाषा अनुभाग)

विद्यासागर का परोपकार 39
- सनेही प्रसाद (इलैक्ट्रिशियन)

गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस 40
- श्री अमित कुमार, प्रबंधक (वाणिज्य-सामग्री-क्रय)

एक वेल्डर से उप महाप्रबंधक 42
- श्री अशोक कनौजिया, उप महाप्रबंधक (सीआईटी)

मैले कपड़े 43
- श्रेया तोरस्कर, डीईओ

पूस की रात 44
- राजराजेश्वरी भट, पीए (डीओएस)

इक्कीसवीं सदी में हिंदी 48
- श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं राजभाषा)

सतर्क भारत, समृद्ध भारत 51
- डॉ सुमेध के हाडके, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (राजभाषा)

साठोत्तरी कहानी : रचना का सच 53
- श्री ऋतुराज, उप प्रंबधक (संपदा)

तताँरा-वामीरो कथा 56
- श्री असाउल्लाह खान, सहायक क्लार्क (फॉरवर्ड डिजाइन)

महामारी कोविड - 19 का आर्थिक प्रभाव 59
- श्री संजय भगवान आढ़ाव, पीए (सतर्कता विभाग)

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियां 61



अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' के 18वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा गृह पत्रिका वर्ष में दो बार प्रकाशित होती है। पत्रिका में एमडीएल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्पाद संबंधी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा वर्णन, सरकारी योजनाएँ, समारोह और विभिन्न कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है।

हमने सन् 1960 के अधिग्रहण के बाद से कुल 799 जहाजों का निर्माण किया है। हमारे मौजूदा डिजाइन पोर्टफोलियो में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों तरह के ग्राहकों के लिए विविध प्रकार के उत्पाद शामिल हैं। जिसमें 26 युद्धपोत शामिल हैं, जिनमें उन्नत विध्वंसक से लेकर मिसाइल बोटों के साथ-साथ 6 पनडुब्बियां भी शामिल हैं।

'आजादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर हमने आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण का संकल्प लिया है। भारत सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं के द्वारा देश में नए प्रौद्योगिकी और अनुसंधान को बढ़ावा देने के मार्ग पर प्रयासरत है। हमारी कंपनी भी राष्ट्र के पोत एवं पनडुब्बी निर्माता और अग्रणी शिपयार्ड होने के नाते रक्षा संबंधी उत्पादों में आनेवाली चुनौतियों को सुवसर में बदलने के लिए तैयार है। एमडीएल रक्षा क्षेत्र से संबंधित नए उत्पादों का निर्माण करने में कुशल एवं सक्षम है।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित सभी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सदैव एमडीएल का राजभाषा अनुभाग प्रयासरत रहता है। हिंदी संघ की राजभाषा है इसलिए हिंदी का अधिकतम प्रचार एवं प्रसार करना तथा अपने दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का उपयोग करना प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी की जिम्मेदारी है। एमडीएल इस दिशा में सार्थक प्रयास कर राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में मुख्य भूमिका निभा रहा है।

इस अंक में एमडीएल के उत्पाद, युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माण के साथ, आजादी का अमृत महोत्सव, गव्हर्नमेंट-ई-मार्केट, अग्निशमन प्रणाली, इक्कीसवी सदी में हिंदी तथा सरकारी योजनाओं/कार्यक्रमों एवं ज्ञानवर्धक सूचनाओं का समावेश करने का प्रयास किया गया है।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका का 18वां अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होगा।

शुभकामनाओं सहित.....

नारायण।

वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम,एनएम भानौ(नि)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश

निदेशक के रूप में पदभार संभालने के पश्चात एमडीएल की गृह पत्रिका 'जलतरंग' के प्रकाशन पर पहली बार संदेश देने से मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। इस पत्रिका के प्रकाशन वर्ष 2014 से ही पत्रिका को पुरस्कार प्राप्त हुए है। पत्रिका को 2015 में राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार एवं 2016 में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है तथा 62 मुंबई उपक्रम टॉलिक से प्रथम पुरस्कार तथा स्कोप एवं हिंदी के विकास से जुड़ी अनेक संस्थाओं से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इससे प्रमाणित होता है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री ज्ञानवर्धक, रुचिकर, पठनीय और उपयोगी होती है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना के साथ बढ़ाया जाए। इस दिशा में प्रगति करते हुए राजभाषा विभाग ने अनुवाद हेतु प्रौद्योगिकी आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर 'कंठस्थ' को विकसित किया हैं, जिससे कार्यालय में अनुवाद करना आसान हो गया है। हिंदी भाषा सीखने के लिए भी 'लीला हिंदी ऐप' के माध्यम से अंग्रेजी के साथ 14 अन्य भारतीय से हिंदी सीखी जा सकती है।

आज सूचना संचार के युग में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रचार-प्रसार को देखते हुए कंप्यूटर, मोबाइल तथा अन्य एप्लिकेशन में हिन्दी की सुविधा उपलब्ध होने से हिन्दी में टाइप करना और लिखना आसान हो गया है। हम इन तकनीकी सुविधाओं के माध्यम का प्रयोग कर हिन्दी के प्रगति के लिए अधिक से अधिक सराहनीय कार्य कर सकते हैं।

'जलतरंग' के 18वें अंक में एमडीएल के जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाएँ प्रकाशित हुई है उन्हें विशेष धन्यवाद देता हूँ और इस संदेश के माध्यम से सभी एमडीएल सदस्यों को हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देने की अपील करता हूँ।

मैं 'जलतरंग' पत्रिका के प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ और इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

वासुदेव

कमांडर वासुदेव पुराणिक, भानौ(नि)
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)



कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की गृहपत्रिका 'जलतरंग के 18वां अंक के प्रकाशन पर अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका एमडीएल के उत्पादों एवं उससे जुड़े कार्यों की जानकारी कंपनी के सभी सदस्यों तक पहुँचाने का कार्य करती है। हमारा उद्देश यह रहता है कि 'जलतरंग' पत्रिका को अधिक सारगर्भित बनाते हुए पाठकों की रूचि और नवीनतम जानकारी के साथ लेख प्रकाशित करें।

जलतरंग का प्रकाशन और हिंदी कार्यान्वयन संबंधी कार्यों से मैं प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ हूँ। हमेशा से ही पत्रिका की भाषा शैली सरल एवं सुबोध रखने का प्रयास किया जाता है ताकि पाठक वर्ग रूचि के साथ सामग्री एवं लेख को पढ़ सके। एमडीएल, राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम और निर्धारित सभी लक्ष्यों का अनुसरण करते हुए हिंदी का अधिकतम प्रचार-प्रसार करने में अग्रणी कार्य कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि राजभाषा पत्रिका को प्राप्त होने वाले पुरस्कारों ने हमारा मनोबल को बढ़ाया है। मैं उन सभी पाठकों के प्रति एवं पत्रिका में योगदान देनेवाले सभी लेखकों के प्रति सादर आभार प्रकट करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के लेखकों एवं माननीय पाठकों का अमूल्य सहयोग इसी प्रकार इस पत्रिका के लिए प्राप्त होता रहेगा।

आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम को सफल बनाने के लिए हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के महत्व समझते हुए हमें आज विकास के मार्ग पर चलना होगा तभी हमारा आत्मनिर्भरता का सपना साकार होगा। हम 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर ज्ञान और प्रौद्योगिकी में सामंजस्य रखते हुए राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रसार में अपनी सहभागिता प्रदान करें।

भविष्य में पत्रिका के प्रगति के लिए मंगलकामनाओं के साथ हार्दिक शुभकामनाएँ !

संतोष कु मल्लिक

डॉ. संतोष कुमार मल्लिक
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)



संपादकीय ....

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत का अग्रणी शिपयार्ड है। यह महाराष्ट्र में पश्चिम समुद्र तट पर स्थित है। इसका विकास 1774 में हुआ। प्रारम्भ में यहाँ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों की मरम्मत होती थी। उसके बाद भारत सरकार ने 14 मई 1960 को माझगांव डॉक का अधिग्रहण किया और आज यह विशालकाय रूप में विकसित होकर निरंतर बुनियादी सुविधाओं के विकास के साथ देश की समुद्री सीमाओं की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

हिंदी देश के अधिकांश जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसके महत्व को देखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर 1949 को 'संघ की राजभाषा हिंदी एवं देवनागरी लिपि' को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया। इसलिए 14 सितंबर को प्रति वर्ष 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के उद्देश्य से राजभाषा नीति का कार्यान्वयन करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और इसके प्रति एमडीएल निरंतर प्रयत्नशील है।

आज वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने का संकल्प जनवरी 1975 में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपूर में हुआ था। इसके पश्चात संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा बनाने के लिए हमारे राष्ट्रनेता सतत प्रयत्नशील है और अमेरिका, रूस एवं ब्रिटेन जैसे देश हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन दे रहे हैं।

पत्रिका का मूल उद्देश्य कंपनी में हिन्दी की प्रगति को बढ़ावा देना है और अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना है। कंपनी के विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहने के बावजूद भी साहित्यिक रुचि बनाए रखने और उसे लेखन के रूप में लिपिबद्ध करना आसान कार्य नहीं है जिसे हमारे अधिकार एवं कर्मचारी बखूबी कर रहें हैं।

मैं राजभाषा अनुभाग के प्रयास की सराहना करता हूँ जिन्होंने बेहतरीन पाठ्य सामाग्री का समावेश इस पत्रिका में किया है। आशा और विश्वास है कि पत्रिका के विविधतापूर्ण सामग्री और नवीनता के लिए पुरस्कार प्राप्त होंगे।

अरूण कु चान्द

श्री अरूण कुमार चान्द
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

परियोजना 17ए की तीसरी स्टेल्थ फ्रिगेट 'तारागिरी'



श्री सौमित्र मिश्रा
मुख्य प्रबंधक (पी15बी)

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) ने परियोजना 17ए के तीसरे स्टेल्थ फ्रिगेट, 'तारागिरी' (यार्ड 12653) के 11 सितंबर 2022 की लॉचिंग के साथ भारत के 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' पहल में गौरवशाली इतिहास बनाया है। वाईस एडमिरल अजेंद्र बहादुर सिंह, पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएसएम, एडीसी, एफओसी-इन-सी पश्चिमी नौसेना कमान की पत्नी श्रीमती चारु सिंह, अध्यक्षा, एनडब्ल्यूडब्ल्यूए (पश्चिमी क्षेत्र) ने मुख्य अतिथि के रूप में नामकरण किया है। वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद एवीएसएम एनएम, भानौ (नि), अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, एमडीएल, वाईस एडमिरल के एम देशमुख एवीएसएम, वीएसएम, सीडब्ल्यूपी एंड ए, और भारतीय सशस्त्र बलों के अन्य वरिष्ठ अधिकारी, एमडीएल और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति लॉन्चिंग समारोह में उपस्थित थे।

इस पोत को एकीकृत निर्माण पद्धति का उपयोग करके बनाया गया है जिसमें विभिन्न भौगोलिक स्थानों में हल ब्लॉक निर्माण और एमडीएल में स्लिपवे पर एकीकरण / निर्माण शामिल है। तारागिरी की कील लेइंग 10 सितंबर 2020 को रखी गई थी और इसकी अगस्त 2025 तक सुपुर्दगी होने की उम्मीद है। पोत को लगभग 3510 टन के लॉन्च वजन के साथ जलावतरण किया गया है। पोत को भारतीय नौसेना के इन-हाउस डिजाइन संगठन यथा नौसेना डिजाइन ब्यूरो द्वारा डिजाइन किया गया है। एमडीएल विस्तृत डिजाइन और निर्माण कार्य कर रहा है, जिसकी देखरेख युद्धपोत अधिदर्शी दल (मुंबई) द्वारा किया जाता है।

परियोजना 17ए की पहली पोत, 'नीलगिरी' 28



जहाज का रुपांकन



प्लेट कटिंग

सितंबर 2019 को जलावतरण किया गया था और 2024 की पहली छमाही में समुद्री परीक्षणों के लिए अपेक्षित है। पी17ए श्रेणी का दूसरा पोत 'उदयगिरी' 17 मई 2022 को लॉचिंग की गई थी। 2024 की दूसरी छमाही के दौरान समुद्री परीक्षण शुरू होने की उम्मीद है। चौथे और अंतिम पोत की कील लेइंग 28 जून 2022 को पहले ही रखी जा चुकी है। परियोजना 17ए का कुल लागत लगभग रु. 25,700 करोड़ है।

149.02 मीटर लंबा और 17.8 मीटर चौड़ा जहाज, दो गैस टर्बाइनों और 02 मुख्य डीजल इंजनों के सीओडीओजी संयोजन द्वारा संचालित है, जो 28 समुद्री मील (नॉट) से अधिक की गति लगभग 6670 टन विस्थापन प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। पी17ए फ्रिगेट के हल निर्माण में इस्तेमाल किया जाने वाला स्टील स्वदेशी रूप से विकसित डीएमआर 249ए है जो सेल द्वारा निर्मित एक लो कार्बन माइक्रो एलॉए ग्रेड स्टील है। स्वदेशी रूप से डिजाइन किए गए 'तारागिरी' में अत्याधुनिक हथियार, सेंसर, उन्नत कार्रवाई सूचना प्रणाली, एकीकृत मंच प्रबंधन प्रणाली, विश्व स्तरीय मॉड्यूलर रहने की जगह, परिष्कृत बिजली वितरण प्रणाली और कई अन्य उन्नत सुविधाएं होंगी। इसे सरफेस टु सरफेस सुपरसोनिक मिसाइल प्रणाली से लैस किया जाएगा। दुश्मन के विमानों और एंटी-शिप क्रूज मिसाइलों के खतरे का मुकाबला करने के लिए डिज़ाइन की गई जहाज की वायु रक्षा क्षमता वेर्टिकल जलावतरण और लंबी दूरी सरफेस टु एयर में वार करने वाली मिसाइल प्रणाली के आसपास घूमेगी। दो 30 मिमी रैपिड-फायर गन जहाज को निकट-रक्षा क्षमता प्रदान करेगी जबकि एक एसआरजीएम गन उसे प्रभावी नौसैनिक गनफायर सहायता प्रदान करने में सक्षम बनाएगी। स्वदेशी रूप से विकसित ट्रिपल ट्यूब लाइट वेट टॉरपीडो जलावतरणर और रॉकेट जलावतरणर जहाज की एंटि-सबमैरिन क्षमता में पंच जोड़ देंगे।

उल्लेख किया कि एमडीएल कई दशकों से भारतीय नौसेना का करीबी और महत्वपूर्ण सहयोगी है। शिपयार्ड पिछले कुछ वर्षों में काफी विकसित हुआ है और जटिल युद्धपोतों के निर्माण में त्रुटिहीन ट्रैक रिकॉर्ड है।

इस अवसर पर बोलते हुए, एमडीएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद ने कहा कि तारागिरी का शुभारंभ भारतीय नौसेना को ब्लू वाटर नेवी बनाने की दिशा में एमडीएल की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। फ्रिगेट भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' पहल का एक जीता जागता उदाहरण है। उन्होंने कहा कि कोविड-19



प्लेट का निर्माण



यूनिट फैब्रिकेशन

महामारी और महत्वपूर्ण सामग्री की आपूर्ति श्रृंखला में संबंधित व्यवधान के बावजूद, एमडीएल ने वित्तीय वर्ष 2021-22 और 2022-23 में दो युद्धपोतों और एक पनडुब्बी का जलावतरण के साथ-साथ एक मिसाइल गाइडेड विध्वंसक और दो स्कॉर्पीन पनडुब्बियों को सुपुर्द किया। एमडीएल परियोजना 15बी का दूसरा विध्वंसक, मोरमुगाओ और पांचवीं स्कॉर्पीन पनडुब्बी वागीर क्रमश: 22 सितंबर और 22 दिसंबर को देने की तैयारी कर रहा है। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने आगे उल्लेख किया कि एमडीएल ने स्वदेशी रूप से विकसित हाइड्रोजन ईंधन सेल संचालित पोत को सफलतापूर्वक जलावतरण किया है और एक मिडगेट पनडुब्बी के डिजाइन और निर्माण पर भी काम कर रहा है।

एमडीएल के पास वर्तमान में लगभग रुपये 43,379 करोड़ (31 जुलाई, 2022 तक) की ऑर्डर बुक है, जिसमें बड़े पैमाने पर परियोजना 15बी के 4 मिसाइल गाइडेड विध्वंसक, परियोजना 17ए के 04 स्टेल्थ फ्रिगेट और 06 स्कॉर्पीन श्रेणी पनडुब्बियां शामिल हैं। परियोजना 15बी का पहला जहाज, आईएनएस विशाखापत्तनम 28 अक्टूबर 21 को भारतीय नौसेना को सुपुर्द किया था, दूसरा जहाज 'मोरमुगाओ' कठोर समुद्री परीक्षणों से गुजर रहा है और 2022 में सुपुर्द होने की संभावना है, तीसरा जहाज 'इंफाल' वर्तमान में आउटफिटिंग और ट्रायल्स के विभिन्न सहायक उपकरणों को तैयार करने के अग्रिम चरण प्रगति पर है। पी15बी श्रेणी के चौथे पोत सूरत को 17 मई 2022 को जलावतरण किया गया था।

एमडीएल पहले ही भारतीय नौसेना को परियोजना 75 की छह स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बियों में से चार, अर्थात् 'कलवरी', 'खंडेरी', 'करंज' और 'वेला' की सुपुर्दगी कर चुका है। पांचवीं पनडुब्बी 'वागीर' दिसंबर 2022 तक सुपुर्दगी के लिए तैयार हो रही है। छठी और आखिरी पनडुब्बी 'वागशीर' 20 अप्रैल 2022 को जलावतरण की गई थी और इसका परीक्षण चल रहा है।

एमडीएल एक एसएसके श्रेणी सबमरीन का मीडियम रिफिट एंड लाइफ सर्टिफिकेशन (एमआरएलसी) कर रहा है। इसने पारंपरिक पनडुब्बियों के लिए लाईफ साइकल सपोर्ट बनाने और प्रदान करने के लिए एमडीएल की स्थिति को एकमात्र भारतीय शिपयार्ड के रूप में स्थापित किया है।

एमडीएल के पास उनकी परिप्रेक्ष्य योजनाओं के



एक यूनिट का आंतरिक दृश्य



महत्वपूर्ण उपकरणों को शिप-इन करना

आधार पर भारतीय नौसेना और भारतीय तटरक्षक बल की बल स्तर की आवश्यकताओं को देखते हुए एक मजबूत भविष्य दृष्टिकोण है। एमडीएल ने विविधीकरण अभियान शुरू किया है। एमडीएल शिपिंग कंटेनर निर्माण के व्यवसाय में उद्यम कर रहा है और पहले ही मेसर्स कंटेनर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (कॉनकॉर) से कुल 2500 कंटेनरों के दो ऑर्डर प्राप्त कर चुका है।

एमडीएल ने समकालीन विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे और सुविधाओं के आधुनिकीकरण और उन्नयन का काम वर्चुअल रियलिटी लैब, प्रॉडक्ट डेटा प्रबंधन, प्रॉडक्ट लाईफ साइकल मैनेजमेंट के साथ पूरा कर लिया है; मॉड्यूलर एकीकृत निर्माण जो हमें एक साथ 10 युद्धपोतों और 11 पनडुब्बियों के निर्माण/मरम्मत करने की क्षमता को सक्षम बनाता है।



जहाज का जलावतरण



पोस्ट ट्रायल्स की कमिशनींग

पनडुब्बी और देश में उसकी भूमिका



श्री कैलाश सिंह
प्रबंधक (हल-पूर्व खंड)

पनडुब्बियों के उपयोग ने विश्व का राजनैतिक मानचित्र बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पनडुब्बियों का सर्वाधिक उपयोग सेना में किया जाता रहा है और ये किसी देश की नौसेना का विशिष्ट हथियार बन गई हैं। यद्यपि पनडुब्बियां पहले भी बनाई गई थी, किन्तु ये उन्नीसवीं शताब्दी में लोकप्रिय हुई तथा सबसे पहले प्रथम विश्व युद्ध में इनका जमकर प्रयोग हुआ। सन 1620 से लेकर अब तक पनडुब्बियों की तकनीक और निर्माण में आमूलचूल बदलाव आया। सन 1950 में परमाणु शक्ति से चलने वाली पनडुब्बियों ने डीजल चलित पनडुब्बियों का स्थान ले लिया। इसके बाद समुद्री जल आक्सीजन ग्रहण करने वाली पनडुब्बियों का भी निर्माण कर लिया गया। इन दो बड़े अविष्कारों से पनडुब्बी निर्माण क्षेत्र में क्रांति सी आ गई। आधुनिक पनडुब्बियां कई सप्ताह या महिनों तक पानी के भीतर रहने में सक्षम हो गई।

बदलते परिवेश में अनुप्रयोग (Application of Submarine) :

द्वितीय विश्वयुद्ध में भी पनडुब्बियों का उपयोग परिवहन के लिए सामान को एक स्थान से दुसरे स्थान तक ले जाने के लिए किया जाता था। आजकल इनका प्रयोग पर्यटन के लिए भी किया जाने लगा है। काल्पनिक साहित्य संसार और दिलचश्प चलचित्रों के लिए पनडुब्बियों का प्रयोग किया जाता है। पनडुब्बियों पर कई लेखकों ने पुस्तकें भी लिखी है। इन पर कई उपन्यास भी लिखे जा चुके हैं। पनडुब्बियों की दुनिया को छोटे परदे पर कई TV serials में दिखाया गया है। Hollyhood के कुछ चलचित्रों जैसे आक्टोपस1, आक्टोपस2 और द कोर में समुद्री दुनिया के मिथको को दिखाने के लिये भी पनडुब्बियों को दिखाया गया है।

आतंरिक सुरक्षा व्यवस्था (Internal Safety Features) :

पनडुब्बी के भीतर कृत्रिम रूप से जीवन योग्य सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। आधुनिक पनडुब्बियां अपने चालक दल के लिए प्राणवायु आक्सीजन समुद्री जल के विघटन की प्रक्रिया से प्राप्त करती है। पनडुब्बियों में कार्बन-डाई-आक्साइड को अवशोषित करने की भी व्यवस्था होती है ताकि पनडुब्बी के भीतर कार्बन-डाई-आक्साइड ना भर जाए। आक्सीजन की पर्याप्त उपलब्धता के लिए पनडुब्बी में आक्सीजन जेनेरेटर (O_2 Generator) लगा होता है जो एक टंकी आक्सीजन से भर देता है। आग लगाने पर बचाव के लिए भी व्यवस्था की जाती है। आग लगने की स्थिति में जिस भाग में आग लगी होती है उसे शेष पनडुब्बी से विशेष रूप से बने परदों की सहायता से अलग कर दिया जाता है ताकि विषैली गैसे बाकि पनडुब्बी में न फैले।

भारतीय नौसेना में पनडुब्बी (Submarine in Indian Naval Fleet) :

विश्व की सभी प्रमुख नौसेनाओं के समान ही भारतीय नौसेना ने भी अपने बेड़े में पनडुब्बियों को सम्मिलित किया है। भारतीय नौसेना के बेड़े (Fleet) में वर्तमान में 16 डीजल चालित पनडुब्बियां हैं। ये सभी पनडुब्बियां मुख्य रूप से रूस या जर्मनी में बनी हुई है। वर्ष 2010-2011 से इस बेड़े में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा 06 और पनडुब्बियों को शामिल किया जा

रहा है। भारतीय नौसेना पोत (आईएनएस) अरिहंत (अरि :– शत्रु, हंत: मारना अर्थात शत्रु को मारने वाला) परमाणु शक्ति चालित भारत की प्रथम पनडुब्बी है। इस 6000 टन के पोत का निर्माण केंद्र विशाखापत्तनम में 2.9 अरब डालर की लागत से किया गया है। इसको बनाने के बाद "भारत" वह छठा देश बन गया जिनके पास इस प्रकार की पनडुब्बियां हैं।



माझगांव डॉक लिमिटेड में निर्मित – P75 के अंतर्गत स्कोर्पिन क्लास की अटैक सबमरीन

भारतीय नौसेना में क्लासवर्ग (Groubed by Class) :

भारतीय नौसेना में क्लासवर्ग (Groubed by Class) और पताका अंक के अनुसार निम्नलिखित कुल 16 पनडुब्बियां (Submarines) सेवाएँ दे रही हैं ये इस प्रकार से सूचीबद्ध (Listed) की जा सकती है।

क्लास	टाइप	बोट्स	ओरिजिन	डिसब्लासमेंट	नोट
न्यूक्लेअर	पावर	सबमरीन			
अरिहंत क्लास	बैलिस्टिक मिसाइल सबमरीन सीएसएसबीएन	आईएनएस अरिहंत सीएसआई	इंडिया	6000 टन्स	

क्लास	टाइप	बोट्स	ओरिजिन	डिसब्लासमेंट	नोट
		डीजल – इलेक्ट्रिक सबमरीन			शिशुमार एवं शंकुश शेड्यूल फोर मिड लाइट रेफिट वर्तमान समय में शिशुमार का माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में रिफिट का कार्य चल रहा है।
शिशुमार क्लास (टाइप 209 सबमरीन)	अटैक सबमरीन	आईएनएस शिशुमार (एस 44) आईएनएस शंकुश (एस 45) आईएनएस शल्की (एस 46) आईएनएस शंकुल (एस 47)	वेस्ट जर्मनी और इंडिया	1850 टन्स	
सिंधुघोष क्लास (किलो–क्लास)	अटैक सबमरीन	आईएनएस सिंधुघोष (एस 55) आईएनएस सिंधुराज (एस 57) आईएनएस सिंधुरतन (एस 59) आईएनएस सिंधुकेसरी (एस 60) आईएनएस सिंधुकिर्ती (एस 61) आईएनएस सिंधुविजय (एस 62) आईएनएस सिंधुराष्ट्र (एस 65)	सोवियत यूनियन रूस	3076 टन्स सिंधूराज एंड सिंधूकेसरी करंटली अंडर गोइंग मिड लाइफ रेफिट	
कलवरी क्लास (स्कॉर्पीन क्लास)	अटैक सबमरीन	आईएनएस कलवरी (एस 21) आईएनएस खंडेरी (एस 22) आईएनएस करंज (एस 23) आईएनएस वेला (एस 24) आईएनएस वागीर (एस 25) आईएनएस वाग्शीर (एस 26)	फ्रेंच एवं इंडिया अंडर कंस्ट्रक्ट एंड सी ट्रायल इन एमडीएलसी	1775 टन्स	



सेलिंग के समय SSK क्लास की "शंकुल"

वर्तमान भारत में पनडुब्बी का निर्माण (Present Scenario Construction of Submarine in India) –

वर्तमान में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (भारत) में निर्मित कलवरी क्लास पर महत्वपूर्ण तथ्य कलवरी क्लास सबमरीन/पनडुब्बी डीजल इलेक्ट्रिक अटैक सबमरीन स्कॉर्पीन क्लास पर आधारित भारतीय नौसेना के लिए बनाई गई है। क्लास और सबमरीन का नाम पूर्व में मौजूद पनडुब्बियों पर आधारित है। सबमरीन की डिजाइन फ्रेंच नेवल डिफेंस और एनर्जी कंपनी (डीसीएनएस) के द्वारा की गई है।

क्लास ओवरव्यू

नाम : कलवरी क्लास

बिल्डर्स (निर्माता) : माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड

संचालक : भारतीय नौसेना

पूर्ववर्ती : सिंधुघोष क्लास और शिशुमार क्लास

उत्तरवर्ती : परियोजना–75 आई क्लास सबमरीन

लागत रुपये 23652 करोड़ (एक्विवलेन्ट रुपये 290 बिलियन या युएस $3.6 बिलियन फॉर छह सबमरीन)

अप्रोक्स रुपये 3942 करोड़ (एक्विवलेन्ट रुपये 48 बिलियन या युएस $600 मिलियन फॉर पर यूनिट)

फर्स्ट कमीशन : 2017

योजनाबद्ध : 6 सबमरिन

बनाए : 6 सबमरीन

योजनाबद्ध : 6

पूरी की हुई : 6

इन कमीशन : 4

सक्रीय कार्यात्मक : 4

सामान्य विशेषताएं (General Characteristics)

प्रकार (Type) : अटैक पनडुब्बी

विस्थापन (Displacement) : सरफेस 1615 टन्स

सबमर्गेड 1775 टनस

लम्बाई (Length) : 67.5 मीटर (221 फिट 5 इंच)

बीम (Radius) : 6.2 मीटर (20 फिट 4 इंच)

ऊंचाई (Height) : 12.3 मीटर (40 फिट 4 इंच)

ड्राफ्ट (Draft) : 5.8 मीटर (19 फिट)

प्रापल्शन (Propulsion) : 5 x MTU 12V.376 SE 84

डीजल इंजन

360 बैटरी सेल्स

डीआरडीओ पीएएफसी फ्यूल सेल एआईपी (एक्सपेक्टेड टू बी एडेड इन 2023)

गति (Speed) : सरफेस 11 Knots (20 Km/n, 13 mph)

Submerged 20 Knots (37 Km/n, 23 mph)

सीमा : 6500 नॉटिकल मिल्स (12000 किमी) at 8 किमी सरफेस

550 नॉटिकल मिल्स (1020 किमी) at 4 किमी सबमेर्गेड तक

टिकाव : 50 दिन

परिक्षण गहराई : 350 मीटर (1150 फिट)

सैन्यकर्मी : 8 अधिकारी

35 नाविक

इलेक्ट्रॉनिक वरफेयर : सी303/एस एंटी-तोर्पेड़ो counteraneusure

अर्ममेंट : 6x533 mm (21in) torbedo tubes for 18

sm39 Exocet anti-ship missiles

s3sm (MICA) anti-air missiles

30 mines in place of torpedoes

महत्वपूर्ण घटनाएँ

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत में ही नहीं अपितु विश्व में पनडुब्बी निर्माण में अग्रणी स्थान रखता है। यह समय-समय पर शिप और पनडुब्बी को भारतीय नौसेना को सुपुर्द करता रहा है। इस कड़ी में पनडुब्बी के संदर्भ में निम्नलिखित तिथियाँ महत्वपूर्ण हैं:-

नाम	टाइप	यार्ड	बिल्डर	जलावतरण	कमिशिनिंग	स्थिति
कलवरी	521	11875	माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड	27/10/2015	14/12/2017	सक्रिय
खंडेरी	522	11876		12/01/2017	28/09/2019	सक्रिय
करंज	523	11877		31/01/2018	10/03/2021	सक्रिय
वेला	524	11878		06/05/2019	25/11/2021	सक्रिय
वागीर	525	11879		12/11/2020	नवंबर 2022 (अपेक्षित)	समुद्री परिक्षण
वागशीर	526	11880		20/04/2022	मार्च 2023 (अपेक्षित)	समुद्री परिक्षण

पनडुब्बियों का वर्गीकरण:-

(1) डीजल इलेक्ट्रिक पनडुब्बियां (SSK):-

- डीजल इलेक्ट्रिक पनडुब्बियां परिचालन हेतु डीजल इंधनों द्वारा चार्ज की गई इलेक्ट्रिक मोटरों का उपयोग करती हैं। इन इंजनों को संचालित करने के लिये हवा और इंधन की आवश्यकता होती है, इसलिए उन्हें बार-बार सतह पर आना पड़ता है, जिससे उनका पता लगाना आसान हो जाता है।
- एस एस के पनडुब्बियां में से चार शिशुमार श्रेणी की पनडुब्बियां हैं, जिन्हें वर्ष 1900 के दशक में जर्मनी के सहयोग से भारत में लाया और बनाया गया था।
- किलो श्रेणी या सिंधुघोष श्रेणी की आठ पनडुब्बियां

हैं जिन्हें वर्ष 1984 और वर्ष 2000 के बीच रूस (पूर्व सोबियत संघ सहित) से ख़रीदा गया था।

- छः कलवरी श्रेणी की स्कॉर्पीन पनडुब्बी (पी–75) हैं, जिसका निर्माण फ्रांस के नेवल ग्रुप के सहयोग से भारत के माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में पूर्ण होने की ओर अग्रसर है।

2) परमाणु शक्ति आक्रामक पनडुब्बी (SSN):

- SSN अनिश्चित काल तक समुद्र के भीतर रहकर काट कर सकते हैं; यह केवल चालक दल की अपर निर्भर करता है। ये पनडुब्बियां टॉरपीडो, एंटी–शिप क्रूज मिसाइल और लैंड अटैक क्रूज मिसाइल जैसे कई सामरिक हथियारों से भी लैस है।
- भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस और चीन के साथ छह देशों में एसएसएन है।
- भारत द्वारा आईएनएस चक्र 2 एसएसएन पनडुब्बी रूस से ली गयी है।

3) परमाणु शक्त बैलिस्टक मिसाइल युक्त पनडुब्बी:

- यह एक धीमी गति से चलने बाला "बाम्बर" या बमबारी करने वाला यंत्र और परमाणु हथियारों के लिए एक गोपनीय लाँच प्लेटफार्म है।
- अरिहंत और निर्माणाधीन तीन एसएसबीएन सामरिक बल कमान (SFC) का हिस्सा है।

भारत की आधुनिकीकरण योजना:

- 30 वर्षीय योजना : वर्ष 1999 में सुरक्षा पर कैबिनेट समिति द्वारा अनुमोदित स्वदेशी पनडुब्बी निर्माण के लिए 30 वर्षीय योजना (2000-30) निर्मित की गयी, जिसके तहत एक विदेशी मूल उपकरण निर्माण (OEM) के सहयोग से भारत में निर्मित दो उत्पादन श्रेणियों की छह पनडुब्बियों के निर्माण की परिकल्पना की गयी थी।
- इन परियोजनाओं को पी–75 और पी–75आई के नाम से जाना जाता है।
- पी–75: इस योजना के तहत छह पनडुब्बियों को भारत में निर्मित करने की योजना था। यह भारत के सबसे बड़े शिपबिल्डर्स, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में अपने अंतिम चरण में चल रही है और यह सन 2023-24 में पूर्ण हो जायेगी।
- पी–75 आई : अभी तक इस परियोजना का संचालन शेष है। यह कुछ तकनीकी समझौता के कारण अधर मैं लटकी है। संभावना है कि यह जल्दी ही देशों के बीच की समस्याओं का हल ढूढ़ लिया जायेगा।

AIP सिस्टम का धीमी गति से विकास:

- वायु स्वतंत्र प्रणोदन (Air Independant Propulsion-AIP) प्रणाली पनडुब्बियों की गोपनीयता बनाए रखती है साथ ही लंबे समय तक पानी के भीतार रहने की अनुमति देती है।
- हालाँकि रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा स्वदेशी AIP प्रणाली के विकास में देरी हुई है।

जब तक नौसैनिक कौशल में अंतर को जल्दी से कम नहीं किया जाएगा, तब तक हिंद महासागर पर चीन के प्रभुत्व का मुकाबला करने में भारत की अक्षमता बनी रहेगी।

अगर भारत को क्वाड (भारत, आस्ट्रेलिया, अमेरिका और जापान) और उसकी इंडो - पैसिफिक महत्वाकांक्षाओं पर बात करनी है, तो रक्षा क्षेत्र में आधुनिकीकरण की देरी को जल्दी से दूर करना चाहिए। भारत को अपनी संबधित क्षमताओं में गिरावट को रोकने के लिये अपनी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और जटिल अधिग्रहण प्रक्रिया को बदलने की आवश्यकता है।

''आजादी का अमृत महोत्सव''



श्री जे एम डाभी
उप प्रबंधक (त.से.)



आजादी का 75 वर्ष ''अमृत महोत्सव'':

भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है। इसे भारत, हिंदुस्तान और आर्यवर्त के नाम से भी जानते है। भारत एक ऐसा देश है जहां के लोग अलग-अलग भाषा बोलते है और विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय और संस्कृती के लोग एक साथ रहते है। इसी वजह से भारत को 'विविधता में एकता' का देश कहा जाता है। भारत का इतिहास अति प्राचीन, अति विशाल और अति गहरा है। ज्ञान, विज्ञान, समृद्धि, कलाकारी, शौर्य और आधात्म से परिपूर्ण है। जब भारत गुलामी की जंजीर से बंधा था तब 15 अगस्त, 1947 को देश अंग्रेजी हुकूमत से आजाद हुआ था। अब देश स्वावलंबी के रास्ते में निरंतन आगे बढ़ रहा है, रोज नई-नई उंचाई को छू रहा है। स्वतंत्रता की 75 वर्षगाँठ पर शुरू हुआ आजादी का अमृत महोत्सव स्वावलंबन की दिशा में उठाया गया एक और कदम है।

आजादी का अमृत महोत्सव क्या है:

15 अगस्त, 2022 को देश आजादी के 75 वर्षगाँठ मनायेगा। इस आजादी के 75 वर्षगाँठ को मनाने के लिए 75 हफ्तों पहले आजादी का अमृत महोत्सव का आगाज हुआ। प्रधानमंत्री जी ने 12 मार्च, 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में इस आजादी का अमृत महोत्सव का उद्घाटन किया था। ये महोत्सव 12 मार्च 2021 से 15 अगस्त 2023 तक चलेगा ।

आजादी का अमृत महोत्सव का महत्व:

प्रधानमंत्री मोदीजी ने 12 मार्च, 2022 में अमृत महोत्सव की शुरुआत की थी क्योंकि इसी दिन महात्मा गांधी और उनके साथियों ने नमक पर लगाए गए अंग्रेजी हुकूमत द्वारा लगान के विरोध में 'नमक सत्याग्रह' की शुरुआत की थी। अंग्रेजों ने चाय, कपड़ा और नमक पर अधिकार जमाया हुआ था। महात्मा गांधीजी ने इसी

के विरोध में यात्रा निकाली थी जो की साबरमती आश्रम से शुरू हुई थी। महात्मा गांधीजी ने 24 मार्च, 1930 दांडी में समुद्र के किनारे नमक बनाकर अंग्रेजों के काले कानून को तोड़ा था। ये यात्रा 24 दिन चली थी जिसमें 80 लोग शामिल थे । 390 किलोमीटर तक चली इस पद यात्रा में हजारों लोग जुड़ गए थे।

अमृत महोत्सव मनाने का उद्देश्य:

आज भारत का अपना अलग मुकाम है और निरंतर नई-नई उपलब्धता को पार कर रहा है। आज हर क्षेत्र में भारत आगे है पर जब भारत गुलामी की बेड़ियों से जकड़ा था तब इस देश को स्वतंत्र करने के लिए बहुत से सुपूतों ने बलिदान दिया और बहुत कष्ट सहे। परंतु अभी भी बहुत से लोग है जो आजादी के संघर्ष को नहीं जानते और उन्हें बलिदान की कहानी नहीं पता है इसलिए आजादी के महोत्सव के माध्यम से उन सभी लोगों को आजादी के सही मायने बताना बहुत जरूरी है। इस अमृत महोत्सव में उन वीर सुपूतों को याद करना है, जो अपने परिवार और अपना समस्त जीवन केवल देश को समर्पित कर दिए हैं। कवि प्रदीप की रचना के माध्यम से भारत के वीर शहीदों की याद में कुछ पंक्तियां हैं -**''ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी, जो शहीद हुए है, उनकी जरा याद करो कुर्बानी।''**

अमृत महोत्सव के कार्यक्रम:

आजादी का महोत्सव किसी विशेष जाति, धर्म अथवा राज्य नहीं बल्कि संपूर्ण भारत के लिए महत्वपूर्ण है। अमृत महोत्सव एक राष्ट्रीय महोत्सव है। आजादी का अमृत महोत्सव 75 सप्ताह तक मनाया जायेगा और हर सप्ताह में अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित कराए जा रहे हैं और उसके माध्यम से लोगों के मन में देश प्रेम को जागरूक किया जाता है, इस बार आजादी का अमृत महोत्सव 12 मार्च से शुरू हुआ था जो अगले 75 सप्ताह तक चलेगा।

आजादी का अमृत महोत्सव सभी सरकारी संस्थान में धूमधाम से मनाया जा रहा है। कुछ जगहों पर रैलियां भी निकाली जाती है ताकि इस का महत्व लोगों तक पहुंच सके। देश में जितने भी सरकारी भवन है उन सब में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। स्कूल के बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते है और अपने कला के माध्यम से आजादी का महोत्सव मनाते है। स्कूल में बहुत अच्छे से तैयारी की जा रही है और बच्चों को आजादी के संघर्ष की कहानियां बताई जा रही है। 15 अगस्त 2021 से कार्यक्रम की शुरुआत हो चुकी है जिसमें देश के संगीत, नृत्य, प्रवचन, प्रस्तावना और पठन शामिल है। इस महोत्सव में देश की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

आजादी के अमृत महोत्सव में चरखे से लोकल फ़ॉर वोकल को बढ़ावा दिया गया। इसके लिए साबरमती आश्रम में एक चरखा रखा गया है जब कोई व्यक्ति लोकल व्यापारी और कंपनी का सामान खरीदेगा और उसकी तस्वीर सोशल मीडिया पर लोकल फ़ॉर वोकल का टैग लगा कर सोशल मीडिया में डालेगा उसके तुरंत बाद ये चरखा घूमेगा।

आजादी के 75 वर्ष अमृत महोत्सव में भारत की उपलब्धियां :

आज भारत एक है, अखंड है और बहुत तीव्र गति से हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। अंग्रेज कह कर गए थे हमारे जाने के बाद देश तुम्हारा बिखर जायेगा पर नहीं सोचा था अंग्रेजों ने की भारत सबसे विशाल लोकतांत्रिक रूप में निखर जाएगा। आजादी के बाद भारत को कई कठिनाई का सामना करना पड़ा जैसे की भुखमरी, महँगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार, अपराध इत्यादि लेकिन भारत ने इन सब कठिनाइयों से बाहर निकलते हुए न केवल नए रास्तों बल्कि आत्मनिर्भर भारत एवं सशक्त भारत के रास्ते पर अग्रसर है। भारत की इन्हीं उपलब्धियाँ का विवेचन निम्न दिया है:

1. भारतीय संविधान: भारत ने 26 जनवरी 1950 से संविधान प्रभावी हुआ। इसने वह ढांचा तैयार किया जो सरकार और नागरिकों के मौलिक राजनीतिक कोड,

अधिकारों और कर्तव्यों का सीमांकन करता है। हमारे संविधान ने हमें दुनिया के सबसे बड़े धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक देश का खिताब दिलाया।

2. हरित क्रान्ति: हरित क्रांति वर्ष 1967 में शुरू की गई थी। एक कृषि राज्य होने के बावजूद, भारत में भोजन की कमी थी और बड़ी आबादी को खिलाने के लिए खादयान्न के आयात पर बहुत अधिक निर्भर था। हरित क्रांति ने भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बना दिया। आज भारत दालों का सबसे बड़ा उत्पादक है और विश्व स्तर पर चावल, गेहूं और गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।

3. पोलियो उन्मूलन: 1994 में, भारत में दुनिया के पोलियो मामलों का 60% हिस्सा था। दो दशकों के भीतर, भारत को 2014 में विश्व स्वास्थ्य संगठन से ''पोलियो मुक्त प्रमाणपत्र'' मिला। पोलियो को रोकने के लिए सतर्क आन्दोलन ने जीवन प्रत्याशा को 32 वर्ष (1947) से बढाकर 68.89 वर्ष कर दिया।

4. अंतरिक्ष और प्रौद्योगिकी : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना 15 अगस्त 1969 को हुई थी, जिसने भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान को नई उड़ान दी। 1975 में, भारत ने अपना पहला अंतरिक्ष उपग्रह, ''आर्यभट्ट'' लॉन्च किया, और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। राकेश शर्मा 1986 में अंतरिक्ष में जानेवाले पहले भारतीय बने और वर्तमान में 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत सर्वश्रेष्ठ स्वदेशी प्रौद्योगिकी आधारित लॉन्च वाहनों का निर्माण किया गया है। 2008 में, भारत ने PSLV-C9 के माध्यम से एक ही मिशन में 10 उपग्रहों को कक्षा में भेजने का विश्व रिकॉर्ड बनाया है। हमने चंद्रयान जैसे उपग्रहों को चंद्रमा पर सफलतापूर्वक लॉन्च किया और मंगलयान के माध्यम से अपने पहले प्रयास में मंगल पर पहुचने वाला पहला देश बन गया है।

5. शिक्षा का अधिकार: भारत ने शिक्षा को भारतीय विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाने में एक लम्बा सफ़र तय किया है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2010 शिक्षा को हर बच्चे के मौलिक अधिकार के रूप में पुष्टि करता है, सभी को मुफ्त और अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करता है।

6. शक्तिशाली रक्षा: आज़ादी के बाद भारत ने अपनी रक्षा को मजबूत बनाया है। 1954 में, भारत ने परमाणु उर्जा कार्यक्रम शुरू किया, ऐसा करने वाला वह पहला देश बन गया। 1974 में, भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण ''स्माइलिंग बुद्धा'' नाम से किया, जिसने पांच परमाणु शक्ति संपन्न देशों की सूची में अपना स्थान बनाया। यह 1947 के बाद से भारत की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। आज, भारत के पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सैन्य शक्ति और सबसे बड़ी स्वैच्छिक सेना है।

7. लैंगिक समानता : भारत ने लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए प्रगतिशील कदम उठाएं है। दहेज़ निषेध अधिनियम, 1961 और घरेलु हिंसा अधिनियम, 2005 ने सामाजिक बुराईयों को हतोत्साहित किया है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे कई सरकारी योजनेओं ने देश में लैंगिक भेदभाव को ख़त्म करने का प्रयास कर रहे है।

1947 के बाद से भारत की उपलब्धियां हमारी महान क्षमता का उदाहरण है। मंगलयान हो या योग, ओलिंपिक हो या ब्यूटी पेजेंट, भारत लगातार रिकॉर्ड तोड़ रहा है और इतिहास बना रहा है। समृद्ध संस्कृतियों और विश्वासों के साथ, भारत आगे, एकजुट होकर, सफलता की नई उचाईयों पर जा रहा है।

निष्कर्ष :

आजादी के 75वी वर्षगांठ पर इस अमृत महोत्सव में भारत अपने 75 साल पर उपलब्धियों, 75 साल पर विचार, 75 साल पर एक्शन और 75 साल पर संकल्पशील है, जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए और आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देगा।



श्री गजराज सिंह मीणा
प्रबंधक (स्वदेशीकरण)

मेगजीन अग्निशमन प्रणाली के स्वदेशी विकास का संक्षिप्त विवरण

मेगजीन फायर फाइटिंग सिस्टम भारतीय नौसेना युद्धपोतों पर लगी हुई एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रणाली है। यह प्रणाली भारतीय नौसेना युद्धपोतों के मिसाइलों, बारबेट्स और छोटे सेना के शस्त्रागार के भंडारण के लिए समर्पित कम्पार्टमेंटों पर फिट की गई है।

वर्तमान में मेगजीन फायर फाइटिंग सिस्टम आरओई रूस से खरीदी जा रही है। मेगजीन फायर फाइटिंग सिस्टम का स्वदेशीकरण माझगाँव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (स्वदेशीकरण विभाग) और अग्नि, विस्फोटक एवं पर्यावरण सुरक्षा केंद्र (डीआरडीओ), दिल्ली ने मिलकर सफलतापूर्वक वित्त वर्ष 2021-22 को किया गया।

युद्धपोत पर विभिन्न मेगजीन, बारबेट्स और छोटे सेना के शस्त्रागार के भंडारण के लिए समर्पित कम्पार्टमेंटों के लिए मेगजीन फायर फाइटिंग सिस्टम का कार्य आग का पता लगाना, नियंत्रण करना और आग को बुझाना है। आग का पता लगाने के लिए तापमान, दबाव और इन्फ्रारेड सेंसर का उपयोग किया जाता है। आग लगने की स्थिति में मेगजीन फायर फाइटिंग सिस्टम ऑडियो विजुअल अलार्म को सक्रिय करता है और आग बुझाने या नियंत्रित करने के लिए छिड़काव और अवरोधक प्रणाली को सक्रिय करता है।

एमडीएल स्वदेशीकरण विभाग ने इस प्रणाली के स्वदेशीकरण की शुरुआत की। यह विचार डीआरडीओ को भेजा गया, और दिनांक 17 अक्तूबर 2019 को एमडीएल एवं अग्नि, विस्फोटक एवं पर्यावरण सुरक्षा केंद्र (डीआरडीओ), दिल्ली के बीच इसके विकसित करने के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर हुए। इस प्रणाली को भारतीय उद्योग के माध्यम से निर्माण के लिए लिया गया ओर एमडीएल इसके मैकेनिकल पार्ट का मुख्य विकासक था।



मेगजीन फायर फाइटिंग सिस्टम को अग्नि, विस्फोटक एवं पर्यावरण सुरक्षा केंद्र (डीआरडीओ) एवं नौसेना अधिकारियों के सामने सफलतापूर्वक चालू करते हुए।

स्वदेशीकरण विभाग टीम ने सभी तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रयासों को पूरा किया और रूसी प्रणाली के अनुरूप सटीकता हासिल करते हुए, मेगजीन फायर फाइटिंग सिस्टम का सफलतापूर्वक स्वदेशीकरण किया। रूसी सिस्टम के समकक्ष प्रोटोटाइप का निर्माण अग्नि, विस्फोटक एवं पर्यावरण सुरक्षा केंद्र (डीआरडीओ) परिसर में स्थापित किया गया था। अग्नि, विस्फोटक एवं पर्यावरण सुरक्षा केंद्र (डीआरडीओ) और भारतीय नौसेना ने मेगजीन फायर फाइटिंग सिस्टम का सफलतापूर्वक परीक्षण कर प्रमाणित किया है।

भारतीय नौसेना युद्धपोतों की रिपेयर एवं रिफिट के तहत इस प्रणाली को ऑन-बोर्ड स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। एक बार सफलतापूर्वक स्थापित होने के बाद यह न केवल भारी विदेशी मुद्रा बचत में सक्षम होगा बल्कि एमडीएल को निर्यात ऑर्डर प्राप्त करने का अवसर भी देगा।

एमडीएल स्वदेशीकरण विभाग इस तरह की प्रमुख प्रणालीयों को स्वदेशी बनाने के लिए आगे भी प्रयास करता रहेगा और एमडीएल को निर्यात ऑर्डर प्राप्त करने में सहायता करने के लिए इस तरह से अधिक प्रयास करता रहेगा।

गुरु की महानता



श्री अरुण बाळकृष्ण राणे
(ऑफिस स्टाफ)

'सुभद्र' महात्मा बुद्ध का शिष्य था तथा उन्हीं के आश्रम में रहता था। उसके पास कुछ जानकारी थी। वह इस जानकारी को महात्मा बुद्ध तक पहुँचाना चाहता था, इसीलिए उनके पास आ बैठा। कुछ कहने को मन तो था, मगर वह कह नहीं पा रहा था।

"कहो! मन में क्या उलझन है?" महात्मा बुद्ध ही पूछ बैठे।

"मैं अब यात्रा में न जाकर, यहीं आश्रम में रहते हुए आपकी तथा सभी भिक्षुओं की कुछ सेवा करना चाहता हूँ। ...कृपया मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।"

"ऐसा क्यों?"

"जी! मैंने कई बार, कुछ लोगों को अपने धर्म पर, आप पर, भिक्षुओं पर कटाक्ष करते सुना। उनके द्वारा की गई निंदा बड़ी कटु होती है। नहीं सुन सकता मैं।"

"ओह! तो यह कारण है तुम्हारा यात्रा में न जाने का।"

"जी! इसीलिए।"

"सुभद्र! हार गए हिम्मत! निंदकों ने कभी भी, किसी भी युग में, किसी भी महान पुरुष को नहीं बख्शा। सदा निंदा करते रहे। यह ऐसी ज्वाला है जिसकी लपेट में महापुरुष आते ही रहे हैं। ...फिर भला हम और आप कैसे बच सकते हैं?"

कहते-कहते महात्मा बुद्ध रुके। सुभद्र पर करुणा-भरी दृष्टि डालकर बोले- "जानते हो, सूर्य का स्वभाव है प्रकाश बिखेरना। ...जल का स्वभाव है शीतलता देना...इसी प्रकार संतों का स्वभाव है करुणा बिखेरना...। हमें भी अपने स्वभाव पर अडिग रहना है। ...निंदक हमारी निंदा कर पाप के भागी बन रहे हैं। तुम अपने पथ पर चलते रहो।" इतने से ही शिष्य की समझ में आ गई गुरु की महानता।



अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग

श्री पराग दुसाने
पीए कम क्लर्क (पूर्व खंड-योजना)

विश्व भाषा उस भाषा को कहते हैं जिसका प्रयोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है और जिस भाषा को लोग दूसरी भाषा या अतिरिक्त भाषा के रूप में सीखते हैं। हिंदी भाषा की बढ़ती जा रही लोकप्रियता का अंदाजा इसी से ही लगाया जा सकता है कि विश्व भर में हिंदी सीखने वालों की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ है। पिछले 8 वर्षों में हिंदी बोलने की मांग में 50% की वृद्धि हुयी है। भारत देश के चतुर्दिक विकास को दृष्टिगत रखते हुए अनिवासी भारतीय भी अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं जिससे भारत में या तो वे निवेश कर सकें अथवा वापस लौट आयें।

वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग काफी हो रहा है। उसकी शुरुआत दो दशक पहले ही हो चुकी थी। 1980 और 1990 के दशक में भारत में उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई। परिणामस्वरूप अनेक विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में आई तो हिंदी के लिए एक खतरा दिखाई दिया था, क्योंकि वे अपने साथ अंग्रेजी लेकर आई थी, आज मनोरंजन की दुनिया में हिंदी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा है।

अंग्रेजों ने अपने औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी को थोपा था। शताब्दियों बाद अंग्रेजों के तत्कालीन उपनिवेश में अंग्रेजी अभी तक जनभाषा नहीं बन पाई है। इसके अतिरिक्त भारत के राज्यों में हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में अपनी जड़े जमा चुकी है सिर्फ यहीं तक नहीं बल्कि पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, दक्षिण एशिया, खाड़ी के देशों आदि में भी हिंदी अपनी लोकप्रियता में सतत वृद्धि करती जा रही है। यद्यपि वर्तमान में चीनी भाषा अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है परंतु शीघ्र ही चीनी भाषा का स्थान हिंदी ग्रहण कर लेगी क्योंकि विश्व में भारतीय चाहे तमिलनाडु के हो, केरला या उड़िसा के हो अथवा किसी अन्य भारतीय राज्य के जब यह सभी लोग विदेशों में आपस में मिलते हैं तो इनकी संपर्क भाषा हिंदी ही होती है। इसके अतिरिक्त विदेशों में हिंदी पठन-पाठन का भी चलन भी रफ्तार पकड़ने लगा है।

राष्ट्र को विश्व बिरादरी अपेक्षाकृत ज्यादा महत्व और स्वीकृती देती है तथा उसके प्रति आत्मनिर्भरता में इजाफा पाती है तो उस राष्ट्र की तमाम चीजें स्वतः महत्वपूर्ण बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अंतरराष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान-सदृश है। यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती उपस्थिति हिंदी का उन्नयन कर रही है। आज हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्वभाषा का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है। आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी स्वीकार्यता और व्याप्ति का अनुभव किया जा सकता है। जब हम हिंदी को विश्व भाषा में रूपांतरित होते हुए देख रहे हैं।

"पुरे राष्ट्र की आशा है
हिंदी अपनी भाषा है
जात-पात के बंधन को तोड़
हिंदी सारे देश को जोड़े"

जब हम उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी का परीक्षण करते है तो पाते है कि वह न्यूनाधिक मात्रा में प्रायः सभी

महाद्वीपों पर खरी उतरती है। आज वह विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्वपूर्ण राष्ट्रों–जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस है में किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती है। वह विश्व के विराट फलक पर नवल चित्र के समान प्रकट हो रही है।

वर्तमान उत्तर आधुनिक परिवेश में विशाल जनसंख्या भारत और चीन के साथ–साथ हिंदी और चीनी के लिए भी फायदेमंद सिद्ध हो रही है। हमारे देश में 1980 के बाद 70 करोड़ से ज्यादा बच्चे पैदा हुए हैं। जो विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षित प्रशिक्षित हो रहे हैं। वे सन 2025 तक विधिवत प्रशिक्षित हो रहे हैं। अपनी सेवाएं देने के लिए वैश्विक स्तर पर उपलब्ध होंगे। दूसरी ओर जापान की साठ प्रतिशत से ज्यादा आबादी साठ साल पार करके बुढ़ापे की और बढ़ रही है। यही हाल आगामी पंद्रह सालों में अमेरिका और यूरोप का भी होने वाला है। ऐसी स्थिति में विश्व का सबसे तरुण मानव संसाधन होने के कारण भारतीय पेशेवरों की तमाम देशों में लगातर मांग बढ़ेगी। जाहिर है कि जब भारतीय पेशेवर भारी तादाद में दूसरों देशों में जाकर उत्पादन के स्त्रोत बनेंगे। वहाँ की व्यवस्था परिचालन का सशक्त पहिया बनेंगे तब उनके साथ हिंदी भी जाएगी। ऐसी स्थिती में जहाँ भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की प्रक्रिया में होगा वहाँ हिंदी स्वतः विश्वमंच पर प्रभावी भूमिका का वहन करेगी।

हिंदी विश्व के प्रायः सभी महत्वपूर्ण देशों के विश्व विद्यालयों में अध्ययन अध्यापन में भागीदार है। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन–पाठन जो रहा है। आज जब 21वीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान–प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। उसके पास पहले से ही बहु सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। उसने सदा–सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है। हिंदी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। वर्तमान समय भारत और हिंदी के तीव्र एवं सर्वोन्मुखी विकास का द्योतन कर रहा है और हम सब से यह अपेक्षा कर रहे कि हम जहाँ भी हैं, जिस क्षेत्र में भी कार्यरत हैं वहाँ ईमानदारी से हिंदी और देश के विकास में हाथ बटाएँ। सारांश यह कि हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रेसर है। वह विश्व स्तर पर बहुत तेजी से प्रसार हो पा रही है।

आज स्थिति यह है कि गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से हिंदी का काव्य साहित्य अपने वैविध्य एवं बहुस्तरीयता में संपूर्ण विश्व में संस्कृत काव्य को छोड़ कर सर्वोपरी है। 'पद्मावत', 'रामचरित मानस', तथा 'कामायनी' जैसे महाकाव्य विश्व की किसी भी भाषा में नहीं है। वर्तमान समय में हिंदी का कथा साहित्य भी फ्रेंच, रूसी तथा अंग्रेजी के लगभग समकक्ष है।

आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ–सामग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाएं। इसके लिए समवेत प्रयास करने की जरूरत है। यह भी संभव है जब लोग अपने दायित्वबोध को गहराईयों तक महसूस करें और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित हो। आज समय की मांग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हो ताकि तमाम निष्कर्षों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व की सबसे शक्तिशाली और बहुप्रयुक्त भाषा होने के बावजूद यदि प्रतिष्ठा सहित संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा नहीं बन पाई है तो यह विश्व के हर छठे व्यक्ति के मानवाधिकार का उल्लंघन है। अंतः हमे एकजुट होकर हिंदी को उसका स्वाभाविक अधिकार दिलाने के लिए प्रयास करना चाहिए।



श्री संजय शिरसाट
मुख्य प्रबंधक (सीआईटी)

तकनीकी युग में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव

'निर्माण क्षेत्र को प्रौद्योगिकियों, पूँजी तथा नवीन विपणन व्यवहारों के इस्तेमाल द्वारा हमारें पारंपरिक कौशल तथा ज्ञान के बल पर विकसित किया जा सकता है। विद्युत तथा अन्य नई तकनीकों के आविष्कार के कारण पिछले एक सौ पचास वर्षों में निर्माण क्षेत्र में तीव्र बदलाव देखा गया है। यह क्रांति न्यूमेरिकली कंट्रोल्ड रोबोटिक्स के प्रवेश के साथ जारी रही है। अब सॉफ्टवेयर तथा डिजाइन उपकरणों के विकास के साथ हम इसमें नए रुझान महसूस कर रहे हैं। हालाँकि औद्योगिक रूप से उन्नत देशों की तुलना में भारत काफी पीछे था, अब सॉफ्टवेयर, डिजाइन तथा वर्चुअल रियलिटी के इस्तेमाल में उसकी सक्षमताओं का लाभ उठाने का समय आ गया है। वर्ष 2020 तक निर्माण में इस्तेमाल होनेवाली डिजिटल प्रौद्योगिकियों, इंटेलिजेंट प्रणालियों, माइक्रो रोबोट तथा नैनो इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों में उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिलेगी।

पिछले छह दशकों के दौरान माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स में प्रगति उल्लेखनीय रही है और इसने निर्माण में एक नया आयाम जोड़ दिया है। 70 के दशक में माइक्रो-प्रोसेसर से 2000 में एम.ई.एम.एस (माइक्रो-इलेक्ट्रो मैकेनिकल सिस्टम) तथा नेनो प्रौद्योगिकी तक की प्रगति को स्पष्ट करता है। भविष्य में नेनो फेब्रिकेशन, बायो-कंप्यूटिंग, मॉलीकुलर कंप्यूटिंग तथा क्वांटम कंप्यूटिंग का है।

स्मार्ट सिस्टम टेक्नोलॉजी

सेंसर्स के विकास में, माइक्रो-इलेक्ट्रो मैकेनिकल सिस्टम्स (एम.ई.एम.एस.) का गहरा प्रभाव रहा है, खासकर इलेक्ट्रॉनिक्स के लघु रूपण (मिनिएचराइजेशन) के साथ। लघु रूपण न केवल क्रियात्मक प्रणालियों के आकार को घटा देता है बल्कि उसमें गति, प्रदर्शन, विश्वसनीयता, क्षमता तथा प्रगति को बढ़ाते हुए लागत को कम करने की बड़ी क्षमता होती है। एक और प्रगति है, नेनो-प्रौद्योगिकियों का विकास, जो लघु रूपण तथा अत्यंत सक्षम प्रणालियों के विकास को प्रेरित कर रही हैं।

नेनो प्रौद्योगिकी का अर्थ है अणुओं के पुनर्व्यवस्थापन द्वारा उत्पादों का निर्माण तथा उत्पाद के गुणधर्म इस बात पर निर्भर करते हैं कि उन अणुओं को किस प्रकार व्यवस्थित किया गया है। जब एक नेनो कण या फाइबर बनाया जाता है तो उसके आकार के कारण उनमें न्यूनतम त्रुटियाँ होती हैं और यह उसकी मजबूती तथा मापांक को बढ़ाता है।

कंप्यूटर इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग (सी.ए.एम.)

कंप्यूटिंग क्षमता (हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर दोनों) में प्रगति के कारण अब किसी नए उत्पाद के अध्ययन के लिए फैक्टरी या प्रयोगशाला में प्रोटोटाइप (प्रारूप) बनाना आवश्यक नहीं रह गया है। कई उत्पादों को कंप्यूटरों पर डिजाइन किया जा सकता है और उनके व्यवहार को सिस्टम में अनुकृत किया जा सकता है।

ऐसी अनुकृतियों के द्वारा एक अनुकूलतम डिजाइन चुनकर कंप्यूटर प्रोग्राम निर्माण प्रक्रियाओं को

सीधे प्रेरित कर सकता है। इन प्रक्रियाओं को सामान्यत: कंप्यूटर ऐडेड डिजाइन (सी.ए.डी.) तथा कंप्यूटर ऐडेड मैन्युफैक्चरिंग (सी.ए.एम.) कहते हैं।

ये क्षमताएँ उपभोक्ताओं द्वारा नई प्रकार की मांगों को प्रेरित कर रही हैं। हर उपभोक्ता को बहुत से विशेष विकल्पों का प्रस्ताव दिया जा सकता है। उपभोक्ताकृत उत्पाद (कस्टमाइज्ड प्रोडक्ट) डिजाइन तथा लचीला निर्माण (फ्लेक्सिबल मैन्युफैक्चरिंग) वर्तमान में कई विकसित देशों में प्रचलन में है।

आज निर्माण में प्रयुक्त होनेवाले उपकरणों में काफी वृद्धि हो चुकी है, लेजर और वाटर जेट का अधिक-से-अधिक प्रयोग किया जा रहा है। ऐरोस्पेस उद्योग में उन्नत निर्माण प्रक्रियाओं, जैसे फ्रिक्शन स्टिर वेल्डिंग, माइक्रोवेव वेल्डिंग तथा डिफ्यूजन बॉण्डिंग का प्रयोग किया जा रहा है। अब विशेषीकृत स्टील या सिरेमिक्स कटिंग टूल उद्योग पर एकाधिकार नहीं कर सकते। इसपर यकीन करना कठिन है कि लेजर को भारी स्टील प्लेट काटने तथा साथ ही आँखों की एक नाजुक सर्जरी के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

कंप्यूटर तथा निर्माण प्रक्रिया को साथ चलाकर भारत बड़े पैमाने पर लाभ उठा सकता है। हमारी सफलता की कई कहानियाँ हैं, हालाँकि इसकी क्षमता की तुलना में छोटी हैं, जो हमें इस कल्पना को साकार करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

तीव्र प्रारूपण प्रौद्योगिकियां (या फ्री फॉर्म फेब्रिकेशन) बिना किसी अन्य मशीनरी के सीधे सी.ए.डी. इनपुट से जटिल थ्री-डी पुरजे बना सकती हैं।

निर्माण में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव

निर्माण में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग के तीन घटक हैं-डिजाइन तथा सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग के साथ प्रोसेस इंजीनियरिंग और उत्पादन क्षमता। यह उपभोक्ता उम्मीदों की समझ तथा गुणवत्ता प्रबंधन से जुड़ा होता है। प्रौद्योगिकी, जो निर्माण का एक महत्वपूर्ण घटक है, इसमें एन.सी., सी.एन.सी., डी.एन.सी., सी.ए.डी./सी.ए.एम./कंप्यूटर ऐडेड प्रोसेस प्लानिंग (सी.ए.पी.पी.), ऑटोमेटेड गाइडेड वेइकल (ए.जी.वी.)/रोबोट/ऑटोमेडेड स्टोरेज एंड रिट्रीवल सिस्टम (ए.एस.आर.एस.) / फ्लेक्सिबल मैन्यूफैक्चरिंग सिस्टम (एम.एम.एस.) / कंप्यूटर इंटीग्रेटेड मैन्यूफैक्चरिंग (सी.आई.एम.) और रेपिड प्रोटोटाइपिंग तथा वेब-आधारित डिजाइन शामिल होता है।

उसे क्रियात्मक तथा प्रयोगात्मक बनाने के लिए प्रौद्योगिकी तथा इस्तेमाल की जानेवाली क्रियाविधि हैं समकालिक इंजीनियरिंग, रोबस्ट डिजाइन, ग्रुप टेक्नोलॉजी (जी.टी.), जस्ट इन टाइम (जे.आई.टी.) मैन्यूफैक्चरिंग रिसोर्स प्लानिंग (एम.आर.पी.-2), एंटरप्राइस रिसोर्स प्लानिंग (ई.आर.पी.)। यह देखा जा सकता है कि निर्माण में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग ज्ञान, कौशल, निर्माण, उपकरण, तकनीक तथा जन-शक्ति को समन्वित कर देता है।

रणनीतिक क्षेत्र में निर्माण

पिछले कुछ वर्षों में भारत में रणनीतिक क्षेत्र में निर्माण में काफी प्रगति हुई है। कंप्यूटरों के बढ़ते इस्तेमाल के साथ डिजाइन तथा प्रोसेस इंजीनियरिंग के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। सी.ए.डी/सी.ए.एम., एफ.एम.एस./सी.आई.एम., रेपिड प्रोटोटाइपिंग, वेब-आधारित डिजाइन तथा वर्चुअल रियालिटी जैसी नई प्रौद्योगिकियों के आविष्कार के साथ कॉन्करेंट इंजीनियरिंग जैसी नवीन प्रबंधन क्रियाविधियों ने कम लागत तथा समय में उच्च गुणवत्तावाले रक्षा उत्पादों के उत्पादन को संभव बनाया है। यह प्रक्रिया रोबोटिक्स तथा सी.एन.सी. मशीनों जैसे नए हार्डवेयर प्रणालियों के आविष्कार के साथ और तेज

हुई है। समय के साथ इसरो द्वारा प्रक्षेपण यानों के अपने विकास कार्यक्रम, डी.आर.डी.ओ. द्वारा अपने मिसाइल कार्यक्रमों तथा ए.डी.ए. द्वारा अपनी एल.सी.ए. परियोजना में उल्लेखनीय सफलता के साथ इन निर्माण प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल किया गया है।

सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में उत्पाद तथा प्रोसेस डिजाइन में सी.ए.डी. (कंप्यूटर ऐडेड डिजाइन) दृष्टिकोण कंप्यूटर की असीम क्षमता का लाभ उठाता है। सी.ए.डी. में कई ऑटोमेटेड प्रौद्योगिकियां आती हैं, जैसे किसी उत्पाद के दृश्य गुणों की जाँच के लिए कंप्यूटर ग्राफिक्स तथा उसकी इंजीनियरिंग विशेषताओं का मूल्यांकन करने के लिए कंप्यूटर ऐडेड इंजीनियरिंग (सी.ए.ई.)। डिजाइन अब अधिक समय लेनेवाली क्रिया नहीं रह गई है। सी.ए.डी. तथा सी.ए.ई. को रेपिड प्रोटोटाइपिंग तथा वी.आर. जैसी तकनीकों तक विस्तृत किया गया है, जिससे डिजाइनरों का काम अधिक सरल हो गया है। सी.ए.डी. में मैन्यूफैक्चरिंग प्रोसेस डिजाइन जिसे कंप्यूटर ऐडेड प्रोसेस प्लानिंग (सी.ए.पी.पी.) कहा जाता है, से संबंधित प्रौद्योगिकियां भी आती हैं। सी.ए.पी.पी. को कंप्यूटर नियंत्रित मशीनिंग उपकरणों के लिए निर्देशों के रूप में काम करनेवाले कंप्यूटर प्रोग्रामों को डिजाइन करने में प्रयुक्त किया जाता हैं। परिष्कृत सी.ए.डी. प्रणालियाँ ऑन-स्क्रीन जाँच करने में भी सक्षम होती हैं, जिससे प्रोटोटाइप टेस्टिंग तथा मोडिफिकेशन के आरंभिक चरणों की आवश्यकता नहीं होती। ऑटोमेटेड मैन्यूफैक्चरिंग, प्लानिंग तथा कंट्रोल सिस्टम्स (एम.पी. एंड सी.एस.) कंप्यूटर आधारित सूचना प्रणालियाँ हैं, जो किसी निर्माण क्रिया की प्लानिंग, शिड्यूलिंग तथा मॉनिटरिंग में मदद करती हैं। वे लगातार कार्य अवस्था, सामग्री आगमन आदि के बारे में फैक्टरी से सूचना प्राप्त करते हैं तथा उत्पादन और बिक्री ऑर्डर जारी करते हैं।

इन सभी ऑटोमेटेड प्रौद्योगिकियों को सी.आई.एम. के अंतर्गत साथ लाया गया है। यह निर्माण प्रक्रिया का ऑटोमेटेड रूप है, जहाँ तीन बड़ी निर्माण क्रियाओं – उत्पाद तथा प्रोसेस डिजाइन, प्लानिंग तथा नियंत्रण और स्वयं निर्माण प्रक्रिया को उपर्युक्त ऑटोमेटेड प्रौद्योगिकियों द्वारा समन्वित किया जाता है। इसके अलावा मौखिक तथा लिखित संपर्क की पारंपरिक समन्वयन प्रणाली का स्थान कंप्यूटर प्रौद्योगिकी ने ले लिया है। ऐसे स्वचालित तथा समन्वित निर्माण को 'फैक्टरी ऑफ़ द फ्यूचर' भी कहा जाता है। तिरुचिरापल्ली में हैवी एलॉय पेनेट्रेटर प्लांट (एच.ए.पी.पी.) एक उदाहरण है, जहाँ एफ.एस.ए.पी.डी.एस. (फिन स्टेबलाइज्ड आर्मर पियर्सिंग डिसकेडिंग साबोट) के निर्माण के लिए इस संकल्पना का इस्तेमाल किया गया है। सन 1988 में स्थापित इस फैक्टरी ने उत्पादन, निम्न अस्वीकृति दर तथा बड़ी उत्पादन मात्रा में स्थिरता, एकरूपता तथा निरंतरता को प्रेरित किया है। सामान्यत: जिस काम के लिए 600 कर्मचारियों की आवश्यकता होती, उसे 80 सदस्यीय टीम के साथ तीव्र गति तथा वांछित गुणवत्ता के साथ किया जा रहा है।

ग्रामीण विकास तथा रोजगार प्रावधान में विशाल संभावना के कारण हमने लघु उद्योग क्षेत्र पर विस्तार से चर्चा की। बड़े उद्योग छोटे उद्योगों के जनक हैं और वे राष्ट्रीय विकास में मदद करते हैं। एक विकसित भारत बनाने के लिए हमारे पास प्रचुर मात्रा में उपलब्ध संसाधनों तथा मानवशक्ति के अलावा हमें युवा नेतृत्व की आवश्यकता है, जो बदलाव को प्रेरित कर सके। नेता नए उत्कृष्ट संगठनों के निर्माता हैं। अच्छे नेता चुंबक की तरह हैं, जो संगठन के लिए टीम बनाने में बेहतरीन लोगों को आकर्षित करेंगे तथा विपरीत परिस्थितियों के दौरान भी प्रेरक नेतृत्व प्रदान करेंगे और वे जोखिम से नहीं डरते। निर्माण क्षेत्र की तरह स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी क्रांति देखी जा रही है।

हिंदी का साथ, हिंदी का विकास, हिंदी पर विश्वास



श्री पी डी सिद्दीकी
उप प्रबंधक-राजभाषा

हे भव्य भारत ही, हमारी मातृभाषा हरी भरी।
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि नागरी।।
- मैथिली शरण गुप्त

विश्व प्रसिद्ध भारतीय हिंदी भाषा का साथ हमारे पूर्व जन्मों के संचित पुण्यों का फल है। यह हमारी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, प्रयोजन भाषा के नाम से जानी जाती है। हिंदी हमारे मुख से निकली पहली भाषा है। हिंदी का साथ हमारा ही विकास नहीं करता है, बल्कि हमारे साथ-साथ हिंदी का विकास होता चला जाता है। यही कारण है कि हिंदी का विकास अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच रहा है। भारत नहीं विदेशों में हिंदी ने अपने पाँव जमा लिए हैं। लगभग 70 देशों के 175 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा में शिक्षा दी जा रही है। अब यह भारत में ही नहीं पढ़ाई जाती, ना कि भारत में ही 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, अपितु विश्व हिंदी दिवस पूरे विश्व में मनाया जाने लगा है। अमेरिका में निरंतर हिंदी के प्रचार प्रसार का कार्य खूब तेजी से बढ़ रहा है।

बाजार की उपयोगिता बन जाने के कारण हिंदी का रंग-ढंग दिनों-दिन निखरता जा रहा है। चीन भी हिंदी भाषा को अपने यहाँ सीख रहा है। ब्राह्मी लिपि से निकली देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह भाषा अपने अंदर सभी भाषाओं को समा लेने की शक्ति रखती है। उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली आदि अनेक भाषाओं के शब्दों को सहेजे हुए मंदाकिनी की तरह बहती है। इसका व्याकरण ऐतिहासिक है, संस्कृत की प्राचीन परंपरा को संभालते हुई भारोपीय परिवार से जुड़ी है। भाषा संस्कृति की उदात्तता विश्वमंगल की भावना से ग्रस्त है। यह भाषा संपर्क सूत्र को जोड़ने का अद्भुत कार्य करती है। संवैधानिक रूप से चाहे हम इसे राष्ट्रभाषा न कहें फिर भी भावना के धरातल पर यह हमारी राष्ट्रभाषा ही है। राष्ट्रभाषा के रूप में चर्चा करें तो हिंदी ने पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का कार्य आजादी के समय में किया है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण अर्थात कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक विभिन्न बोलियाँ बोली पढ़ी और लिखी जाती है, लेकिन हिंदी के प्रति सभी के दिल में सम्मान रहा है। भारत को आजाद कराने में देश के कोने कोने से देशभक्तों ने इस देश को जोड़ने का काम किया और हिंदी भाषा को केंद्र में रखा। विचार करें तो गाँधी जी, लाला लजपतराय, लोकमान्य तिलक, सुभाषचंद्र बोस आदि ने हिंदी में जनता के बीच संवाद किया और राष्ट्र को एक सूत्र में बांधा और आजादी प्राप्त हुई।

हिंदी का अस्तित्व प्राचीनतम होने के साथ-साथ उसमें अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की उदात्त शक्ति है। तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, संकर आदि कितने ही शब्द रूपों के कारण हिंदी का शब्दकोश ही व्यापक नहीं हुआ है, बल्कि उसका विकास भी हुआ है और उसमें सबको साथ लेकर चलने की अदम्य शक्ति है। हिंदी भाषा का इतिहास, साहित्य वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से जुड़ा है। भक्ति काल हो या आधुनिक काल सभी काल के रचनाकारों ने देश की सीमाओं को लाँघकर विदेशी जमी पर भी अपने पैर जमाये और

उनको आज भी देश-विदेश में सुना, पढ़ा और उन पर शोध किया जा रहा है। मानवीय मूल्यों की सीख देती हिंदी आज तकनीकी-वैज्ञानिकी शब्दावली को व्यक्त करने में भी समर्थ है। उसकी व्यापकता का दायरा और भी बढ़ा है।

हमें हिंदी को साथ लेकर हिंदी का विकास करना है, इसके लिए हमें हिंदी की शक्ति को पहचानना होगा, उस पर अटल विश्वास रखना होगा। जिस प्रकार ईश्वर पर अटल विश्वास रखकर हमें कार्य में सफलता मिलती है, उसी प्रकार भाषा के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना रखकर हमें कार्य करना होगा। आज हिंदी की जो वैश्विक पकड़ है उसके पीछे हिंदी भाषा प्रेमियों का अटल विश्वास दिखाई देता है। रामविलास शर्मा जी ने कहा है भाषा संस्कृति का वाहन है और उसका अंग भी। हम भाषा को नहीं बनाते है, भाषा हमें बनाती है। हमारे व्यक्तिगतता को निखारती है, समाज में यश दिलाती है। हिंदी भारत के माथे की बिंदी है, उसका गौरव है। हिंदी के साथ हमारा अस्तित्व जुड़ा हुआ है। इसलिए भारतेन्दु हरीशचंद्र जी ने लिखा था।

निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान कै, मिटत न हिय को शूल।।

रिश्तो की एक बहुत सुंदर कहानी



मोना अग्रवाल
(पत्नी) प्रवीण अग्रवाल,
मुख्य प्रबंधक (पी 15 बी- योजना)

एक जौहरी के निधन के बाद उसका परिवार संकट में पड़ गया। खाने के भी लाले पड़ गए। एक दिन उसकी पत्नी ने अपने बेटे को नीलम का एक हार देकर कहा - बेटा, इसे अपने चाचा की दुकान पर ले जाओ। कहना इसे बेचकर कुछ रुपये दे दे।

बेटा वह हार लेकर अपने चाचाजी के पास गया। चाचा ने वह हार अच्छी तरह देख परखकर कहा, बेटा माँ से कहना अभी बाजार बहूत मंदा है। थोड़ा रुककर बेचना, अच्छे दाम मिलेंगे। उसे थोड़े रुपये देकर कहा की तुम कल से दुकान पर आकार बैठना।

अगले दिन से लड़का दुकान पर जाने लगा और वहाँ हीरो की जाँच परख का काम सिखेने लगा। एक दिन वह बड़ा पारखी बन गया। लोग दूर-दूर से हीरे की परख करवाने आने लगे।

एक दिन उसके चाचा ने कहा, बेटा अपनी माँ से वह हार लेकर आना और कहना कि अभी बाजार बहुत तेज है उसके अच्छे दाम मिलिंगे।

माँ से हार लेकर उसने परखा तो पाया कि वह नकली है वह उसे घर पर छोड़कर दुकान आ गया।

चाचा ने पूछा, हार नहीं लाए ?

उसने कहा, वह तो नकली था।

तब चाचा ने कहा-जब तुम पहली बार हार लेकर आए थे, तब मैं उसे नकली बता देता तो तूम सोचते कि आज हम पर बुरा वक़्त आया तो चाचाजी को भी हमारी चीज नकली लग रही है। आज जब तुम्हें खुद ज्ञान हो गया तो पता चल गया कि हार नकली हैं।

शिक्षा :

सच यह है कि ज्ञान के बिना इस संसार में हम जो भी सोचते, देखते और जानते है, सब गलत हैं और ऐसे ही गलत फहमी से शिकार होकर रिश्ते बिगाड़ते है।

"जरा सी रंजिश पर, ना छोड़ो किसी अपने का दामन।। ज़िंदगी बीत जाती है अपनो को अपना बनाने में।"

गांव की याद



श्री प्रकाश चंद्र झा
उप महाप्रबंधक (जनि-कार्य)

क्या जाने कब पड़े जरूरत ,
जीवन के धूप – छाँव में |
संभव हो तो घर एक अपना,
बना के रखना गाँव में ||1||

माना शहर में सुख – सुविधा है,
और भोग विलास के साधन भी|
शिक्षा, स्वास्थ्य की सेवा अच्छी,
यहीं से होता जीवन यापन भी||

पर भीड़ – भड़क्का,भाग दौड़ में,
सुकून का मिलना बड़ा मुहाल है|
कितना सब कुछ सहना पड़ता है,
देखो सब का हाल बेहाल है||

पेट की खातिर नाचे जैसे,
घुँघरू बंधा हो पाँव में |
संभव हो तो ..... ||2||

शहर की एक अपनी फितरत है,
इसका अलग ही होता ढंग है|
मतलब जब तक साथ है तब तक ,
जरूरत भर का होता संग है||

सबकी अपनी अलग दुनियाँ है,
सब अपने में रहता मस्त है|
औरों की फिकर करता है कौन,
जिसकी खुद ही हालत परस्त है||

भाग्य का आखिर क्या भरोसा,
हार – जीत के दाँव में .
संभव हो तो .....||3||

जरूरत जब सुरसा बन जाती,
छोड़ना पड़ता है घर –द्वार|
रोजी– रोटी के खातिर लोग,
जाता है सात समंदर पार||

जिस मिट्टी में बचपन खेला,
सदा रहता उससे नाता है|

भले गगन में उड़े परिंदा,
शाम लौट जमीं पर आता है||

है खुशनसीब गुजर हो जिसका,
अपने पुरखों के ठाँव में.
संभव हो तो.....||4||

कंचा–गोली या लप्पा–छुप्पी,
या फिर गुल्ली– डंडे का खेल|
पेड़ से कूद तालाब नहाते,
तोड़ते अमिया मार गुलेल|

होली, दिवाली, ईद, मुहर्रम,
और भी कितने तीज त्योहार||
मिलजुल कर सब मनाते ऐसे,
जैसे पूरा गाँव है एक परिवार||

अतिथि आने की खबर हो जाती,
कागा के काँव–काँव में.
संभव हो तो.....||5||

जब शरीर थक चूर हो जाता,
और मन हो जाता है बेचैन|
कहाँ से याद गाँव की आती,
और बहने लगते हैं नैन||

दिल पर कितना बोझ पड़ा है,
मन के पाले अरमानों से |
लगता कोई बुला रहा है,
उन खेतों से, खलिहानों से||

है याद खटिया डाल दोपहरी,
सोते नीम की छाँव में.
संभव हो तो.....||6||

क्या जाने कब पड़े जरूरत,
जीवन के धूप – छाँव में|
संभव हो तो घर एक अपना,
बना के रखना गाँव में||



श्री विनीत एस वाघ
उप महाप्रबंधक (रूपांकन)/अनुभाग प्रमुख
ज.नि. रूपांकन-उपस्कर

वो मार्च 2021 का दौर

मानव शरीर एक ऐसा जीता जागता यंत्र है, जिसकी सुरक्षा स्वंय मानव ही कर सकता है। फिर भी मानव जीवन आज ऐसे वातावरण से गुजर रहा है, किसी भी समय, किसी भी स्थान पर, घर के अंदर या बाहर, उसके साथ कोई भी दुर्घटना होने की संभावना बनी रहती है।

ऐसा नहीं है कि दुर्घटनाएँ आज के समय में ही हो रही हैं, पूर्व में भी होती थी,लेकिन उनकी संख्या कम थी या यूँ कहें कि दुर्घटनाएँ होने की संभावना कम थी। कारण था उनका मशीनों से दूरी, उनकी संख्या कम होना।

पी17ए परियोजना मे कंपार्टमेंट ले आउट और पाईप एवं ट्रकिंग ड्राइंग की मांग आसमान छू रही थी। जहाज निर्माण रूपांकन-उपस्कर विभाग के अधिकारियों से स्टाफ तक सब काम के तनावों से ऐसे जखड़े हुए थे मानो जैसे फुरसत नाम की कोई चीज है ये किसी को मालूम ही न था। इस तूफानी हालात को और भयंकर रूप देने के लिए घर पर बिजली बरसने वाली थी, मार्च के अंत में विभाग से आठ ड्राफ्ट्समैन का कार्यकाल खत्म हो रहा था। अगले कई महीनों तक उनके दोबारा लौटने की संभावना ही न थी क्योंकि पुर्नभर्ती का कोई विज्ञापन अभी जारी होना न था। आने वाला समय चुनौती से भरा होने वाला था, इस चुनौती से कैसे निपटे इस विषय पर चर्चा करते विभाग के सारे अधिकारीगण एकत्रित हुए थे। कई पर्यायों पर चर्चा हो रही थी, जैसे ओवर टाइम बढ़ाना, शनिवार ही नहीं बल्कि रविवार को भी काम करना परंतु इन पर्यायों के बाबजूद आठ ड्राफ्ट्समैन का नुकसान भर आने की संभावना न थी। तभी केबिन का दरवाजा ठकठकाया और दो नये चेहरे की युवतियों ने कैबिन में प्रवेश किया और अपना परिचय देते हुए उन्होंने कहा कि वे बोट अप्रेंटिस है, अभी अभी इंजीनियरिंग का खिताब हासिल किया है और अगले एक साल तक वे इसी विभाग में नियुक्त रहेंगे, उसकी बातें सुन कर मुझे ऐसा लगा जैसी भगवान ने हमारी सुन ली हो और हमारे दामन में आशीर्वाद के तौर पर मदद करने इन अप्रेंटिस को भेज दिया हो।

बोट अप्रेंटिस का इस विभाग में नियुक्त होने का यह पहला अवसर न था, इससे पहले भी कई बार बोट अप्रेंटिस आये और चले गए। बोट अप्रेंटिस को सारे यार्ड में विविध विभाग में कुछ कार्यकाल के लिए नियुक्त किया जाता, जैसे मानों रूपांकन विभाग में दो महीनों के लिए एक बैच आता है तो वह बैच में रूपांकन के हर विभाग में एक या दो हप्ता रहेगा और चला जायेगा, फिर उस विभाग में दूसरा बैच आएगा, इस व्यवस्था के कारण जब की अप्रेंटिस सिर्फ एक या दो हप्ते विभाग में रहने वाले है उस पर कोई जिम्मेदारी वाला काम न सौपा जाता था। इस वक्त एक ही बैच पुरे एक साल एक ही विभाग में नियुक्त होगा इस व्यवस्था के कारण कार्यालयीन काम की जिम्मेदारी सौप सकते थे। बोट अप्रेंटिस पर जब

जिम्मेदारी सौंपने की चर्चा अधिकारियों के बीच हुई तो कुछ अधिकारियों ने इन अप्रशिक्षित, जिन्हें काम का कोई अनुभव नहीं है ऐसे अप्रेंटिस पर इतना महत्वपूर्ण जिम्मेदारी वाला काम सौपने पर आशंता जताई, किसी ने यह भी कहा की रूपांकन विभाग में संवेदनशील जानकारी होती है उसके चलते इन नए बच्चों पर काम की जिम्मेदारी देना उचित नहीं है।

फिर उन्हें समझाया कि अपने पास जो ड्राइंग कांट्रेक्टर है उसके पास काम करने वाले कई स्टाफ, नये इंजिनियर है बिलकुल बोट अप्रेंटिस कि तरह वे जैसे अच्छे से काम कर रहे है उसी तरह हम इन्हें भी कुछ दिन ट्रेनिंग दे कर काम सिखा सकते है, रही बात रूपांकन विभाग के संवेदनशीलता को तो पोलिस वेरिफिकेशन होने के बाद ही उन्हें एमडीएल में नियुक्त किया गया है।

फैसला हो गया, बोट अप्रेंटिस पर काम कि जिम्मेदारी तय हो गई किंतु केवल दो अप्रेंटिस से काम न चलनेवाला था, एटीएस विभाग को फोन कर अतिरिक्त दस अप्रेंटिस की मांग कर दी गई और वह तुरंत मंजूर हो गई और इस तरह बारह बोट अप्रेंटिस रूपांकन उपस्कर विभाग में एक साल के लिए नियुक्त हो गए। नियुक्त होते ही सभी अप्रेंटिस को विभाग के नियम कानून शिस्तता के बारे में सतर्क किया गया, संवेदनशीलता की जानकारी दी गई और काम सिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया। बारह में से आठ अप्रेंटिस पी17ए परियोजना में और चार पी15बी परियोजना पर नियुक्त किये गए।

पी17ए के आठ अप्रेंटिस को विविध जिम्मेदारियां दी गई। दो लोग एचवीएसी सिस्टम की ट्रेकिंग मॉडलिंग करने के बाद मैन्युफैक्चरिंग ड्राइंग देने तक का काम करने लगे। इसी तरह दो लोग पाईप स्पूल्स ड्राफ्टिंग बनाने का काम करने लगे। तीन लोगों की टीम अविवा मरीन सॉफ्टवेयर पे काम करते हुए वेट एंट्री करने लगे। पी17ए परियोजना के पीडीएम/पीएसएम इस नए सॉफ्टवेयर पे ड्राइंग अपलोड का काम करने लगे।

एसएपी (सैप) पर डेटा एंट्री करने लगे, सिटिंग ड्राइंग बनाने का काम अप्रेंटिस ने किया। प्लानिंग को ले आउट ड्राइंग भेजने का काम किया। यह सब काम विविध क्षेत्र में प्रवीण अधिकारियों के निगरानी में हो रहा था। जहाँ जहाँ गलती हो वहा उन्हें गलत बता कर सुधार दिया जाता। इस दौरान एक बात नजर आई सभी अप्रेंटिस ने पूरे साल में जी जान लगाकर काम किया, उनके तेजी से बिना चुकते हुए काम करने के तरीकों ने सभी अधिकारियों के आश्चर्यचकित कर दिया।

सभी अप्रेंटिस ने बड़ी ही तेजी से काम सिख लिया था और उतने ही तेजी से अपने काम के बारे में वे आत्मनिर्भर हो गए। आज उन्हें इस विभाग में एक वर्ष पूर्ण होने जा रहा है, पीछे पलट कर देखते है तो कठिन समय पर इन अप्रेंटिस ने देवदूत का काम किया। ये लोग न आते तो विभाग की क्या हालत होती ये सोच कर डर लगता है! हर अप्रेंटिस में काम करने की काबिलियत देखी गई, हमने उनको सराहा, प्रोत्साहित किया किया और सभी अप्रेंटिस आज अपने दिल की बात कहते है की काम करते करते हमे जो सिख मिली है वह क्लास रूम टिचिंग में कभी नहीं मिलती। तो यह विन-विन सिच्यूऐशन हो गई, एमडीएल का काम हुआ और अप्रेंटिस को खूब सिखने को मिला। एमडीएल का हर विभाग इन अप्रेंटिस के कार्य में गुणवत्ता को बढ़ावा देते हुए अपना काम भी कर सकता है।

चंद दिनों में वे एमडीएल छोड़ कर जा रहे है, अपने जिंदगी की नई दिशा धुंडने के लिए जिंदगी में वे प्रगति के चोटी पर पहुंचे और आसमान को छु ले बस यही दुवां है हमारी।



जयंतिका मुखर्जी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

अनुवाद क्षेत्र में विविध आयाम

कभी-कभी प्राचीन ग्रंथों की कुछ बातों की प्रासंगिकता हमें चकित करती है। भगवद्गीता में लिखा है - 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागश:'। इसकी व्याख्या अनेक प्रकार से की गई है। हम वर्तमान युग को 'पेशेवरों का युग' या 'पेशों का युग' कह सकते हैं। इन दिनों किसी का भी परिचय प्राय: उसके पेशे के नाम से ही दिया जाता है। युग-युग में पेशे की परिकल्पना बढ़ती-बदलती रही है। आज तो 'पेशा और पैसा' जुड़वें भाई हो गए हैं। ज्यों-ज्यों जीवन-क्रम का, सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता गया त्यों-त्यों पेशों की संख्या व स्वरूप की भी वृद्धि होती गई। दो सरल उदाहरण लीजिए - हमारे बुजुर्ग ग्रामीण अपने परिवार के लिए जरूरी सारे सामान मंदिरों के मेलों में या गाँव की साप्ताहिक हाटों में खरीदा करते थे। अब भी कई मेले व बाजार हैं। मगर इन दिनों औसतन मोहल्ले में भी पान - सिगरेट की दुकान, पंसारी की दुकान, कागज-पेंसिल आदि लेखन सामग्री की दुकान, सब्जी की दुकान, कपड़े की दुकान, दवाई की दुकान और जौहरी की दुकान - सब अलग-अलग मिलती हैं। मोची, दर्जी, लोहे व टिन की चीजों की मरम्मत करनेवाला ठठेरा आदि भी अपनी दुकानें रखते हैं। टंकन, ड्राइक्लीनिंग, बिजली की मरम्मत आदि नागरिक पेशों के साथ, पुराने पेशों की आटे की चक्की, साइकिल मरम्मत आदि से संबंधित दुकानें भी हर मोहल्ले में मिल जाएँगी। इनके आधार पर आप पेशों की एक सूची बना लें तो उन्नीसवीं सदी की स्थिति और बीसवीं सदी के अंतिम चरण की स्थिति में जमीन-आसमान का फर्क दिखाई पड़ेगा।

वर्तमान युग के नागरिक पेशों में कई व्यवसायों भी शामिल हैं। हम तो सामान्यत: भाषाध्यापक और लेखक - दो ही भाषागत पेशों की बात सोचते हैं। किंतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाषा संबंधी व्यवसाय के व्यापक आयाम अब मिलते हैं। उनमें अनुवादक और दुभाषिया के व्यवसाय प्रमुख रहे हैं। भारत में भी ये व्यवसाय प्रचलित हैं; किंतु यहाँ इन पेशों पर अभी उतना जोर व ध्यान नहीं दिया जा रहा है जितना कि विदेशों में दिया जा रहा है। इंग्लैंड इसका उदाहरण है। श्री इयान स्मिथ ने इंग्लैंड में अनुवादक के व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है। उसमें हमें काफी जानकारी मिलती हैं। इसलिए इंग्लैंड को हम विकसित राष्ट्रों का प्रतीक मान सकते हैं।

अनुवाद का पेशा आधुनिक युग में अत्यधिक विकसित हो चला है। इसका सर्वेक्षण कई प्रकार से हो सकता है। मुख्यतः कार्यक्षेत्र के अनुसार इसका अध्ययन किया जा सकता है। उसके बाद सेवा के रूप में इसकी स्थिति का मूल्यांकन करेंगे। एकल अनुवादक तथा अनुवाद संस्था के स्तर पर भी अनुवाद क्षेत्र के अध्ययन किए जा सकते हैं।

अनुवाद का क्षेत्र

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का क्षेत्र उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में जिस तेजी से विकास कर रहा है, वह आश्चर्यजनक है। क्षेत्रों की विविधता भी अचरज में डालती है। इंजीनियरी, चिकित्सा विज्ञान तथा अंतरिक्ष विज्ञान जैसे अनेक क्षेत्रों में अलग-अलग देश आज शोध में कीर्तिमान स्थापित करने जा रहे हैं। उनके वैज्ञानिक अपनी भाषा में ही आलेख और शोध सामग्री प्रस्तुत करते हैं। कभी-कभी तो वे अंतरराष्ट्रीय पेटेंट भी प्राप्त करते हैं। इस प्रकार जो बहुमुखी विकास कार्यक्रम

होता है, उसकी पूरी जानकारी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के संस्थानों के लिए महत्वपूर्ण है। संस्थानों के विशेषज्ञ व निर्देशक वह सामग्री अपने अनुवादकों से अनुवाद करवाकर ही प्राप्त करते हैं। सामग्री के महत्व, उपयोगिता आदि का विचार वैज्ञानिक ही कर पाते हैं। अनुवादक का काम केवल अनुवाद करना होता है। अपनी जरूरत के अनुसार वैज्ञानिक अनूदित सामग्री को छाँटकर उपयोगी नवीनतम सूचनाएँ संग्रह कर लेते हैं। कभी-कभी वैज्ञानिक अपने अनुवादकों से ही उनका संग्रह भी करवा लेते हैं - यह प्रसंग एवं स्थितियों पर निर्भर है। वैसे विज्ञान व प्रौद्योगिकी केंद्रों के अनुवादक प्राय: सामान्य वैज्ञानिक विषयों के विद्वान होते हैं। वे विशेष अध्ययन और अनुभव से विशिष्ट क्षेत्र की सामग्री के कुशल अनुवादक सिद्ध होते हैं।

व्यापार से जुड़ी हुई संस्थाओं में बैंक, बीमा कंपनी आदि मुख्य हैं। देश भर में जिस बैंक की शाखाएँ होती हैं, उस बैंक को पूरे देश के व्यापार बैंकों की साख, शेयर बाजार की स्थिति का ज्ञान जरूरी होता है। जो अंतरराष्ट्रीय स्तर के बैंक हैं, उन्हें पूरे संसार की व्यापारिक जानकारी प्राप्त करनी होती है। उदाहरणार्थ - यदि जापान का बैंक म्यूनिख में अपनी शाखा खोलता है तो वह जर्मनी की बहुत सारी सूचनाएँ चाहेगा। जर्मनी के अपने ग्राहकों के विषय में भी सूचनाएँ चाहेगा। ऐसी गोपनीय और खुली सूचनाएँ उस बैंक का अनुवादक कक्ष प्रस्तुत कर सकता है। बाहरी एजेंसियों से गोपनीय समाचार इकट्ठा करना कठिन होता है, कभी-कभी अहितकारी भी। अन्य देशों में अपनी साख व लेन-देन बढ़ाने के लिए भी उन देशों की भाषाओं में अन्य भाषाओं की काफी सामग्री अनूदित करनी पड़ती है।

पर्यटन क्षेत्र भी अनुवादक व्यवसाय का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है। उद्योग व टेक्नोलॉजी के विकास के वर्तमान युग में पर्यटन जीवन का अनिवार्य अंग-सा हो चूका है। मॉरीशस, हवाई द्वीप जैसे कई देश तथा स्थान तो पर्यटकों पर ही अपने अस्तित्व एवं आर्थिक क्षमता के लिए निर्भर करते हैं। प्रत्येक राष्ट्र के प्रमुख नगरों में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन की व्यवस्था करनेवाली एजेंसियाँ होती हैं, जो आपके आवास-निवास तथा भोजन-विश्राम की पूरी व्यवस्था के साथ संसार की सैर कराके ठीक समय पर वापस पहुँचा देती हैं। स्पष्ट है कि विभिन्न देशवासी भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं। पर्यटन के दौरान उनकी अपनी-अपनी भाषा में बातचीत करने, स्थानों का वर्णन सुनाने और आवास-विश्राम को सुविधाजनक बनाने का काम अनुवादक या दुभाषिए करते हैं। इन दुभाषियों को पर्यटन संस्थाएँ वेतन देती हैं। दुभाषियों को स्थानीय भूगोल, इतिहास, संस्कृति आदि का अच्छा ज्ञान रखना पड़ता है। साथ ही, ये बातचीत की कला में भी माहिर होते हैं। प्रत्येक विशिष्ट अतिथि के साथ दुभाषिया होता है। बड़े-बड़े नगरों में प्राय: महिलाएँ दुभाषिए का काम करती हैं। पर्यटन संस्थाओं के अनुवादक के काम अनेक प्रकार के होते हैं।

पत्र-पत्रिकाओं से हम संचार के सरकारी विभाग की तरह चलते हैं। हर देश में सूचना, प्रसारण एवं टेलीविजन का सरकारी विभाग बहुत महत्वपूर्ण होता है। अमेरिका जैसे देशों में सार्वजनिक (सरकारी) ही नहीं, निजी क्षेत्रों में भी प्रसारण संप्रेषण हुआ करता है। इस विभाग का कार्यालय अत्यंत व्यापक होता है। । प्रत्येक देश का मुख्य रेडियो केंद्र देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में प्रतिदिन कई बार समाचार बुलेटिन प्रसारित करता है। मुख्य सूचनाएँ एक भाषा में संकलित करके उसका अनुवादक अन्य भाषाओं में तैयार किया जाता है। इस प्रक्रिया में मुख्य भूमिका अनुवादक ही वहन करते हैं। ये अनुवादक सरकार के पूर्णकालिक कर्मी होते हैं। रेडियो एवं टेलीविजन की सेवा में बहुत बड़ी संख्या में अनुवादकों की जरूरत होती है। समाचार बुलेटिनों के अलावा कितने ही प्रकार की सामग्री और भी होती है, जिसका अनुवाद नियमित अनुवादकर्मियों को ही करना होता है।

अब हम अनुवाद के एक व्यापक क्षेत्र में पहुँचते हैं। सरकारी प्रशासन बहुशाखी वृक्ष जैसा है, जिसके अनेक कार्यक्षेत्र हैं। उनमें कई क्षेत्र अनुवाद सेवा माँगते हैं। सरकार एक त्रिधार तंत्र है। इसकी तीन दिशाएँ हैं - संसद, न्यायालय और प्रशासन; जिन्हें मुख्यत:

विधायिका, न्यायपालिका एवं कार्यपालिका के नामों से अभिहित किया जाता है। संसद में अनेक भाषा-भाषियों के भाषण होते हैं। उनका एककालिक अनुवाद करने के लिए प्रवीण अनुवादकों की सेवा आवश्यक होती है। संसद के कई विधेयक एवं प्रतिवेदन (रिपोर्ट) एकाधिक भाषा में तैयार किए जाते हैं। यहाँ भी अनुवाद के बिना काम नहीं चलता। न्यायालय में अनेक प्रकार के दस्तावेजों की जरूरत पड़ती है। ऐसे दस्तावेज भी होते हैं, जो अन्य भाषाओं में होते हैं। अनुवादक उनका अनुवाद करते हैं। प्रशासन के अनेक विभाग हैं - विदेश विभाग, कूटनीति विभाग, गुप्तचर विभाग, पुलिस विभाग आदि। इन सबको अनेक विदेशी भाषाओं से काम पड़ता है। तरह-तरह के प्रमाण पत्र, दस्तावेज आदि विदेशी भाषाओं के होते हैं। इन सबका अनुवाद अनुवादकों द्वारा ही किया जाता है। उनकी जाँच की जाती है। प्रशासन के अनेक विभागों में अनुवाद का काम पड़ता है। इसलिए उन सबका उल्लेख एक साथ किया जा सकता है।

धार्मिक एवं दार्शनिक क्षेत्रों में भी अनुवादकों को बहुत काम करना पड़ता है। इंग्लैंड तथा अमेरिका में ईसाई धर्म का विदेशों में प्रचार करनेवाली अनेक संस्थाएँ अब भी है। उनके यहाँ अनुवादकों की सेवा स्पष्ट ही है। बाइबिल सोसाइटियों की शोध समितियाँ नियमित रूप से अनुवाद संशोधन एवं नए अनुवाद की तैयारी में लगी रहती हैं। इस क्षेत्र में कई समितियाँ परस्पर होड़-सी करती हैं। इस प्रकार धार्मिक क्षेत्र भी अनुवादकों को पर्याप्त काम देता है। अनेक दार्शनिक एवं धार्मिक संस्थाएँ प्रचार की दृष्टि से विदेशी भाषाओं से पुस्तिकाएँ, पुस्तकें और पत्रिकाएँ नियमित रूप से प्रकाशित करती हैं। इनमें भी पूर्णकालीन अनुवादकों की सेवा जरूरी होती है।

अनुवाद संस्थाएँ विदेशों में विशिष्ट संस्थाएँ होती हैं। ये चुने हुए क्षेत्रों की सामग्री का अनुवाद, संग्रह, खोज, व्याख्या आदि का काम करती हैं। इनमें पूर्णकालिक अनुवादक, अनुवाद सहायक, टंकक, आशुलिपिक आदि भी सम्मिलित हैं। संस्था अपनी साख के अनुसार अनुवाद सेवा लेनेवाली संस्थाओं से पारिश्रमिक वसूल करती है। पूर्णकालिक अनुवादक को कभी-कभी मामूली वेतनमान ही मिलता है। अतएव कई अनुवादक अपनी ही अनुवाद संस्था चलाते हैं। जो कुशल एवं खुशकिस्मत हैं, वे सफल भी होते हैं। कुछ को नुकसान और असफलता भी मिलती है। जो किसी क्षेत्र में विशेष दक्ष हैं और काफी प्रभावी हैं, वे स्वतंत्र अनुवादक रहकर खूब कमाते हैं। हमारे देश में जैसे स्वतंत्र (फ्रीलांस) फोटोग्राफर हैं वैसे ही फ्रीलांस अनुवादक भी होते हैं। अनुवाद के क्षेत्र में भाषाओं और विशेष क्षेत्रों का बड़ा महत्व है।

अनुवाद कार्य की मात्रा एवं विविधता के बढ़ते-बढ़ते विदेशों में अब पेशेवर अनुवाद की चेतना बड़ी सशक्त हो गई है। वहाँ तो अब अनुवादकों के संगठन, अनुवादकों के हित की सुरक्षा करनेवाली संस्थाएँ, अनुवादक निर्देश सूचियाँ, अनुवादक पंजियाँ आदि भी प्राप्त होते हैं। ऐसी डायरेक्टरी भी मिलती है, जिसमें भिन्न-भिन्न विषयों तथा क्षेत्रों के अनुवादों का प्राप्ति स्थान दिया जाता है। जैसे चिकित्सा क्षेत्र के विशेषज्ञों का नाम-पते मिलते हैं वैसे ही अनुवादकों की राष्ट्रीय पंजियों से अनुवाद विशेषज्ञों का नाम-पता भी आसानी से मिल सकता है।

अनुवाद सेवाओं का विशाल नेटवर्क अब विश्व भर के प्रमुख राष्ट्रों में स्थापित हो चुका है। ये केंद्र परस्पर सहयोग से बड़ी सहायता करते हैं। अनुवादकों के लिए जरूरी सारी सूचनाएँ, ग्रंथों के नाम आदि मिलते हैं। अनुवाद सूचना केंद्र समय-समय पर विभिन्न रजिस्टर, सूचियाँ आदि भी प्रकाशित करते हैं। नेशनल ट्रांसलेशन सेंटर, शिकागो; इंटरनेशनल ट्रांसलेशन सेंटर, नीदरलैंड; ब्रिटिश लाइब्रेरीज लेंडिंग डिवीजन, बोर्स्टन, यूनेस्को; पेरिस, इंग्लैंड आदि इस स्तर के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय अनुवाद सूचना केंद्र हैं।

अब अनुवाद के क्षेत्र में भी कंप्यूटर का प्रयोग सुलभ हो गया है। कंप्यूटर का चमत्कार शब्दों में व्यस्त कर पाना कठिन है। आशा है कि अनुवाद का व्यवसाय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अब और भी व्यापक एवं महत्वपूर्ण हो जाएगा।

वीर योद्धा की झलक



श्री मनोहर घोले
(ऑफिस स्टाफ)

गुरुकुल में शिक्षारत राजकुमार पृथ्वीराज अपने मित्रों के साथ युद्ध-विद्या के नए-नए पैंतरे सीखते और कई बार तो वे स्वयं नया पैंतरा दिखाकर अपने गुरु को भी चकित कर देते। गुरु श्रीराम अपने सभी शिष्यों को समान रूप से शिक्षा देते थे और उन्होंने यह गुण पृथ्वीराज में ही देखा था कि वे कुछ पैंतरे स्वयं ही सीखते जाते थे।

पृथ्वीराज के सहपाठियों में चंदबरदाई उनके अनन्य मित्र थे, जो अधिकांश समय परछाईं की तरह उनके साथ रहते थे। यद्यपि चंदबरदाई एक साधारण कुल से संबंध रखते थे लेकिन कुमार पृथ्वीराज उन्हें बहुत प्रेम करते थे। इन दोनों की मित्रता पूरे अजमेर भर में प्रसिद्ध थी।

पृथ्वीराज के एक और मित्र थे, जिनका नाम कान्हा था। कान्हा एक वीर योद्धा के पुत्र थे और वह वंशानुगत वीरता उनमें भी थी, जो उनके पिता में थी। राजपुत्र पृथ्वीराज की सेवा में हर क्षण तत्पर कान्हा अपने को सौभाग्यशाली कहते थे कि उन्हें राजकुमार पृथ्वीराज के साथ शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है।

चंदबरदाई में शस्त्र-कला के साथ-साथ एक और प्रतिभा मुखरित हो रही थी और वह थी काव्य-सृजन की अनूठी कला, जिससे सभी प्रभावित थे। जब भी अवसर मिलता तो चंदबरदाई कविता सुनाकर सबका मन मोह लेते थे।

एक दिन गुरु श्रीराम आश्रम में नहीं थे। उन्हें राजाज्ञा से किसी धार्मिक कार्य हेतु कुछ दिनों के लिए बाहर जाना पड़ गया था। गुरुकुल की व्यवस्था अब कार्यवाहक आचार्यों के हाथों में थी। यह गुरुकुल ऐसे स्थान पर स्थित था, जहां से कुछ ही दूरी पर पहाड़ और जंगल आरंभ हो जाते थे। जंगल से गुरुकुल की बहुत सी आवश्यकताएं पूरी होती थीं। यद्यपि उस स्थान से जंगल कोई अधिक दूर नहीं था और कई बार वन्य जीव उधर आ निकलते थे लेकिन इनमें हिरन, खरगोश, नीलगाय आदि वन्य जीव ही होते थे, जिनसे किसी प्रकार का भय नहीं होता था लेकिन पिछले दिनों से जंगली क्षेत्र में एक सिंह के देखे जाने की सूचनाएं मिल रही थीं। गुजरात के जंगलों में शेर अवश्य पाए जाते थे। अभी तक किसी अप्रिय घटना का समाचार नहीं मिला था, इसलिए उस क्षेत्र में शेर का आगमन अभी संदेहास्पद था।

एक रात्रि भोजन के पश्चात गुरुकुल में सभी शयन की तैयारी कर रहे थे कि एक दहाड़ ने आसपास के क्षेत्र को दहला दिया। गुरुकुल के व्यवस्थापक एकदम चौंक पड़े। पृथ्वीराज अपने मित्रों के साथ सतर्क हो उठे। उनका हाथ तत्काल अपनी तलवार पर गया। तभी उनके मित्र चंदबरदाई ने उनका हाथ पकड़ लिया।

''कुमार! रात्रि का समय है। यह समय वनराज के पराक्रम का है। जंगल पर उसका शासन स्वीकार्य है। अत: आपको अपने क्रोध पर संयम रखना चाहिए,'' चंदबरदाई ने समझाते हुए कहा।

''चंद! एक ही स्थान पर दो सिंह नहीं रह सकते,'' पृथ्वीराज ने रोषपूर्ण स्वर में कहा।

''मैं आपका अभिप्राय समझ रहा हूं परंतु यह समय सिंहों के टकराव का नहीं है।''

''यह तुम भली-भांति जानते हो कि शक्ति और पराक्रम के प्रदर्शन का कोई निश्चित समय नहीं होता।''

''होता है कुमार! शक्ति के साथ-साथ बुद्धि का प्रयोग भी आवश्यक है।''

''तुम्हारे कहने का अभिप्राय क्या है मित्र।''

''कुमार! अभी आप संयम रखिए और प्रात: होने की प्रतीक्षा कीजिए। वनराज अब जंगल में आ ही गया है तो इतनी सरलता से तो वह लौट जाने वाला नहीं। निश्चय

ही उसे मानवरूपी सिंह पृथ्वीराज चौहान का बल अवश्य परखना होगा।''

''चंद! हमारी तलवार उग्र हो रही है। हम उस सिंह को गुरुकुल में प्रवेश की आज्ञा नहीं दे सकते। उसका यकायक आक्रमण यदि किसी अप्रिय घटना का कारण बना तो यह हमारे क्षत्रियत्व के लिए किसी कलंक से कम नहीं होगा।''

''कुमार! यह पहाड़ी वनक्षेत्र है। यहां वन्य जीवों का होना साधारण बात है। शेर तो वैसे भी जंगल का राजा है। उसका जंगल में दहाड़कर अपनी उपस्थिति जताना स्वाभाविक है। अत: अपनी तलवार को म्यान में रखो। प्रात: होने पर हम उसका शिकार करेंगे, जो कि क्षत्रियोजित भी होगा और समयानुकूल भी।''

''फिर भी हम निश्चित नहीं हो सकते चंद! शेर कहीं आसपास ही है। यदि वह नरभक्षी हुआ तो किसी के प्राण संकट में पड़ सकते हैं। हम गुरुकुल के मुख्य द्वार पर अपनी तलवार लेकर प्रात:काल होने तक पहरा देते रहेंगे।''

सबको पृथ्वीराज का यह निर्णय स्वीकार करना पड़ा क्योंकि यह सभी भली-भांति जानते थे कि कुमार पृथ्वी अपने निर्णय से कभी भी पीछे नहीं हटते। फिर सबसे बड़ी बात यह कि सुरक्षा की दृष्टि से भी यह निर्णय उचित ही था।

इस प्रकार पृथ्वीराज अपनी तलवार और धनुष-बाण लेकर गुरुकुल के मुख्य द्वार पर जाकर पहरा देने लगे। उनके मुख्य मित्र भी उनके साथ थे, जो रात व्यतीत होते-होते सो गए जबकि पृथ्वीराज पूरी सतर्कता से पहरा देते रहे।

प्रात: की पहली किरण के साथ ही आश्रम जीवंत हो उठा और वेदमंत्रों से सारा जंगल गूंजने लगा। यह गुरुकुल का नियमित कार्यक्रम था। प्रात: भ्रमण के लिए जाने वाले निर्भय होकर भ्रमण के लिए चले गए थे।

अभी सूर्य की लालिमा ने धरा को अपने आगोश में लिया ही था कि प्रात: भ्रमण को गए कुछ गुरुकुलवासी चीखते-चिल्लाते दौड़ते हुए आए। पता चला कि शेर ने किसी पथिक को अपना भोजन बनाया था, जिसकी क्षत-विक्षत लाश जंगल में पड़ी हुई है। बस, पृथ्वीराज ने उसी क्षण अपनी तलवार उठाई और अश्व पर सवार होकर जंगल की ओर चले गए।

जब चंदबरदाई को पृथ्वीराज के जंगल की ओर जाने का पता चला तो उन्होंने भी अपना घोड़ा निकाला। फिर क्या था, उनके साथ ही अन्य मित्र भी चल पड़े। उन सभी को पृथ्वीराज के बल पर तो पूरा भरोसा था लेकिन शेर से टकराने की आशंका भी भयभीत किए जा रही थी। शेर भी आखिर साधारण जीव नहीं होता। वह वन्य जीवन का सबसे शक्तिशाली और खूंखार प्राणी होता है। संसार के बड़े खतरनाक शिकारियों में उसकी गणना की जाती है। उस पर भी वह नरभक्षी था, इसका प्रमाण भी मिल चुका था। सभी मित्र द्रुतगति से अश्वों को दौड़ते हुए पृथ्वीराज के पीछे थे, सभी मित्र द्रुतगति से अश्वों को दौड़ते हुए पृथ्वीराज के पीछे थे, यद्यपि उन सबके बीच बड़ा फासला था।

अब जंगल और पहाड़ियां आरंभ हो गई थीं और यहां से ही शेर के कहीं होने की संभावना बढ़ती जाती थी। चंदबरदाई की राय पर सभी मित्र अलग-अलग दिशाओं से पृथ्वीराज को सहायता देने के उद्देश्य से चल पड़े।

ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों और जंगली झाड़ों से गुजरते घोड़ों की टापों की आवाज से चिड़ियां चहचहाकर उड़ रही थीं। इन्हीं के बीच सिंह की भयानक दहाड़ ने दौड़ते अश्वों की गति को हिनहिनाकर थमने पर विवश कर दिया। अपने पिछले पैरों पर खड़े हो चुके घोड़े आगे बढ़ने से हिचकिचा रहे थे। यह स्थिति कुछ ही क्षण रही और घोड़े फिर से आगे बढ़ चले।

जब चंदबरदाई और उनके साथी पृथ्वीराज के पास पहुंचे तो निर्णय हो चुका था। शेर की लाश पड़ी थी और पृथ्वीराज की तलवार शेर की गरदन को काटकर रक्तरंजित पृथ्वीराज के हाथों में थी। दस वर्षीय पृथ्वीराज का यह कारनामा था, जो यह संकेत करता था कि भविष्य में अजमेर के सिंहासन की शोभा बढ़ाने वाला वीर राजा पृथ्वीराज अपने कुलवंश की शान में चार चांद लगाने वाला था।

कविहृदय चंदबरदाई ने उसी समय अपने वीर योद्धा मित्र और भावी सम्राट की शान में कविता सुनाया। अन्य मित्रों ने कुमार पृथ्वीराज को कधों पर उठा लिया। इसके पश्चात वे सभी पृथ्वीराज की जय-जयकार के नारे लगाते हुए गुरुकुल की ओर चल पड़े।

कोरोनाकाल में मेरी देवभूमि की यात्रा



श्री सिमनलाल आर्य
लिपिक-ए (राजभाषा अनुभाग)

महामारी कोरोना के बारे में 15 मार्च 2020 को जब मैंने सुना तो कुछ भी मन में डर नहीं लगा। मगर जब सभी टीवी चैनलों और समाचार पत्रों में इस बीमारी के बारें में भयंकर सुनाई दिया तो मैं भी डरने लगा। जब मैं अपनी नोकरी पर आ रहा था तो बस से लेकर ट्रेन तक और कम्पनी में भी सब जगह इस महामारी के बिमारी की चर्चा चल रही थी। सभी लोग कह रहे थे कि यह भयंकर महामारी है।

मैंने भी सोचा कि जायें तो जायें कहां। इस असमंजस्य स्थिति में कुछ भी नहीं मन में निर्णय हो रहा था। फिर भी मैंने अपने मन में निर्णय लिया कि गांव जाना ही उचित रहेगा। सरकार ने भी घोषणा कर दी थी कि 22 मार्च 2020 को भारत बंद रहेगा और कोरोना महामारी में जो लोग काम कर रहे हैं उनका उत्साह बढ़ाने के लिए शाम पांच बजे थाली और ताली बजाकर उन लोगों का उत्साह बढ़ाया जायेगा।

मैंने 15 मार्च से लेकर 21 मार्च 2020 तक अपने उत्तराखंड के मुंबई में रहने वाले लोगों को सूचित किया कि गाँव (उत्तराखंड) चलो मगर सबने मेरी बात मजाक समझा कि इतना क्यों डर रहे हो आप इस दुनिया में अकेला थोड़ी हैं जो गाँव जंगल में जाकर बिमारी के डर से छिपना चाहते हो। बहुत से लोगों ने कहा कि 22 मार्च 2020 को भारत बंद रहेगा। सभी ट्रेनें भी बंद हो जाएगी। मैंने अपने मन में सोचा कि जब कोई भी ट्रेन 20 या 21 तारीख को चलेगी तो वह रास्ते में एक दिन नहीं रुक सकती है। इस बात को लेकर अफवाओं का बाजार चरम पर था।

21 मार्च 2020 को मैं अपने पूरे परिवार सहित ट्रेन में पनवेल से गांव के लिए बैठ गया। हमने भी सोचा कि जब 22 मार्च भारत बंद है तो रास्ते में यदि ट्रेन एक दिन रुकेगी तो हमने कुछ पकाया हुआ खाना ज्यादा साथ में रख दिया था और कुछ राशन-दाल आदि सामग्री हमने डर की वजह से अपने साथ रख दी थी। पनवेल स्टेशन पर जो भी उस दिन पूना में रहने वाला मेरा परिचित दिखाई देता था मैं उसे देखकर दूर चला जाता था क्योंकि मुझे लग रहा था कि यह परिचित कहीं विदेश से तो नहीं आया होगा। मन में बहुत डर और घबराहट थी कि कहीं सचमुच 22 तारीख को पूरे दिन रस्ते में ट्रेन न रुक जाय। परन्तु ट्रेन उस दिन अपने नियमित समय पर चलती रही और हम लोग हरिद्वार समय पर पहुँच गए। जब हम हरिद्वार पहुंचे तो पुलिस का मुंबई से आने वालों के लिए बड़ा जबरदस्त चेकिंग बंदोबस्त था। मेरे आगे से जितने भी उस ट्रेन के यात्री थे उनकी चेकिंग जबरदस्त ढंग से कर रहे थे और हमारी भी चेकिंग हुई परन्तु जांच में कुछ भी नहीं पाया है।

पांच बजे सरकार के कार्यक्रम के अनुसार जब सबने थाली, घंटी, ताली बजाई है तो हमने भी हरिद्वार स्टेशन के बाहर आकर ताली बजाई । कोई यात्री कहीं से आए तो उन्हें पुलिस लेकर गयी। मैंने भी जो पुलिस वाले थे उनको कहां मुझे अपने घर अर्जंट जाना है तो कुछ व्यवस्था हो सकती है। जब उन लोगों ने कहा आपका यदि कोई पहचान का ड्राइवर है तो उसको बुलाकर उसके साथ जाओ। उस दिन ऐसी समस्या थी कि कोई भी गाड़ीवाला कहीं नहीं जा रहा था क्योंकि पूरा भारत

बंद था। मैंने किसी परिचित को ऋषिकेश से बुलाया तो उसको रास्ते में ही पुलिस वालों ने रोक दिया था। उसने वहां से मुझे कहा हरिद्धार नहीं आने दे रहे हैं। मैंने उस परिचित गाड़ी वाले को कहा, जो पुलिस अधिकारी/कर्मचारी आपको नहीं आने दे रहा है उन्हें मोबाइल दो मैं बात करता हूँ।

मैंने उस पुलिस अधिकारी को कहा कि मैं भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत एक सार्वजनिक उपक्रम में काम करता हूँ और अपने परिवार सहित घर जाना चाहता हूँ। कृपया आप उस गाड़ी वाले ड्राईवर को मुझे लेने के लिए छोड़े मैं आपको आकर मिलता हूँ। फिर उन लोगों ने उस ड्राईवर को हरिद्धार के लिए छोड़ दिया था।

गाड़ी ड्राइवर मुझे लेने हरिद्धार पहुंचा और उसके बाद हम हरिद्धार से टिहरी गढ़वाल के लिए चले गए। मगर जो ड्राइवर था उसको लालच आ गया और उसने मुझे कहा कि आपके लिए दूसरी गाड़ी की व्यवस्था करता हूँ, मुझे घर से फोन आ गया है। जबकि वह उस दिन पैसा कमाना चाहता था क्योंकि बहुत से यात्री पैदल चल रहे थे हरिद्धार से ऋषिकेश के लिए। मैं समझ गया कि उस दिन लोग परेशान थे और मुह मांगा रुपए देने के लिए तैयार थे। हमें उस परिचित ने एक नेपाली ड्राइवर के साथ दूसरी गाड़ी में बैठाया।

जब हम दूसरी गाड़ी में घनसाली के लिए बैठे तो रात के आठ बज गए थे। जैसे ही हम मुनक्रेती चेक पोस्ट के पास पहुंचे तो किसी को ऊपर पहाड़ पर छोड़ नहीं रहे थे। मैंने भी गाड़ी से उतरकर अपनी कोरोना स्क्रीन जांच करवाई और अपना एमडीएल का आईडी कार्ड दिखाया और कहा मुंबई से आया हूँ और आज ही गांव जाना है। वहां पर तैनात ड्यूटी पर पुलिस अधिकारी ने हमारी कोरोना स्क्रीन जांच कर छोड़ दिया।

हम उस चेक पॉइंट से तो निकल गए मगर सबसे खतरनाक टिहरी डैम को क्रास करना होता है और वहां पर तो रात आठ बजने के बाद आना-जाना बंद रहता है। जब झील के पास आये तो मेरे तालुका क्षेत्र घनसाली से एक सरकारी बस ऋषिकेश के लिए गुजर रही थी और हम लोग उस बस की बगल से निकल कर टिहरी डैम से आगे निकल गए। हम दो बजे रात अपने गाँव पहुंचे। गाँव में रोड से मेरा घर पैदल लगभग दो किलोमीटर चड़ाई का रास्ता था और अँधेरा छाया हुआ था। लगभग चार बजे तक हम सड़क पर ही रहें और उसके बाद अपने घर गये। मैंने रास्ते में किसी भी प्रकार की तकलीफ न होने और सकुशल घर पहुँचने हेतु अपने रीति-रिवाज के अनुसार अपने ईष्ट देवता की पूजा की।

मन में डर था कि कहीं रास्ते में कोरोना का संक्रमण तो नहीं हुआ हो। जब सुना कि 25 मार्च से पूरा देश लॉकडाउन हो गया तो हमने अपने ईष्ट देवता और ईश्वर की आराधना की कि हम कैसे गाँव आ गये हैं। मेरा घर अलग ही है फिर भी किसी के घर हम नहीं गये और न ही किसी को अपने घर आने दिया है। हम सब 15 दिन तक अलग-अलग रहे । अप्रैल माह में मुंबई में कोरोना की रफ्तार के बारे में जब टी. वी. पर सुन रहा था तो मन में खुश था कि हम बच गये हैं मगर जब मुंबई, दिल्ली या अन्य शहरों से लोग उत्तराखंड जा रहे थे तो मन में डर लग रही थी कि कहीं यह बीमारी हम तक न आ जाय।

45 किलोमीटर दूर गाँव से घनसाली मार्केट है। मैं लॉकडाउन के दौरान कम से कम 10 बार उस मार्केट से सामान लेने आया मगर ईश्वर की कृपा से कुछ नहीं हुआ। मैंने गाँव में सभी कोरोना नियमों का पालन किया और जो मेरे गाँव में बाहरी राज्यों से आ रहे लोगों के बारे में ग्राम प्रधान को निर्देश दिया कि सबको क्वारंटीन सेंटरों में रखा जाय। सब जो भी बाहर से आ रहे थे उनकी व्यवस्था क्वारंटीन सेंटरों में रखने की हुई थी। परन्तु गाँव में पालतू कुत्ते आवारा घूम रहे थे और वे क्वारंटीन सेंटरों में भी जा रहे थे और हमारे घरों के पास भी आ रहे थे। मैंने उन पालतू कुत्ते के मालिकों को समझाया कि आप लोगों के कुत्ते क्वारंटीन सेंटरों में भी जा रहे हैं और हमारे घरों के पास भी आ रहे हैं इसलिए इन्हें चेन से बांध कर रखो वरना आप लोगों के ऊपर कोरोना की रोकथाम हेतु नियमों के अनुसार कार्रवाई की जायेगी। सब लोगों ने

डर कर अपने-अपने कुत्ते अपने घरों में चेन से बाँध दिए और एक दूसरे के घर आना-जाना भी बंद कर दिया । मुंबई में कोरोना के केस बहुत हो गए । सभी समाचार चैनलों में सुन रहा था और मन बहुत डरता था। जब कंपनी शुरू हो हुई तो मैं देहरादून से मुंबई हवाई जहाज से आया ।

मैंने अपने पोयंजे के घर से पनवेल स्टेशन आने जाने के लिए रिक्शा बुक कर रखा था। एक दिन का आने जाने का 300 रूपये देता था। आज भी अपने निवास स्थान पनवेल और आगे पोयंजे से डाकयार्ड 130 किलोमीटर आना-जाना पड़ता है और मन में बहुत डर बना रहता है कि न जाने कब मुझे कोरोना हो जाय। मगर मैं ईश्वर के ऊपर बहुत विश्वास करता हूँ। मैंने अपने परिचित से कोरोना पोजिटिव से हाथ भी मिलाया मगर मुझे कोरोना नहीं हुआ और सब ईश्वर पर छोड़ दिया। जन्म मृत्यु ईश्वर के हाथ में सभी लोगों के कर्मों के अनुसार अटल है। जैसे भाग्य में लिखा होगा वही होगा। इन्हीं शब्दों के साथ ईश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद और सबको हाथ जोड़कर प्रणाम।

परोपकारी विद्यासागर



सनेही प्रसाद
(इलैक्ट्रिशियन)

ईश्वरचंद्र विद्यासागर संस्कृत भाषा के पंडित थे। उनकी ख्याति का कारण केवल उनका ज्ञान ही नहीं बल्कि उनका विशाल हृदय भी था। वह अपनी विनम्रता सदाशयता और परोपकार भावना की बदौलत सभी के प्रिय बने हुए थे। एक बार कोलकाता के संस्कृत कॉलेज में संस्कृत-व्याकरण पढ़ाने के लिए एक अध्यापक का स्थान खाली हुआ। स्वाभाविक था कि कॉलेज के प्राचार्य को सर्वप्रथम ईश्वरचंद्र विद्यासागर का ध्यान आया। उन्होंने ईश्वरचंद्र के पास पत्र भिजवाया। उस पत्र में उन्होंने आग्रह किया कि वह संस्कृत अध्यापक का पद ग्रहण करें, इससे कॉलेज गौरवान्वित होगा।

पत्र पढ़ने के बाद ईश्वरचंद्र ने एक क्षण विचार किया और अपनी असहमति लिखकर भेज दी। उन्होंने लिखा कि आपको संस्कृत और व्याकरण पढ़ाने वाले अध्यापक की आवश्यकता है। मैं सोचता हूँ कि संस्कृत और व्याकरण में मैं इस नगर का योग्यतम व्यक्ति नहीं हूँ। इस विषय में मुझसे अधिक विद्वान मेरे मित्र तारक वाचस्पति हैं। यदि उनकी नियुक्ति कर सकें तो यह आपकी तरफ से योग्यतम व्यक्ति का चयन होगा और इससे मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। ईश्वरचंद्र का पत्र जब कॉलेज के प्रबंधक के पास पहुंचा तो पत्र पढ़कर उनका मस्तक झुक गया। वह सोचने लगे कि यह व्यक्ति कितना महान है, जो विद्वान किसी दूसरे व्यक्ति को अपने से बड़ा बताए, वह वास्तव में विशाल हृदय है।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रस्ताव को कॉलेज की प्रबंध समिति ने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। जल्दी ही कॉलेज में संस्कृत-व्याकरण पढ़ाने के लिए तारक वाचस्पति की नियुक्ति कर दी गई। इसकी सूचना उन्होंने ईश्वरचंद्र विद्यासागर को भी दी। मित्र की नियुक्ति का समाचार पाकर ईश्वरचंद्र विद्यासागर को हार्दिक प्रसन्नता हुई। ईश्वरचंद्र ने उन्हें सारी घटना सुनाई। वाचस्पति उनकी यह बात सुनकर गदगद हो उठे। उन्होंने मित्र को हृदय से लगा लिया और बोले, 'ईश्वरचंद्र, तुम्हें देखकर मुझे गर्व है कि आज भी संसार में इतने विनम्र, विद्वान और परोपकारी व्यक्ति हैं।'



श्री अमित कुमार
प्रबंधक (वाणिज्य-सामग्री-क्रय)

गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस

भारत सरकार के द्वारा गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस की शुरुआत अगस्त 2016 में हुई थी। भारत में सार्वजनिक खरीद का संबंध उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा सरकार और राज्य के स्वामित्व वाले उद्यम सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों से वस्तु एवं सेवाएँ खरीदते हैं। इसमें सार्वजनिक सेवा वितरण के लिए सरकार के मंत्रालयों और विभागों जैसी विभिन्न संस्थाओं द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद शामिल होती है, और इसमें खरीद की आवश्यकता के अनुसार अनुबंध और अंतिम भुगतान से संबन्धित गतिविधियां शामिल होती है। उचित बजट का निर्णय लेने और अपेक्षित निवेश अवसरों की पहचान करने में इकाई की मदद कर उत्तम खरीद प्रणाली, सार्वजनिक व्यय प्रबंधन प्रणाली के मजबूत तत्व के रूप में प्रकट होता है।

हालाँकि, खरीद प्रणाली में कई रुकावटें आती है, और सुधार करने की जरूरत को देखते हुए हितधारकों से जैसे कि खरीद संस्थाओं, नीति निर्माताओं और खरीद पेशेवरों की ओर से ध्यान आकर्षित हो रहा है। विशेष रूप से विकासशील और उभरते बाजारों में प्रतिस्पर्धा प्राप्त करते हुए, पारदर्शिता बढ़ाना और भ्रष्टाचार को कम करना सुधार पहल का उद्देश्य है।

भारत सरकार ने सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता, दक्षता और जवाबदेही लाने के लिए एक टूल के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी (ई-खरीद) पर जोर दिया है और जीईएम (गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस) सरकारी खरीदारों के लिए एक खुला और पारदर्शी खरीद मंच बनाने के उद्देश्य से ऐसी पहल की शुरुआत की है। केंद्र और राज्य सरकार के संगठनों द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं की ऑनलाइन खरीद के लिए अगस्त 2016 में गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस की शुरुआत की गई थी। यह वस्तु एवं सेवाओं की ऑनलाइन खरीद करने हेतु सुविधा प्रदान करने के लिए 5 महीने के रिकॉर्ड की समय सीमा के लिए बनाया गया था। सरकारी उपयोगकर्ताओं द्वारा जीईएम के माध्यम से खरीदारी को वित्त मंत्रालय द्वारा सामान्य वित्तीय नियम, 2017 में नए नियम संख्या 149 का समावेश करते हुए इसे अधिकृत और अनिवार्य बना दिया गया है। इस प्लेटफॉर्म का स्वामित्व जीईएम एसपीवी (स्पेशल पर्पज व्हीकल) के पास है, जो भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत 100 प्रतिशत सरकारी स्वामित्व वाली, गैर-लाभकारी कंपनी है।

जीईएम एक कॉन्टैक्टलेस, पेपरलेस और कैशलेस ऑनलाइन मार्केटप्लेस है। इसकी स्थापना के बाद से, जीईएम ने सार्वजनिक खरीद में सुस्पष्टता और पारदर्शिता लाई है। पोर्टल ने अपने स्तंभों, समावेश, उपयोगिता, पारदर्शिता, दक्षता और लागत की बचत को कम करने के लिए भारत में सार्वजनिक खरीद में नयापन लाने के लिए इसमें बदलवा किया है। विश्व बैंक द्वारा किए गए स्वतंत्र मूल्यांकन के अनुसार, सरकारी ई-मार्केटप्लेस पोर्टल में खरीदारों के लिए औसत मूल्य पर लगभग 9.75% औसत बचत होती है। भारत सरकार ने विक्रेताओं के लिए जीईएम पोर्टल पर बेचे जाने वाले उत्पादों पर 'भारत द्वारा निर्मित' प्रदर्शित करना

अनिवार्य कर दिया है।

अब तक (23 मार्च 2022 तक), इसने 2,18,593 लेनदेन मूल्य (करोड़) को पार कर लिया है। जीईएम के 40,02,468 विक्रेता एवं सेवा प्रदाता हैं, जिनमें से 761,807 सूक्ष्म एवं लघु उद्यम विक्रेता एवं सेवा प्रदाता हैं। इसके अलावा, इसके लगभग 9,799 उत्पाद श्रेणियों में 52 लाख से अधिक उत्पाद हैं, और इसकी 258 सेवा श्रेणियां हैं जो यह लगातार बढ़ रही है और यह अपने पोर्टल पर अधिक उत्पादों और सेवाओं का समावेश कर रहे हैं।

जीईएम पारदर्शी, कुशल और समावेशी बाज़ार को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक खरीद को बढ़ावा देने की दृष्टि से विकसित किया गया है। जीईएम अपने विकास को बढ़ावा देने के लिए वेंडर्स और रेटिंग खरीदारों और विक्रेताओं को समय पर भुगतान के लिए तंत्र सहित कई पहलों पर काम कर रहा है, जिससे एमएसएमई को बैंकों से कार्यशील पूंजी प्राप्त करने में मदद मिलती है और कार्यक्षमता में सुधार के लिए खरीदार और विक्रेता दोनों से रेटिंग मिलती है। यदि खरीददार समय पर भुगतान नहीं करते हैं, तो इससे रेटिंग प्रभावित होगी और विक्रेता वस्तु एवं सेवाओं को डिलीवर करते समय सतर्क रहेंगे। इसी तरह, यदि कोई विक्रेता समय पर वस्तु को डिलीवर नहीं करता है और गुणवत्ता का मामला हैं, तो रेटिंग खराब होगी। पोर्टल कई प्रकार के उत्पाद प्रदान करता है ऑफिस स्टेशनरी से लेकर वाहनों तक। इसमें ऑटोमोबाइल, कंप्यूटर और ऑफिस फर्नीचर वर्तमान में शीर्ष उत्पाद की श्रेणियां हैं।

जीईएम एक संस्था के रूप में सार्वजनिक खरीद में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के मिशन के साथ प्रतिबद्ध है: व्यवहार परिवर्तन को प्रोत्साहित करने और सुधार को बढ़ावा देने के लिए एकीकृत खरीद नीति।

निरंतर नवाचार और मार्केट प्रेरित निर्णय लेने में सक्षम प्रवृत्ति, गतिशील संगठन स्थापित करना।

खरीद में पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए उपयोग में आसान, पूरी तरह से स्वचालित प्लेटफॉर्म का निर्माण करना।

सही कीमत पर सही गुणवत्ता सुनिश्चित कर मूल्य प्रदान करने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करना।

सभी हितधारकों को शामिल करते हुए और भारत में समावेशी विकास को बढ़ावा देने वाला एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र बनाना।

जीईएम भारत के लिए सरकार की एक बहुत ही सफल पहल रही है। आंकड़े बताते हैं कि भारत सरकार की इस पहल का दायरा बहुत बड़ा है क्योंकि यह खरीदारों के खरीद के लिए सबसे बड़ा ई-कॉमर्स पोर्टल है। डिजिटल इंडिया के प्रधानमंत्री के सपने में जीईएम एक मजबूत स्तंभ की तरह है। खरीदारों, विक्रेताओं, विभिन्न वित्तीय संस्थानों ने जीईएम पोर्टल की सराहना की है। जीईएम पोर्टल पर प्रशंसापत्र इसका प्रमाण है। हम चाहते हैं कि जीईएम पोर्टल सार्वजनिक खरीद को आसान, सरल और पारदर्शी, सबसे महत्वपूर्ण रूप से समयबद्ध बनाए और उत्पादों एवं सेवाओं की खरीद में शामिल सभी संस्थाओं के लिए उदाहरण स्थापित करे।

जीईएम के बारे में कुछ रोचक तथ्य

जीईएम ने एशियन डेवलपमेंट बैंक, वर्ल्ड बैंक और प्रोक्योरमेंट आईएनईटी द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान किया गया दक्षिण एशिया प्रोक्योरमेंट इनोवेशन अवार्ड्स 2016-17 जीता।

मंच को संयुक्त राष्ट्र के आईटीयू डबल्यूएसआईएस पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया गया था।

कंपनी ने मार्च 2020 में डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के लिए द हिंदू बिजनेस लाइन चेंज मेकर अवार्ड जीता।

वस्तुओं एवं सेवाओं की ऑनलाइन सार्वजनिक खरीद की सुविधा के लिए 5 महीने के रिकॉर्ड समय में बनाया गया था।



श्री अशोक कनौजिया
उप महाप्रबंधक (सीआईटी)

एक वेल्डर से उप महाप्रबंधक

मैंने 10 वीं कक्षा पास करने के बाद मेरे पिताजी ने कहा – 'आगे से आप खुद ही कमाओ और पढ़ो'। पढ़ना भी है और आपने पैरों पर खुद ही खड़ा होना है। उनके इस कहने का कितना महत्व है और कितनी दूरदर्शिता थी इसका अनुभव यह मै कुछ ही सालो मे आ गया क्योंकि उनके इसी विचारों के कारण ही मुझ मे आत्म विश्वास आया और मैं माझगांव डॉक लिमिटेड मे काम करते–करते उच्च स्तानक M.Sc. MCA, MBA और M. Phil तक पढ़ सका। वह एक सरकारी उच्च पदस्थ अधिकारी थे इसके बावजूद उन्होंने मुझे प्रेरित किया कि आप अपने पैर पर खड़े रहे और अपनी प्रगति खुद करे ताकि मेरा आत्म विश्वास बढ़े। वह कई बार छत्रपती शिवाजी महाराज, डॉ बाबासाहेब अंबेडकर, लाल बहादुर शास्त्री, साने गुरुजी और जे आर डी टाटा जैसे महान व्यक्तित्वों के बारे मे बताते की इन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य पूरा किया था।

मैंने माझगांव डॉक लिमिटेड नवम्बर 1981 मे एक अप्रेंटिस (वैल्डिंग) के रूप मे नियुक्त हुआ। 2 साल के कड़ी ट्रेनिंग और अनुभव के बाद मेरी नियुक्ति अस्थाई वेल्डर के रूप मे हुई और अगले 2 साल के बाद 1986 साल में मैं स्थाई वेल्डर बन गया लेकिन मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और इस दौरान मैंने डिप्लोमा इन कंप्यूटर प्रोग्राममिंग का कोर्स पूरा किया। उस जमाने मे कंप्यूटर के बारे मे लोगों कों बहुत ही कम जानकारी थी और इस क्षेत्र मे समान्यतः कोई जाता नहीं था। मुझे कई लोगो ने कहा इस डिप्लोमा का कोई उपयोग नहीं होगा , लेकिन इसी डिप्लोमा के कारण मुझे 1988 में ईडीपी विभाग में टाइपिस्ट कम पेरीफेरल ऑपरेटर की नियुक्ति हुई।

वह हमारे देश की कंप्यूटर युग की शुरुवात थी और हमारे माझगांव डॉक लिमिटेड मे भी नई–नई कंप्यूटर तकनीक लाई जा रही थी । जब मैंने जनवरी 1988 ईडीपी विभाग काम करना शुरू किया था तब कंप्यूटर का मतलब एक मशीन थी जो करीबन दो बड़े टेबल के बराबर होती थी और जिस पर सिर्फ दो लोग ही काम कर सकते थे। डाटा बड़े–बड़े स्पूल टेप मे रखा जाता था और यह स्पूल टेप का डाटा पेरोल और अकाउंट जैसे बड़े प्रोसेसिंग के लिए बाहर के बड़े डाटा प्रोसेसिंग कंपनी में ले जाते थे। लेकिन जैसे–जैसे नई तकनीक आने लगी हमारी कंपनी ने तुरंत उसे लागू किया। शुरुवात में डेस्कटॉप कंप्यूटर जो बिना हार्ड डिस्क के आता था आज कई जीबी की हार्ड डिस्क अति है। 1990-1995 के वक्त कंप्यूटर नेटवर्किंग आई जो एक कंप्यूटर को दूसरे कंप्यूटर को जोड़ने लगी लेकिन आज हमारे कंपनी के अंदर के सभी कंप्यूटर एक दूसरे से जुड़े है इतना ही नहीं हमारे देश विदेश मे अन्य कार्यालय भी एक दूसरे के साथ पूरे साईबर संरक्षण के साथ जुड़े है। 1988 में 12 इंच की फ्लॉपि ड्राइव होती थी जिस मे सिर्फ 360 केबी का डाटा रख सकते थे पर आज 1 इंच के पेन ड्राइव मे 120 जीबी का डाटा रख सकते है।

ईडीपी विभाग में एक बहुत ही बुद्धिमान सॉफ्टवेर डेव्लपमेंट टीम थी जिन्होंने हमारे जरूरत के अनुसार सॉफ्टवेर डेवलोप की थी जैसे पेरोल, अकाउंटिंग, मटिरियल मैनेजमेंट और अटेंडस रिकॉर्डिंग सिस्टम

आदि। यह टीम नए नए सॉफ्टवेर डेवलोप करने के साथ उसका नए संस्कारण भी करते थे।

यह टीम वक्त के अनुसार होने वाले बदलाव और नए तकनीक के अनुसार पुराने सॉफ्टवेर को नए संस्करण (version) लाने मे भी माहिर थी। करीबन साल 2007 में SAP ERP सिस्टम आने तक इसके अंतर्गत सॉफ्टवेर डेव्लपमेंट हो रहे थे।

माझगांव डॉक लिमिटेड ने हमेशा आने वाली नई तकनीक को अपनाया है जिसके कारण इतने बड़े जहाज निर्माण का कार्य सुचारु रूप से कर सके।

आज हम कंप्यूटर तकनीक का उपयोग करने मे अग्रसर है जिसमें बायोमेट्रिक, ईआरपी, साईबर सेक्युरीटी, वीआरएल, एस्एपी शामिल है।

मेरे पिछले चालीस साल के कार्यकाल मे अनेक कंप्यूटर तकनीक का अनुभव किया किया जिसका मुझे बहुत अभिमान है।

मैले कपड़े



श्रेया तोरस्कर
डीईओ (राजभाषा)

जापान के ओसाका शहर के निकट किसी गांव में एक जेन मास्टर रहते थे। उनकी ख्याति पूरे देश में फैली हुई थी और दूर-दूर से लोग उनसे मिलने और अपनी समस्याओं का समाधान कराने आते थे। एक दिन की बात है। मास्टर अपने एक अनुयायी के साथ प्रात: काल सैर कर रहे थे कि अचानक ही एक व्यक्ति उनके पास आया और उन्हें भला-बुरा कहने लगा। उसने पहले मास्टर के लिए बहुत से अपशब्द कहे, पर बावजूद इसके मास्टर मुस्कुराते हुए चलते रहे। मास्टर को ऐसा करता देख वह व्यक्ति और भी क्रोधित हो गया और उनके पूर्वजों तक को अपमानित करने लगा, पर इसके बावजूद मास्टर मुस्कुराते हुए आगे बढ़ते रहे। मास्टर पर अपनी बातों का कोई असर न होते देख अंततः वह व्यक्ति निराश हो गया और उनके रास्ते से हट गया। उस व्यक्ति के जाते ही अनुयायी ने आश्चर्य से पूछा, 'मास्टर, आपने भला उस दुष्ट की बातों का जवाब क्यों नहीं दिया और तो और आप मुस्कुराते रहे, क्या आपको उसकी बातों से कोई कष्ट नहीं पहुंचा? 'जेन मास्टर कुछ नहीं बोले और उसे अपने पीछे आने का इशारा किया। कुछ देर चलने के बाद वे मास्टर के कक्ष तक पहुंच गए। मास्टर बोले, 'तुम यहीं रुको, मैं अंदर से अभी आया।' मास्टर कुछ देर बाद एक मैले कपड़े लेकर बाहर आए और उसे अनुयायी को थमाते हुए बोले, 'लो अपने कपड़े उतारकर इन्हें धारण कर लो?' कपडों से अजीब सी दुर्गंध आ रही थी और अनुयायी ने उन्हें हाथ में लेते ही दूर फेंक दिया। मास्टर बोले, 'क्या हुआ, तुम इन मैले कपड़ों को नहीं ग्रहण कर सकते ना? ठीक इसी तरह मैं भी उस व्यक्ति द्वारा फेंके हुए अपशब्दों को नहीं ग्रहण कर सकता। इतना याद रखो कि यदि तुम किसी के बिना मतलब भला-बुरा कहने पर स्वयं भी क्रोधित हो जाते हो तो इसका अर्थ है कि तुम अपने साफ-सुथरे वस्त्रों की जगह उसके फेंके फटे-पुराने मैले कपड़ों को धारण कर रहे हो।'



राजराजेश्वरी भट
पीए (डीओएस)

पूस की रात

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा – सहना आया है, लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली – तीन ही तो रुपये हैं; दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी। उससे कह दो, फसल पर रुपये दे देंगे। अभी नहीं।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कम्मल के बिना हार में रात को वह किसी तरह नहीं जा सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाड़ों मरेंगे, बला सिर से टल जायेगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी भरकम डील लिए हुए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला – ला दे दे, गला तो छूटे। कम्मल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गयी और आँखें तरेरती हुई बोली – कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूँ कौन उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आये। मैं रुपये न दूँगी – न दूँगी।

हल्कू उदास होकर बोला – तो क्या गाली खाऊँ।

मुन्नी ने तड़पकर कहा – गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?

मगर यह कहने के साथ उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पड़ गयीं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जन्तु की भाँति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिये। फिर बोली – तुम छोड़ तो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है। मजूरी करके लाओ, वह उसी में झोंक दो, उस पर से धौंस।

हल्कू ने रुपये लिए और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-कपटकर तीन रुपये कम्मल के लिए जमा किये थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

पूस की अंधेरी रात! आकाश पर तारे ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ-कूँ कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों को गर्दन में चिपकाते हुए कहा- क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आये थे। अब खाओ ठण्ड, मैं क्या करूँ। जानते थे, मैं यहाँ हलूवा-पूरी खाने

आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आये। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलाई और अपनी कूँ-कूँ को दीर्घ बनता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान-बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूँ-कूँ से नींद नहीं आ रही है।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा-कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिए आ रही है। उठूँ, फिर एक चिलम भँरू। किसी तरह रात तो कटे! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है। और एक-एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाय तो गर्मी से घबराकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ-कम्मल। मजाल है कि जाड़े का गुजर हो जाय। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!

हल्कू उठा और गड्ढे में से जरा-सी-आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा। हल्कू ने चिलम पीते हुऐ कहा, पियेगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, जरा मन बहल जाता है।

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा।

हल्कू - आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।

जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिये और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट; पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाये हुए था।

जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला दिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गन्ध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद से चिपटाये हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है; और हल्कू महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है; और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी! अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दक्ष को पहुंचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छतरी के बाहर आकर भूँकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चूमकारकर बुलाया; पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया। फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है। सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जायेंगे तब कहीं सबेरा होगा। अभी पहर भर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों

का बाग था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियाँ बटोरू और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे तो समझे कोई भूत है। कौन जाने कोई जानवर ही छिपा बैठा हो; मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा तो पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा–अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो, बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। टाँटे हो जायँगे तो फिर आकर सोयेंगे। अभी तो रात बहुत है।

जबरा ने कूँ–कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे–आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अँधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बुँदे टप–टप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेहंदी के फूलों की खुशबू लिए हुए आया।

हल्कू ने कहा–कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में भी सुगंध आ रही है?

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे चिचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का एक ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पाँव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपरवाले वृक्ष की पत्तियों को छू–छूकर भागने लगीं। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर संभाले हुये हो। अंधकार के उस अनंत सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली और दोनों पाँव फैला दिये, मानो ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा–क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है?

जबरा ने कूँ–कूँ करके मानो कहा–अब क्या ठंड लगती ही रहेगी।

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।'

जबरा ने पूँछ हिलाई।

'अच्छा आओ इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गये बचा, तो मैं दवा न करूँगा।'

जबरा ने उस अग्निराशि की ओर कतार नेत्रों से देखा।

'मुन्नी के कल न कह देना नहीं तो लड़ाई करेगी।'

यह कहता हुआ वह उछला और अलाव के ऊपर से साफ निकल गया! पैरों में जरा लपट लगी; पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द में घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा–चलो–चलो, इसकी सही नहीं। ऊपर से कूदकर आओ। वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया।

पत्तियाँ जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अंधेरा छाया था। राख के नीचे कुछ–कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी; पर एक क्षण में

फिर आँखे बंद कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गयी थी; पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाये लेता था।

जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुण्ड उसके खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुण्ड था। उनके कूदने दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थीं। फिर ऐसा मालूम हुआ कि वह खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज चर-वर सुनायी देने लगी?

उसने दिल में कहा-नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनायी देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ!

उसने जोर से आवाज लगायी-जबरा, जबरा।

जबरा भूंकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ था। इस जाड़े-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असूझ जान बैठा पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने जोर से आवाज लगायी-लिहो-लिहो! लिहो!

जबरा भूंक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी; पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किये डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला; पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभनेवाला, बिच्छू इ डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किये डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भांति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढ़कर सो गया।

सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गयी थी और मुन्नी कह रही थी-क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गये और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा-क्या तू खेत से होकर आ रही है?

मुन्नी बोली-हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला ऐसा भी कोई सोता है! तुम्हारे मडैया डालने से क्या हुआ?

हल्कू ने बहाना किया-मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दरद हुआ, कि मैं ही जानता हूँ।

दोनों फिर खेत की डाँड़ पर आये। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है, और जबरा मडैया के नीचे चित लेटा है। मानो प्राण ही न हों।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी। पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा-अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।

हल्कू ने प्रसन्न-मुख से कहा-रात की ठण्ड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।

आभार - प्रेमचंद (मानसरोवर भाग-1)



श्री श्रीनिवास सिन्हा
अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं राजभाषा)

इक्कीसवीं सदी में हिंदी

हिंदी भाषा के अनेक रूप हमारे मध्य प्रचलित हैं। उन्हें मुख्यतः छह वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

1. बोलचाल की जनभाषा हिंदी

2. रचनाधर्मी हिंदी

3. राष्ट्रभाषा/राजभाषा हिंदी

4. जनसंचार माध्यमों की हिंदी

5. प्रयोजनपरक हिंदी

6. शिक्षण की माध्यम–भाषा रूप में हिंदी

1. बोलचाल की जनभाषा हिंदी

यह हिंदी उत्तर भारत में प्रायः जनभाषा या मातृभाषा रूप में प्रतिष्ठित है। इसकी स्थिति विवादास्पद भी है, जैसे इसका कोई एक मानक रूप प्राप्त नहीं होता। पहाड़ी हिंदी अलग, बिहारी हिंदी अलग। इसी प्रकार अन्य अनेक क्षेत्रों के लहजे परस्पर इतने भिन्न हो गए हैं कि उन्हें एक हिंदी–परिवार में पहचान पाना हिंदीतर भाषा–भाषियों के लिए कठिन हो गया है। बोलचाल की हिंदी में व्याकरण तथा उच्चारण की इतनी भिन्नता भर गई है कि उसे परिनिष्ठित रूप दे पाना संभव नहीं है। किंतु बोलचाल की यह हिंदी हमारे लिए समस्या नहीं है। यह हिंदी आज लगभग 70 करोड़ व्यक्तियों के बीच प्रचलित है और संख्या की दृष्टि से यह पूरे विश्व में दूसरे, तीसरे स्थान पर है। इसके सहारे कोटि–कोटि जन किसी न किसी रूप में देश–देशांतर तक अपना वैचारिक आदान–प्रदान करते रहे हैं और कर रहे हैं।

बोलचाल की इस हिंदी को गांधी जी ने 'हिंदुस्तानी' नाम दिया था, किंतु आशंका या सांप्रदायिक संकीर्णतावश इसे हिंदी–समाज में दीर्घकालीन मान्यता नहीं मिली। वस्तुतः ब्रज एवं रेख्ता से विकसित खड़ीबोली में उर्दू की जो शब्दावली निर्मित हुई, वह अरब देशों से न आकर भारत की धरती में ही उपजी थी। इसे धीरे–धीरे योजनाबद्ध रूप से फारसीकृत कर दिया गया और फिर पृथक भाषा का नाम दे दिया गया। यह चूँकि हिंदी का जातीय चरित्र है, अतः इस भाषा का पुनः संस्कार करना वर्तमान विघटन के दौर में अत्यावश्यक है।

2. रचनाधर्मी हिंदी

हिंदी का साहित्यिक स्वरूप विषमताओं से ग्रस्त तो अवश्य है, किंतु बहुत हताशापूर्ण नहीं है। संप्रति कवि–लेखक यथेष्ट भाषा–सचेत नहीं दिखाई देते। वे भाषा के पारस्परिक ढाँचे को तोड़ने का छद्म उद्घोष तो करते हैं, किंतु वस्तुस्थिति यह है कि अधिकतर नए रचनाकारों को भाषा का सही संस्कार ही नहीं मिला है। समकालीन लेखन अखबारीपन से ग्रस्त है। वह आंतरिक रूप से व्यावसायिक हो गया है, इसलिए अविचारित अर्थात त्वरित लेखन की बाढ़ आ गई है। फिर भी सर्जनात्मक क्षेत्र में हिंदी की अभिव्यक्ति–क्षमता का इस बीच पर्याप्त विस्तार हुआ है। काव्य–भाषा, कथा–भाषा, नाट्य–भाषा और शोध–समीक्षा–भाषा की अलग–अलग आकृतियाँ काफी तेजी से उभरी हैं।

3. राष्ट्रभाषा/राजभाषा हिंदी

आज हिंदी का यह रूप सर्वथा एवं सर्वाधिक संकटग्रस्त है। भारतीय संविधान ने तो अवश्य यह व्यवस्था कर रखी है कि देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी

संघ की राजभाषा होगी, किंतु लागू होने से पूर्व ही इस व्यवस्था को स्थगित कर दिया गया और ऐसी शर्तें लगा दी गई हैं कि अब शायद ही हिंदी सही अर्थों में पूरे देश की राजभाषा बन पाए। इसके कई कारण हैं–

1. हिंदी साम्राज्यवाद की आशंका से ग्रस्त हिंदी–विरोधियों का कुचक्र।
2. अंग्रेजीपरस्त प्रशासकों की दुरभिसंधि।
3. व्यावहारिक भाषा के रूप में हिंदी एवं देवनागरी की न्यूनताएँ।
4. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिशनरियों का अंग्रेजी–प्रचार।
5. भारतीय भाषाओं की पारस्परिक भेद–बुद्धि।
6. अंग्रेजी भाषा से जुड़े हुए आर्थिक प्रलोभन।
7. हिंदीभाषियों का हीनताबोध।
8. जनसाधारण की यथास्थितिवादी प्रवृत्ति।

जिस हिंदी के सहारे आजादी की लड़ाई जीती गई थी, जो हिंदी उत्तर भारत के नवजागरण का माध्यम बन गई थी और जो हिंदी इस लोकतंत्र में जनसंवाद की वास्तविक भूमिका निभा सकती है, उसको राजकाज में अभीष्ट वरीयता नहीं दी गई है।

हिंदी का यह राजभाषा रूप एक नया चरित्र है। यह राजभाषा किसी भी भूभाग की मातृभाषा नहीं है। सबको एक नए सिरे से इसे सीखना होता है, चाहे हिंदीभाषी हो या अहिंदीभाषी। इसकी शब्द–राशि, इसकी वाक्यावली, इसके पदप्रयोग और मुहावरे सप्रयास गढ़े गए हैं, इसलिए बहुत कुछ कृत्रिम हैं। यह यदा–कदा अनुवाद की मुर्दा भाषा जैसी प्रतीत होती है और बहुत ही रूढ़िग्रस्त एवं औपचारिक होती जा रही है। इसे बोलचाल का रूप दे पाना कठिन है। यदि प्रयत्न करके हम पारिभाषिक शब्दों के पर्याय–प्रयोगों (थिसारस) में एकरूपता ला सकें, यदि इसे अविकल शब्दानुवाद से मुक्त कर ले जाएँ तो इसका कुछ जन–संस्कार हो सकता है। अभी इसका रूप निर्माणाधीन है और अनेक मंगलाशाओं से ओतप्रोत है।

4. जनसंचार माध्यमों की हिंदी

भाषा मूलतः संप्रेषण है। माध्यम रूप में उसकी उपयोगिता सर्वोपरि होती है। आज समूचे विश्व में एक प्रकार का अघोषित सूचनायुद्ध चल रहा है। समर्थ राष्ट्रों ने अंतरिक्ष में अपनी–अपनी प्रयोगशालाएँ स्थापित कर ली हैं। कृत्रिम उपग्रहों द्वारा वे भूगोल और खगोल की जानकारी तेजी से संचित करते आ रहे हैं, इसलिए सर्वत्र सूचनाओं का विस्फोट हो रहा है। इस रूप में हिंदी भाषा के सामने अनेक नई चुनौतियाँ उपस्थित हो गई हैं। भारत अंतरिक्ष युग में प्रवेश कर गया है, इसलिए हिंदी को दूरसंचार की सक्षम भाषा के रूप में गठित करना सबसे बड़ी प्राथमिकता है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी ने एक नई संचार–भाषा को जन्म दिया है, जिसमें संकेताक्षरों, लिपि–चिन्हों और कूटपदों की बहुतायत होती है। जिस भाषा में न्यूनतम वर्णाक्षरों का प्रयोग किया जाए, वही सर्वोत्तम संचार–भाषा होती है। उसे ही सुविधापूर्वक कंप्यूटर में भरा जा सकता है और उसे टैलेक्स, फैक्स, टेलीप्रिंटर द्वारा यथावत् संप्रेषित किया जा सकता है।

5. प्रयोजनपरक हिंदी

प्रशासनिक वर्ग में राजभाषा हिंदी का समावेश किया जा सकता है। इसके अंतर्गत आलेखन, टिप्पण, अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली, संक्षेपण, पत्र–लेखन, विस्तारण आदि का प्रशिक्षण देय होता है। हिंदीभाषी और हिंदीतर कर्मचारी दोनों को यह प्रशिक्षण देय है। संप्रति केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी अधिकारी अथवा अनुवाद अधिकारी के हजारों पद रिक्त हैं। इसके अतिरिक्त प्रशासनिक सेवा प्रतियोगिता में इन विषयों से युक्त हिंदी भाषा का जो पाठ्यक्रम निर्धारित है, उसका प्रशिक्षण हर वर्ग के लिए उपयोगी है।

तकनीकी हिंदी हमारी सबसे बड़ी चुनौती है। इसके अंतर्गत कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, इंटरनेट, हिंदी टैलेक्स और टेलीप्रिंटर की बेहतर व्यवस्था करनी होगी। इसके बिना हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं ठहर पाएँगे और अगली

शताब्दी तक हमारी भाषा कालातीत हो जाएगी। देश की अधिकतर प्रादेशिक भाषाएँ इस स्पर्धा में पिछड़ गई हैं। इस शती में देश का बौद्धिक नेतृत्व करने वाली बँगला भाषा इस रूप को नहीं ग्रहण कर पा रही है। हिंदी दिनोदिन अंग्रेजी के समानांतर अपना रूपांतरण करती जा रही है, अतएव उसका भविष्य सुनिश्चित है।

6. शिक्षण की माध्यम-भाषा रूप में हिंदी

हमारा प्रयास होना चाहिए कि प्रारंभिक कक्षाओं में कॉन्वेंट/पब्लिक स्चूलों में माध्यम क्षेत्रीय भाषा को बनाया जाए और अंग्रेजी के समकक्ष हिंदी की पढ़ाई कराई जाए। उच्च शिक्षा में हिंदी को ज्ञान-विज्ञान की शिक्षण माध्यम भाषा की मान्यता दी जाए और इस ध्येय से विभिन्न विषयों की हिंदी पाठ्य-सामग्री तैयार की जाए। हिंदी माध्यम से किया गया शोध-कार्य ज्यादा मौलिक होगा और अपेक्षाकृत अधिक जनोपयोगी भी। विचारपरक लेखन में प्रवृत्त होना इन दिनों की सर्वोच्च हिंदी-सेवा है।

भारत में उच्च स्तर पर ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी का पठन-पाठन प्राय: अंग्रेजी के माध्यम से किया जाता है, जिससे हमारी युवा प्रतिभा को भारी क्षति उठानी पड़ रही है। मानव-संसाधन की राष्ट्रीय हानि से बचने का एकमात्र उपाय है-प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाना। अंततः इनका हिंदीकरण किया जाएगा या फिर इन्हें देवनागरी में लिखकर काम चलाना होगा। विभिन्न विदेशी शब्दों के बावजूद यदि हिंदी क्रियापदों का ढाँचा ही अपना लिया जाए तो उतना हिंदीकरण ही इन विषम परिस्थितियों में यथेष्ट होगा। जीवंत भाषा में कठमुल्लापन नहीं होना चाहिए। उसे उधार के शब्दों से परहेज नहीं करना चाहिए।

माध्यम-भाषा के रूप में हिंदी की श्रीवृद्धि करनी होगी। उसमें अभी गिने-चुने कोश, द्विभाषी-त्रिभाषी और बहुभाषी शब्दकोश हैं। इसी प्रकार विश्वकोश, विभिन्न विषयों से संबंधित कोश, पर्याय कोश, व्युत्पत्ति कोश, संदर्भ कोश आदि अंग्रेजी की तुलना में न के बराबर ही बन पाए हैं। यह क्षतिपूर्ति करना हिंदी की सबसे बड़ी सेवा है। आवश्यकता है कि कोश-विज्ञान का प्रशिक्षण देकर विभिन्न बोलियों और विषयों के कोश बना डाले जाएँ।

हिंदी में सर्जनात्मक लेखन की कमी नहीं है। कमी है विचार-सहित्य या उपयोगी पाठ्य-सामग्री की। उसमें प्रत्येक लेखन-विचारक अपनी सहभागिता निभा सकता है। इस समय आवश्यकता है पारिभाषिकों की, संकेताक्षरों की, उनकी एकरूपता की। हमें विदेशी भाषा के हर शब्द का उसके धात्वर्थ के अनुकूल हिंदी नामांतर गढ़ना होगा, ताकि कोई यह न सिद्ध कर सके कि हिंदी में शब्दों का अभाव है। साथ ही हमें हिंदीकरण की प्रक्रिया को भी तेज करना होगा। अभी तक तो यह हिंदीकरण अनजाने लोकमानस द्वारा होता रहा है।

हिंदी की प्रयोजनपरकता से ही इसकी उपयोगिता में वृद्धि होगी, तभी हिंदीभाषियों का आर्थिक स्तर उठेगा, तभी उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा की अभिवृद्धि होगी और तभी हमें हीनता-ग्रंथि से मुक्ति मिलेगी। 'गैट' समझौते के अनुसार, भारत संसार का सबसे बड़ा बाजार है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी व्यावसायिक नीति के कारण यहाँ अधिकाधिक क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करना चाहेंगी। उसी तरह जैसे उन्नीसवीं शती में ईसाई मिशनरियों ने खड़ीबोली का प्रयोग किया था। दुभाषिया, जनसंपर्क, प्रचार, बिक्री, प्रकाशन-अधिकारियों की निरंतर माँग भविष्य में बढ़ेगी। हिंदी माध्यम से इनके प्रशिक्षण की पूर्व व्यवस्था करना समय का तकाजा है। यही सब हिंदी के विकास का निमित्त बनेगा। इसमें हिंदी-लेखक, शिक्षक, प्रचारक, प्रशासक और संचारकर्मी सबकी सहधर्मिता अवश्यंभावी होगी। इक्कीसवीं शती की इस हिंदी का भविष्य मुझे स्वर्णोज्ज्वल दिखाई दे रहा है।

सतर्क भारत, समृद्ध भारत



डॉ सुमेध के हाडके
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (राजभाषा)

समृद्ध राष्ट्र का पूरे विश्व में सम्मान होता है। किसी भी राष्ट्र की समृद्धी वहां के आम नागरिकों के जनजीवन के स्तर से अनुमानित होती है। साथ ही राष्ट्र का खाद्यान आत्मनिर्भरता, सुरक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य संबंधी इन्फ्रास्ट्रक्चर, उच्च एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था, स्वच्छता एवं उन्नत अर्थव्यवस्था इत्यादि समृद्धि के घोतक होते है। इन आयामों को प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र का सरकारी तंत्र शक्तिशाली हो, प्रभावी हो एवं भ्रष्टाचार रहित हो। सबके लिए समान अवसर और सम्यक न्याय उपलब्ध हो। ऐसा नहीं हो जैसा कभी स्व. अदम गोंडवी ने कहा था–

"सरकारी फाइलों में तो, गाँव का मौसम गुलाबी है।
मगर ये आंकड़े झूठे हैं, और ये बातें किताबी है।"

भेदभाव एवं पक्षपात रहित शासन व्यवस्था न केवल जनता का विश्वास हासिल करने में सक्षम होती है, बल्कि लोक कल्याण की योजनाओं को भी सुचारू रूप से कार्यान्वित करने में सफल होती है। समृद्धि के इन मापदंडों पर खरा उतरने के लिए भारत को अभी और फासले तय करने बाकी हैं। देश के कई हिस्सों में खुशहाली, समृद्धि और विकास की धारा अब भी पहुँचाना बाकी है। देश की एक बड़ी जनसंख्या, आज भी गरीबी रेखा से नीचे अपना जीवन बसर कर रही है। दो वक्त की रोटी, शुद्ध पेयजल, शरीर पर वस्त्र, सर पर छत, हर हाथ को काम, वक्त पर सही इलाज, सब को नसीब नहीं है। विकास के सूरज का उदय तो हुआ है लेकिन उसकी रश्मियाँ हर आंगन में धुप नहीं फैला रही है। कई लोगों के जीवन में आज भी अँधियारा है।

कवि दुष्यंत कुमार ने कभी लिखा था–

"ये सारा जिस्म झुक कर, बोझ से दुहरा हुआ होगा।
मैं सजदे में नहीं था, आपको धोखा हुआ होगा।
यहाँ तक आते-आते, सूख जाती हैं कई नदियाँ,
मुझे मालूम है पानी, कहाँ ठहरा हुआ होगा।"

यह जो विकास के मार्ग में रूकावट है, अवरोध है, उसे दूर करने का अचूक और कारगर उपाय है, आम नागरिकों की सतर्कता अगर लोगो में पर्याप्त जागरूकता विद्यमान हो जाय तो व्यवस्था की काया-पलट सकती है, स्थिति में आमूल-चूल परिवर्तन हो सकता है। किसी भी देश के ऊपर खतरा बाहर से भी हो सकता है और अंदर से भी हो सकता है। इतिहास गवाह है, कि अनेक बार, विदेशी आक्रांताओं ने अंदर के भीतरघातियों के सहयोग से ही देश के ऊपर हमला संभव कर पाया है। कवि प्रदीप जी की पंक्तियाँ हैं:-

"एक बात हमें कहनी है आज, इस देश के पहरेदारों से।
संभाल के रहना देश के अन्दर, छुपे हुये गद्दारों से।"

कई मायनों में बाहरी से ज्यादा भीतरी लोग, आस्तीन के सांप की तरह, खतरनाक हो सकते हैं। लोभी, लालची, भ्रष्टाचारी लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के वशीभूत होकर देश की सुरक्षा, समृद्धि और विकास के लिए विष-तुल्य साबित हो सकते हैं। राष्ट्रीय संसाधनों का सही विधि से और सार्थक उद्देश्य के लिए उपयोग न हो

सकेगा, और यदि राष्ट्र को अपनी सीमाओं को सुरक्षित रख पाने का संसाधन नहीं है, तो वह बाहरी हमले का शिकार हो सकता है, जो उसकी सभ्यता, संस्कृति और समृद्धि के लिए घातक हो सकता है।

किसी भी राष्ट्र को समृद्धि प्राप्त करने के लिए, अपने संसाधनों का समुचित उपयोग करने के विधान से अवगत होना आवश्यक है और सब से भी आवश्यक है शासन तंत्र की शुचिता और सामर्थ्य। यदि भ्रष्टाचार का दीमक सरकारी तंत्र के ढांचे को खोखला न कर दें, तो सभी किसानों के जीवन में उत्थान का सूरज उदय हो सकता है निर्धनों को भी स्वास्थ्य की सुविधाएँ यथासमय उपलब्ध हो सकती है। सभी के लिए शिक्षा, सभी के लिए रोजगार, खाद्यान की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है। किन्तु कई किसानों के जीवन में विभिन्नता और दरिद्रता स्थायी रूप से व्याप्त हो जाता है। दो वक्त की रोटी उसे भी साल भर नसीब नहीं होती, जो सभी के लिए अन्न उगाता है। किसानों की दुर्दशा व्यक्त करता कवि सुदीप भोला की ये पंक्तियाँ उपयुक्त जान पड़ती है –

"जो अपने कंधे के ऊपर, खुद हल लेकर चलता है।
आज उसीकी कठिनाई का, हल क्यों नहीं निकलता है।
और है जिनसे उम्मीद उन्हें,बस चिंता है मतदान की।
टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की।"

समृद्ध राष्ट्र की यह पहचान है कि जहाँ का किसान अपने अनाज से देश का पेट भरता है तो देश यह भी सुनिश्चित करता है कि वह कभी भी खाली पेट नहीं सोए। समृद्धि और सतर्कता में गहरा संबंध होता है। यदि घर का गृहपति जागृत हो, तो चोर उस घर को अपना निशाना नहीं बनाता, किसान सजग हो तो, उसके खेत जंगली पशुओं का शिकार नहीं होते, सीमा पर प्रहरी सचेत हो तो दुश्मन की दाल नहीं गलती, और यदि नागरिक सतर्क हो तो भ्रष्टाचारी अपने नापाक हरकतों में कामयाब नहीं हो पाते। अपराधियों को उजाले से भय लगता है। पकड़े जाने का डर मानव–मस्तिक पर प्रभावी हो जाता है। ऐसे कई उदाहरण सुनने को मिलते हैं जहाँ सिर्फ जानकारी मांग लेने भर से घपले, घोटाले और भ्रष्टाचार के मामले उजागर हुये हैं। नागरिकों को सूचना प्राप्त करने का अधिकार एक वरदान–स्वरूप ही है। एक कवि ने कुछ दिनों पहले कहा भी था–

"जो काम कभी न तीर से होगा, न कभी तलवार से होगा।
वो काम अब आसानी से, सूचना के अधिकार से होगा।"

राष्ट्रीय स्तर पर नागरिकों द्वारा सतर्कता रखने की मनोवृति का माहौल अगर वास्तविक रूप में बन जाय तो यह परिवेश राष्ट्र के लिए परिवर्तनकारी होगा, प्रभावी होगा और प्रगति के पथ को प्रशस्त करेगा। सरकारी तंत्र के भ्रष्टाचार रहित होने से संसाधनों का सम्यक उपयोग होता है, लोक–कल्याण के उद्देश्यों की पूर्ति होती है और समाज में स्नेह, सद्भाव, सौहर्द्र और शांतिपूर्ण वातावरण का निर्माण होता है। यह बात सर्व विदित है कि समृद्धि के लिए शांति पहले आवश्यक है।

इस प्रकार समृद्धि में सतर्कता एक सहयोगी बन कर राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। राष्ट्र का सतर्क होना राष्ट्रीय समृद्धि के मार्ग में यह पहली सीढ़ी है। भारत में अनुकूल वातावरण का निर्माण हो रहा है जो इसके सर्वांगीण विकास में सहायक होगा।

"गंगा–यमुना से सिंचित यह देश,
है पहले से पावन और प्रसिद्ध भी।
सतर्कता की जो हवा चली है,
बनेगा यह समर्थ भी और समृद्ध भी।"

साठोत्तरी कहानी : रचना का सच



श्री ऋतुराज
उप प्रबंधक (संपदा)

प्रत्येक संकल्पना किसी न किसी विचारधारा के तहत निर्मित होती है। विचारधारा का संबन्ध दृष्टि से है। 'दृष्टि' का बंधन ही सबसे बड़ा बंधन है (राहुल सांकृत्यायन)। इसी बंधन के चलते एक ही चीज को कोई कुछ देखता है, कोई कुछ देखता है। इस देखने में ही आइडियोलॉजी होती है। जैसी हमारी दृष्टि होती है– यह दुनिया हमें उसी रूप में दिखाई देती है। रचना के सच से मेरा तात्पर्य इसी आइडियोलॉजी से है। जो सत्य है– वह रचना में है या नहीं या सत्य की अनदेखी करते हुए, अपनी कला का परचम फहराने के लिए कोई नई सृष्टि गढ़ ली गई है– यह जानना बेहद जरूरी है। रचना के वितान का निहितार्थ क्या है यह जाने बिना रचना का मूल्यांकन कुछ बेमानी सा लगता है। मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है की हिन्दी कथा–साहित्य में कुछ स्वनाम धन्य लोगों ने ऐसे ढेरों प्रयास किये हैं। जिससे कई–कई बार कथा–साहित्य के सम्मुख संकट खड़े होते रहे हैं। कई–कई बार रचना अपने सरोकारों से फिसलकर वायवी वितान रचने में अपनी श्रेष्ठता साबित करती रही है। रचना की लोकप्रियता, अथवा कलात्मक सफलता उसकी श्रेष्ठता का मापदण्ड नहीं होती। यदि ऐसा होता तो, आज भी कथा सम्राट के रूप में प्रेमचंद न जाने जाते। जिन लोगों ने कथा– परिदृश्य से प्रेमचंद का नाम हाशिए पर ढकेलने की असफल कोशिश की, उन्हीं लोगों ने साठोत्तरी कहानी के सच को झुठलाने की लगातार चालें चली हैं।

साठोत्तरी कहानी का समय – आंदोलनों का समय है। जहाँ कई–कई आंदोलन कथा– साहित्य में उपस्थित हुए। वस्तुत: नई कहानी आंदोलन का विस्तार सातवें दशक में हुआ। जिसकी क्रिया–प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप अन्य कई आंदोलनों का जन्म हुआ। इन आंदोलनों को कोख से जो प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हुईं उनके चलते साठोत्तरी कहानी को कई नाम कई आयाम धारण करने पड़े – सचेतन कहानी, अकहानी, सहज कहानी, समांतर कहानी। इन आंदोलनों से एक ओर जहाँ कहानी का हित हुआ वहीं दूसरी ओर नुकसान भी बहुत हुआ। बहुत से प्रतिबद्ध और बड़े कथाकार इनसे प्रभावित हुए बिना तटस्थ बने रहे।

जहाँ नई कहानी ने रूमानी अतिरेक और अर्थहीन आवृत्तियों की अतिशयता से कहानी के आइडियोलॉजी के मार्ग से विचलित करने में खास भूमिका निभाई, वहीं सातवें दशक के शुरुआती दौर में निजी और वर्गीय हितों की पूर्ति के लिए सक्रिय तत्वों ने कहानी को गुमराह करने का षडयंत्र किया। प्रसन्नकुमार ओझा के इस कथन में बड़ी सचाई है कि : "कहानी के बाजार में धूर्त कथा–व्यापारियों द्वारा अनेक इश्तिहार लगाए गए। इन इशितिहारों में नंगी स्त्रियाँ थीं, संभोग के दृश्य थे और साथ में अपने अपने माल के प्रचार के लिए अश्लील और उत्तेजक टिप्पणियाँ थीं। अपने समय से बेखबर कथाकार बंन्द और अंधेरे कमरे–कोनों में गर्म और जवान लड़कियों, औरतों की देह की 'एनॉटामी' समझ

रहा था और उधर समय का सही आदमी बाहर से दरवाजा पीट-पीट कर लहू-लुहान हो रहा था। समकालीन परिवेश के नाम पर एक झूठा तनाव और नकली आतंक बखूबी रचा गया और भोगे हुए यथार्थ की आड़ में फूहड़ अश्लीलता तथा 'वल्गेरिटी' प्रस्तुत की गई।' (हिन्दी कहानी : दो दशक की यात्रा : डॉ.रामदरश मिश्र : डॉ. नरेन्द्र मोहन-पृ. 182) सातवें दशक की आरंभिक कहानियों का एक सच यह भी है। यह हमारी आइडियोलॉजी नहीं है। फिर इसे सच कैसे माना जाय? कहानी को सही 'इमेज' और अपनी सही गति पाने के लिए निरंतर संघर्ष करना पडा है। सातवें दशक के उत्तरार्द्ध में कहानी छदम अलंकारिता और रूमानी अतिरेक के भ्रमजाल तथा बेईमानी की हदों को तोड़ते हुए, संतुलित, स्वाभाविक दृष्टि और लय प्राप्त कर पाई। उसने पूरी निष्ठा और ईमानदारी से सामयिक विसंगतियों की पड़ताल कर 'क्लोजप' चित्र उतारे हैं।

यही कारण है, साठोत्तरी कहानी अपने शुरुआती दौर के मोहपाश से निकल कर नई अर्थवत्ता प्राप्त कर सकी। आज का लेखक अपने परिवेश की पूरी छान-बीन करते करते हुए चीजों को आर-पार देखने की कोशिश करता है। "आज की कहानियाँ इम्पेक्ट की दृष्टि से भी महत्त्व रखती हैं। वे शॉक देती हैं। आघात करती हैं।' (प्रसन्नकुमार ओझा-वही-पृ./24)

साठोत्तरी कहानी में अकहानी आंदोलन एक प्रकार की विशिष्ट कथा सृष्टि है। जिसका जन्म 'एंटी स्टोरी' के रूप में हुआ। इसके पीछे अस्तित्ववाद, एब्सर्ड बोध और कामू दर्शन प्रेरक तत्त्व रहे हैं। यह एक वक्रोक्तिपूर्ण विधा है जो समग्र जीवन का अस्वीकार है। डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने इसके रूप विधान पर टिप्पणी करते हुए लिखा है - "अकहानी की धारणागत प्रतीति से अलग एक अस्थापित कथा-धारा है जो कहानी के सभी वर्गीकरणों, मूल्यांकन, आधारों और पूर्व समीक्षाओं को अस्वीकार करती है।" (समकालीन कहानी का रचना संसार - पृ.65) निर्मल वर्मा, मनहर चौहान, श्रीकांत वर्मा, दूधनाथ सिंह, ज्ञान रंजन, रमेश बक्षी, शानी, मधुकर विजय चौहान आदि इस धारा के प्रतिनिधि लेखक हैं।

इसी के समानांतर सचेतन कहानी का दौर चला। इस कथा-आंदोलन ने अस्तित्ववादी दर्शन का खुला विरोध किया। कथा के केंद्र में मनुष्य की सार्थकता की खोज की। कहानी को सीमित दायरे और जड़ता से निकालकर मुक्त वातावरण में ले गई। वस्तुतः सचेतन कहानी सक्रिय भावबोध और जीवन से जुड़ाव की कथा है। इस कथा-धाराके सूत्रधार महीप सिंह, धर्मेंद्र गुप्त, रामकुमार भ्रमर, वेदराही, सुखबीर, नरेंद्र कोहली, आनंद प्रकाश जैन आदि लेखक रहे हैं।

इन कथा आंदोलनों के उत्तरोत्तर जो दौर आया - उनमें सहज कहानी आंदोलन जिसका दायरा अत्यंत छोटा है। इसके पश्चात सन 1968 के बाद, एक नया आंदोलन चला समांतर कहानियों का। यह कहानी वर्तमान असंगतियों के प्रति तीव्र असंतोष और संघर्ष करती दिखाई पड़ी। समांतर कहानियाँ सामाजिक चेतना को 'समय सत्य' के रूप में संदर्भित करती हैं। इनमें कुछ कहानियाँ समय के पार भी जाती है। इस कथा-धारा के कहानीकारों में कमलेश्वर, हिमांशु जोशी, रमेश उपाध्याय, जितेंद्र भाटिया, आशीष सिन्हा, निरुपमा सेवती, इब्राहिम शरीफ, सतीश जमाली, मेहरुन्निसा परवेज और कई अन्य कहानीकार प्रमुख रहे हैं।

साठोत्तरी कहानी में सैकड़ों ऐसी कहानियाँ हैं जो इन प्रवृत्तियों की अक्षरशः गवाह हैं। किन्तु एक आलेख की सीमा के तरह उनका उल्लेख संभव नहीं है। इसे कुछ एक कहानियों के माध्यम से समझने की कोशिश की जा

सकती है। ज्ञानरंजन अकहानी आंदोलन के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। उनकी 'शेष होते हुए' 'छलांग', 'सीमाएँ', 'पिता', और 'घंटा' जैसी कहानियाँ हिंदी पाठकों के बीच खूब पढ़ी गई हैं। 'घंटा' कहानी के आलोक में ज्ञानरंजन की कुछ बातों पर गौर किया जा सकता है। घंटा आज से कोई 25 साल पहले लिखी गई। इसी संदर्भ में ज्ञानरंजन दूधनाथ सिंह की कहानी 'आइसबर्ग' का उल्लेख करना भी नहीं भूलते। वे साफ-साफ कहते हैं - घंटा कहानी और आइसबर्ग दोनों में एक लंपट अपराधी और गुमनाम जीवन की शुरुआत हो रही थी। आजादी और सत्ता ने हमें गहरा निराश किया था। (इंडिया टुडे - 96) ज्ञानरंजन जिस अंडरवर्ल्ड की ओर संकेत कर रहे हैं - वह 'घंटा' कहानी की एक विडंबना है। पूरी कहानी इसी विडंबना से होकर गुजरती गई है। कथा के केंद्र में 'मैं' चरित्र और इसी के समानांतर दूसरा चरित्र कुंदन सरकार का है। कथानायक दोहरी जिंदगी जीने के लिए विवश है। एक ओर 'पेट्रोला' है तो दूसरी ओर कुंदन सरकार की दुनिया है। कथा नायक 'पेट्रोला' का मेंबर है। वह कुंदन सरकार की दुनिया 'रेस्तराँ' को अपनी मंजिल समझता है - जहाँ जीवन के सारे शगल मौजूद हैं। किन्तु नियति यह है कि कथानायक कुंदन सरकार की दुनिया में प्रवेश नहीं कर सका। क्योंकि कुंदन सरकार के 'रेस्तराँ' में उसकी जगह बराबरी की नहीं है। वहाँ वह कुंदन सरकार का 'घंटा' होकर ही रह सकता है। जबकि कथा नायक का मैं 'घंटा' बनने की हकीकत से परिचित है उसका 'मैं' अभी मरा नहीं है। कुंदन सरकार सत्ता का घंटा है और कथानायक इस घंटे का 'घंटा' बनने की आस लगाए बैठा है।

'पेट्रोला' और 'रेस्तराँ' की दुनिया का वास्तविक संसार से कोई वास्ता नहीं था। पेट्रोला और रेस्तराँ दोनों ही वास्तविक संसार का निषेध करते हैं। वस्तुतः यह कहानी अंधेरे से अंधेरे की यात्रा है। जिसे ज्ञान रंजन से 'अंडरवर्ल्ड' कहा है - वह वही कुंदन सरकार की दुनिया है। इसी संदर्भ में ज्ञानरंजन का यह कथन भी द्रष्टव्य है : "आज हम समाज को इस तरह से नहीं देख सकते। अब अच्छे और अच्छे के बीच के द्वन्द्व को भी देखना होगा। अच्छाई के दावे जब बहुतेरे हों तो रचनाकार को पक्षधर होना होगा। आज हजारों दुर्घटनाएँ अच्छाई के कारण भी हो रही हैं। अच्छाई और अच्छाई के बीच हो रही हैं। मुझे लगता है कहानी के लिए यह एक नया दरवाजा है।" (इंडिया टुडे - 96)

इसलिए रचना के सच को जानना आज अपरिहार्य हो गया है। साठोत्तरी कहानियों में जिन कहानियों ने ध्यान खींचा है उसमें दूधनाथ सिंह की 'रिक्ष', सपाट चेहरे वाली आदमी, श्रीकांत वर्मा की 'झाड़ी' महीप सिंह का 'घिराव' सुबह के फूल', धर्मेंद्र गुप्त की 'मोड़ से पहले', हिमांशु जोशी की 'आदमी जमाने का' जितेन्द्र भाटिया की 'शहादतनामा', निरुपमा सेवती का 'आतंकबीज' मधुकर सिंह का 'भाई का जख्म', तथा अन्य कई कहानियाँ हैं जिन्होंने अच्छे मुकाम हासिल किये हैं।

इधर पिछले दो दशक के दरम्यान जिन रचनाकारों ने अपनी धमाकेदार उपस्थिति दर्ज की है उनमें - मंजुलभगत, जयप्रकाश भारती, राजी सेठ, सुधा गोयल, संजीव, क्षमा शर्मा के नाम महत्वपूर्ण हैं।

इधर पिछले कई वर्षों से एक नई तरह की कथा - लेखन पद्धति विकसित हुई है। जिसमें कथाकार कहानी के अंत पर कई दिलचस्प मोड़ पैदा करते देखे गये हैं। कहानी के कई - अंत रख दिये जाते हैं और कहानी के अंत का फैसला पाठक पर छोड़ दिया जाता है।



श्री असाउल्लाह खान
सहायक क्लार्क (फॉरवर्ड डिजाइन)

तताँरा-वामीरो कथा

अंदमान द्वीपसमूह का अंतिम दक्षिणी द्वीप है लिटिल अंदमान। यह पोर्ट ब्लेयर से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित है। इसके बाद निकोबार द्वीपसमूह की शृंखला आरंभ होती है जो निकोबारी जनजाति की आदिम संस्कृति के केंद्र हैं। निकोबार द्वीपसमूह का पहला प्रमुख द्वीप है कार-निकोबार जो लिटिल अंदमान से 96 कि.मी. दूर है। निकोबारियों का विश्वास है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे। इनके विभक्त होने की एक लोककथा है जो आज भी दोहराई जाती है।

सदियों पूर्व, जब लिटिल अंदमान और कार-निकोबार आपस में जुड़े हुए थे तब वहाँ एक सुंदर सा गाँव था। पास में एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। उसका नाम था तताँरा। निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता। अपने गाँववालों को ही नहीं, अपितु समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। उसके इस त्याग की वजह से वह चर्चित था। सभी उसका आदर करते। वक्त मुसीबत में उसे स्मरण करते और वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता। दूसरे गाँवों में भी पर्व-त्योहारों के समय उसे विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता। उसका व्यक्तित्व तो आकर्षक था ही, साथ ही आत्मीय स्वभाव की वजह से लोग उसके करीब रहना चाहते। पारंपरिक पोशाक के साथ वह अपनी कमर में सदैव एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता। लोगों का मत था, बावजूद लकड़ी की होने पर, उस तलवार में अद्‌भुत दैवीय शक्ति थी। तताँरा अपनी तलवार को कभी अलग न होने देता। उसका दूसरों के सामने उपयोग भी न करता। किंतु उसके चर्चित साहसिक कारनामों के कारण लोग-बाग तलवार में अद्‌भुत शक्ति का होना मानते थे। तताँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।

एक शाम तताँरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था। समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं। पक्षियों की सायंकालीन चहचहाहटें शनै: शनै: क्षीण होने को थीं। उसका मन शांत था। विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा। तभी कहीं पास से उसे मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया। गीत मानो बहता हुआ उसकी तरफ़ आ रहा हो। बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई देता। गायन इतना प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा। लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की। चैतन्य होते ही वह उधर बढ़ने को विवश हो उठा जिधर से अब भी गीत के स्वर बह रहे थे। वह विकल सा उस तरफ़ बढ़ता गया। अंतत: उसकी नज़र एक युवती पर पड़ी जो ढलती हुई शाम के सौंदर्य में बेसुध, एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगों को निहारते हुए गा रही थी। यह एक शृंगार गीत था।

उसे ज्ञात ही न हो सका कि कोई अजनबी युवक उसे नि:शब्द ताके जा रहा है। एकाएक एक उँची लहर उठी और उसे भिगो गई। वह हड़बड़ाहट में गाना भूल गई। इसके पहले कि वह सामान्य हो पाती, उसने अपने कानों में गूँजती गंभीर आकर्षक आवाज़ सुनी।

"तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़

दिया?" तताँरा ने विनम्रतापूर्वक कहा।

अपने सामने एक सुंदर युवक को देखकर वह विस्मित हुई। उसके भीतर किसी कोमल भावना का संचार हुआ। किंतु अपने को संयतकर उसने बेरुखी के साथ जवाब दिया।

"पहले बताओ! तुम कौन हो, इस तरह मुझे घूरने और इस असंगत प्रश्न का कारण? अपने गाँव के अलावा किसी और गाँव के युवक के प्रश्नों का उत्तर देने को मैं बाध्य नहीं। यह तुम भी जानते हो।"

तताँरा मानो सुध-बुध खोए हुए था। जवाब देने के स्थान पर उसने पुन: अपना प्रश्न दोहराया। "तुमने गाना क्यों रोक दिया? गाओ, गीत पूरा करो। सचमुच तुमने बहुत सुरीला कंठ पाया है।"

"यह तो मेरे प्रश्न का उत्तर न हुआ?" युवती ने कहा।

"सच बताओ तुम कौन हो? लपाती गाँव में तुम्हें कभी देखा नहीं।"

तताँरा मानो सम्मोहित था। उसके कानों में युवती की आवाज़ ठीक से पहुँच न सकी। उसने पुन: विनय की, "तुमने गाना क्यों रोक दिया? गाओ न?"

युवती झुँझला उठी। वह कुछ और सोचने लगी। अंतत: उसने निश्चयपूर्वक एक बार पुन: लगभग विरोध करते हुए कड़े स्वर में कहा।

"ढीठता की हद है। मैं जब से परिचय पूछ रही हूँ और तुम बस एक ही राग अलाप रहे हो। गीत गाओ-गीत गाओ, आखिर क्यों? क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम?" इतना बोलकर वह जाने के लिए तेज़ी से मुड़ी। तताँरा को मानो कुछ होश आया। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। वह उसके सामने रास्ता रोककर, मानो गिड़गिड़ाने लगा।

"मुझे माफ़ कर दो। जीवन में पहली बार मैं इस तरह विचलित हुआ हूँ। तुम्हें देखकर मेरी चेतना लुप्त हो गई थी। मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा। बस अपना नाम बता दो।" तताँरा ने विवशता में आग्रह किया। उसकी आँखें युवती के चेहरे पर केंद्रित थीं। उसके चेहरे पर सच्ची विनय थी।

"वा... मी... रो... " एक रस घोलती आवाज़ उसके कानों में पहुँची।

"वामीरो... वा... मी... रो... वाह कितना सुंदर नाम है। कल भी आओगी न यहाँ?" तताँरा ने याचना भरे स्वर में कहा।

"नहीं... शायद... कभी नहीं।" वामीरो ने अन्यमनस्कतापूर्वक कहा और झटके से लपाती की तरफ़ बेसुध सी दौड़ पड़ी। पीछे तताँरा के वाक्य गूँज रहे थे।

"वामीरो... मेरा नाम तताँरा है। कल मैं इसी चट्टान पर प्रतीक्षा करूँगा... तुम्हारी बाट जोहूँगा... ज़रूर आना..."

वामीरो रुकी नहीं, भागती ही गई। तताँरा उसे जाते हुए निहारता रहा।

दोनों रोज़ उसी जगह पहुँचते और मूर्तिवत एक-दूसरे को निर्निमेष ताकते रहते। बस भीतर समर्पण था जो अनवरत गहरा रहा था। लपाती के कुछ युवकों ने इस मूक प्रेम को भाँप लिया और खबर हवा की तरह बह उठी। वामीरो लपाती ग्राम की थी और तताँरा पासा का। दोनों का संबंध संभव न था। रीति अनुसार दोनों को एक ही गाँव का होना आवश्यक था। वामीरो और तताँरा को समझाने-बुझाने के कई प्रयास हुए किंतु दोनों अडिग रहे। वे नियमत: लपाती के उसी समुद्री किनारे पर मिलते रहे। अफ़वाहें पैफलती रहीं।

कुछ समय बाद पासा गाँव में 'पशु-पर्व' का आयोजन हुआ। पशु-पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं के प्रदर्शन के अतिरिक्त पशुओं से युवकों की शक्ति परीक्षा प्रतियोगिता भी होती है। वर्ष में एक बार सभी गाँव के लोग हिस्सा लेते हैं। बाद में नृत्य-संगीत और भोजन का भी आयोजन होता है। शाम से सभी लोग पासा में एकत्रित

होने लगे। धीरे-धीरे विभिन्न कार्यक्रम शुरू हुए। तताँरा का मन इन कार्यक्रमों में तनिक न था। उसकी व्याकुल आँखें वामीरो को ढूँढ़ने में व्यस्त थीं। नारियल के झुंड के एक पेड़ के पीछे से उसे जैसे कोई झाँकता दिखा। उसने थोड़ा और करीब जाकर पहचानने की चेष्टा की। वह वामीरो थी जो भयवश सामने आने में झिझक रही थी। उसकी आँखें तरल थीं। होंठ काँप रहे थे। तताँरा को देखते ही वह फूटकर रोने लगी। तताँरा विह्वल हुआ। उससे कुछ बोलते ही नहीं बन रहा था। रोने की आवाज़ लगातार ऊँची होती जा रही थी। तताँरा किंकर्तव्यविमूढ़ था। वामीरो के रुदन स्वरों को सुनकर उसकी माँ वहाँ पहुँची और दोनों को देखकर आग बबूला हो उठी। सारे गाँववालों की उपस्थिति में यह दृश्य उसे अपमानजनक लगा। इस बीच गाँव के कुछ लोग भी वहाँ पहुँच गए। वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। उसने तताँरा को तरह-तरह से अपमानित किया। गाँव के लोग भी तताँरा के विरोध में आवाज़ें उठाने लगे। यह तताँरा के लिए असहनीय था। वामीरो अब भी रोए जा रही थी। तताँरा भी गुस्से से भर उठा। उसे जहाँ विवाह की निषेध परंपरा पर क्षोभ था वहीं अपनी असहायता पर खीझ। वामीरो का दुख उसे और गहरा कर रहा था। उसे मालूम न था कि क्या कदम उठाना चाहिए? अनायास उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा टिका। क्रोध में उसने तलवार निकाली और कुछ विचार करता रहा। क्रोध लगातार अग्नि की तरह बढ़ रही था। लोग सहम उठे। एक सन्नाटा-सा खिंच गया। जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा। वह पसीने से नहा उठा। सब घबराए हुए थे। वह तलवार को अपनी तरफ़ खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया। वह हाँपफ रहा था। अचानक जहाँ तक लकीर खिंच गई थी, वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ों में बँटने लगी हो। एक गड़गड़ाहट-सी गूँजने लगी और लकीर की सीध में धरती फटती ही जा रही थी। द्वीप के अंतिम सिरे तक तताँरा धरती को मानो क्रोध में काटता जा रहा था। सभी भयाकुल हो उठे। लोगों ने ऐसे दृश्य की कल्पना न की थी, वे सिहर उठे। उधर वामीरो फटती हुई धरती के किनारे चीखती हुई दौड़ रही थी-तताँरा... तताँरा... तताँरा उसकी करुण चीख मानो गड़गड़ाहट में डूब गई। तताँरा दुर्भाग्यवश दूसरी तरफ़ था। द्वीप के अंतिम सिरे तक धरती को चाकता वह जैसे ही अंतिम छोर पर पहुँचा, द्वीप दो टुकड़ों में विभक्त हो चुका था। एक तरफ़ तताँरा था दूसरी तरफ़ वामीरो। तताँरा को जैसे ही होश आया, उसने देखा उसकी तरफ़ का द्वीप समुद्र में धँसने लगा है। वह छटपटाने लगा उसने छलाँग लगाकर दूसरा सिरा थामना चाहा किंतु पकड़ ढीली पड़ गई। वह नीचे की तरफ़ फिसलने लगा। वह लगातार समुद्र की सतह की तरफ़ फिसल रहा था। उसवेफ मुँह से सिर्फ़ एक ही चीख उभरकर डूब रही थी, "वामीरो... वामीरो... वामीरो... वामीरो..." उधर वामीरो भी "तताँरा... तताँरा... ता... ताँ... रा" पुकार रही थी।

तताँरा लहूलुहान हो चुका था... वह अचेत होने लगा और कुछ देर बाद उसे कोई होश नहीं रहा। वह कटे हुए द्वीप के अंतिम भूखंड पर पड़ा हुआ था जो कि दूसरे हिस्से से संयोगवश जुड़ा था। बहता हुआ तताँरा कहाँ पहुँचा, बाद में उसका क्या हुआ कोई नहीं जानता। इधर वामीरो पागल हो उठी। वह हर समय तताँरा को खोजती हुई उसी जगह पहुँचती और घंटों बैठी रहती। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। परिवार से वह एक तरह विलग हो गई। लोगों ने उसे ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की किंतु कोई सुराग न मिल सका।

आज न तताँरा है न वामीरो किंतु उनकी यह प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है। निकोबारियों का मत है कि तताँरा की तलवार से कार-निकोबार के जो टुकड़े हुए, उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है जो कार-निकोबार से आज 96 कि.मी. दूर स्थित है। निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे। तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।

हिंदी पखवाड़ा 2022 के पुरस्कृत लेख

महामारी कोविड - 19 का आर्थिक प्रभाव



श्री संजय भगवान आढ़ाव
पीए (सतर्कता विभाग)

कोविड-19 महामारी ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अत्यधिक प्रभावित किया। कोविड - 19 के कारण पूरे देश में लॉकडाउन लगाया गया, जिससे लोगों का रोजगार एंव वयवसाय प्रभावित हुआ। जून 2020 में विश्व बैंक द्वारा जारी की गई वैश्विक आर्थिक संभावना रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2020-21 के लिए भारत का सकल घरेलू उत्पाद (GDP)-3.2 प्रतिशित रहने का अनुमान था। इस महामारी ने निम्नलिखित क्षेत्रें कों प्रभावित किया- कोरोना वायरस महामारी और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं पर इसके प्रभाव के अध्ययन ने इस तथ्य को उजागर किया कि इस महामारी ने सभी देशों की अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित किया तथा भारत की अर्थव्यवस्था भी इससे प्रभावित हुई।

लॉकडाउन के दौरान अनुमानित 14 करोड़ लोगों ने रोजगार खो दिया था जबकि कई अन्य लोगों के लिए वेतन में कटौती की गई थी। देश भर में 45% से अधिक परिवारों ने पिछले वर्ष की तुलना में आय में गिरावट दर्ज की। पहले 21 दिनों के पूर्ण लॉकडाउन के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था को हर दिन 32,000 करोड़ से अधिक की हानि होने की संभावना थी। पूर्ण लॉकडाउन के तरह भारत के $2.8 ट्रिलियन आर्थिक संरचना का एक चौथाई से भी कम गतिविधि कार्यात्मक थी। अनौपचारिक क्षेत्रों में कर्मचारी और दिहाड़ी मजदूर सबसे अधिक जोखिम वाले लोग थे। देश भर में बड़ी संख्या में किसान जो विनाशशील फल-सब्जी उगाते, उन्हें भी अनिश्चितता का सामना करना पड़ा। महामारी से ठीक पहले, सरकार ने कम विकास दर और कम मांग के बावजूद 2024 तक अर्थव्यवस्था को अनुमानित $2.8 ट्रिलियन से $5 ट्रिलियन तक बढलने का लक्ष्य रखा था।

मांग मे गिरावट : कोविड - 19 महामारी के दौरान आवश्यक वस्तुओं (चावल, दाल आदि) की जमाखोरी देखी गई। परंतु लॉकडाउन के कुछ ही दिन बाद सब्जियों तथा फलों की मांग मे लगभग 60 प्रतिशत की कमी हुई, क्योंकि थोक खरीदारों और रेस्तरा बंद होने के कारण इनकी खरीदी नहीं की गई। आवश्यक वस्तुओं तथा सब्जियों और फलों के मूल्य में गिरावट के बाद विद्युत, डीजल तथा पेट्रोल की मांग में क्रमश: 9.2 प्रतिशत 26 प्रतिशत तथा 17 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई, परंतु जून के शुरुवात से ही डीजल तथा पेट्रोल की दामों में बढ़ोतरी हुई।

आवश्यक वस्तुओं तथा ईंधन की मांग में गिरावट के साथ ही साथ गैर आवश्यक वस्तुओं (एलेक्ट्रोनिक, आभूषण आदि) जैसे क्षेत्रों में मांग मे आकस्मिक गिरावट दर्ज की गई। एक्सिस कैपिटल के एक अध्ययन के अनुसार भारत में विवेकाधीन खर्च मे प्रति माह लगभग 3.3 लाख करोड़ रूपये की कमी हुई।

आपूर्ति का बाधित होना : कोविड –19 महामारी से हुए लॉकडाउन मे बड़ी कंपनियों की आपूर्ति श्रुखलाओं को प्रभावित किया और केवल अति आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन एंव वितरण तक सीमित कर दिया। देश के विभिन्न मंडियों में किसी भी प्रकार की व्यापारिक गतिविधियों के न होने या न्यूनतम गतिविधियों के संचालित होने, श्रम में कमी, परिवहन संबंधी समस्याओं और किसानों की अनिच्छा आदि के कारण कृषि उपज की आपूर्ति प्रभावित हुई जिससे थोक कीमतें कम हो गई थी।

कीमत में गिरावट : मांग और आपूर्ति के साथ–साथ बाजार की परिस्थितियों में हो रहे परिवर्तन के कारण कीमतें अस्थिर हो गई जिससे समग्र रूप में उभरते बाजरों में वस्तुओं की कीमतों में भारी गिरावटआई है।

भुगतान संतुलन पर प्रभाव : वैश्विक लॉकडाउन के कारण आयात –निर्यात ऑर्डर में 50 प्रतिशत से अधिक की कमी आयी। कच्चे तेल की कीमतों में कमी, स्वर्ण एवं अन्य आयतों में गिरावट से व्यापार घाटे में कमी हो गई। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के अनुसार स्वर्ण की कीमतों में वृद्धि के कारण मार्च के अंतिम सप्ताह में भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि हुई ।

करों पर प्रभाव : कोविड –19 के कारण लाभ और आय में पहले की अपेक्षा कमी आयी जिससे प्रत्यक्ष करों में वृद्धि नहीं की जा सकी और न ही अप्रत्यक्ष कर मे वृद्धि की जा सकी, क्योंकि अप्रत्यक्ष कर में वृद्धि होने से यह स्फीतिकारी सिद्ध होगा और गरीब लोगों को अत्यधिक प्रभावित करेगा साथ ह साथ मांग में और अधिक कमी आएंगी।

आरबीआई गवर्नर के अनुसार कोविड –19 जैसी महामारी से उत्पन्न कठिन चुनौतियों से निपटने के लिए केंद्रीय बैंक अपने सभी साधनों या युक्तियों का उपयोग करेगा। उन्होने कहा की व्यापक उद्देश यह सुनिश्चित करने में मदत करना सभी हितधारकों , विशेषकर वंचितों और कमजोर तबकों के लोंगों तक वित्त का प्रवाह निरंतर बना रहे।

खिल भारतीय वित्तीय संस्थानों के लिए पुनर्वित्त सुविधाए : 50000 करोड़ रुपये की कुल राशि के लिए विशेष पुनर्वित्त सुविधाएं राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैक (नाबार्ड) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) और राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) को प्रदान की जाएंगी , ताकि उन्हें विभिन्न सेक्टरों की ऋण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में समक्ष बनाया जा सके। इसके तहत क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरबीआरबी), सहकारी बैंकों एव माइक्रोफाइनेंस संस्थानों (एमएफआई) को पुनवित्त प्रदान करने के लिए नाबार्ड को 25,000, करोड़ रुपये उधार देने / पुनर्वित्त प्रदान करने के लिए सीबाड़ी को 15,000 करोड़ रुपये और आवास वित्त कंपनियों (एच एफ सी) को आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए एनएचबी को 10,000 करोड़ रुपये दिए तथा ये सुविधाएं इसलिए दी गई क्योंकि ये संख्या कोविड-19 से उत्पन्न कठिन वित्तीय परिस्थितियों के मद्देनजर बाजार से वित्त जुटाने में कठिनाइयों का सामना कर रहे थे।

लॉकडाऊन के प्रभाव के कारण अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों का अपने गाँव की और पलायन ग्रामीण आविजिका को प्रभावित कर सकता था। इसके समाधान के लिए ग्रामीण अवसंरचना में सुधार करने और विशेष रूप से खाद्य प्रसंस्करण जैसे उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सकता था।

इस तरह कोरोना महामारी से भारत का आर्थिक प्रभाव हुआ था। यह सब हमारी आंखों देखी घटनाएं हैं।

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियां



दिनांक 14.04.2022 को एमडीएल में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि) के साथ निदेशकगण, अन्य अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण



दिनांक 14.04.2022 को एमडीएल में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कमांडर जसबीर सिंह, निदेशक (पनडुब्बी एवं भारी अभियांत्रिकी)



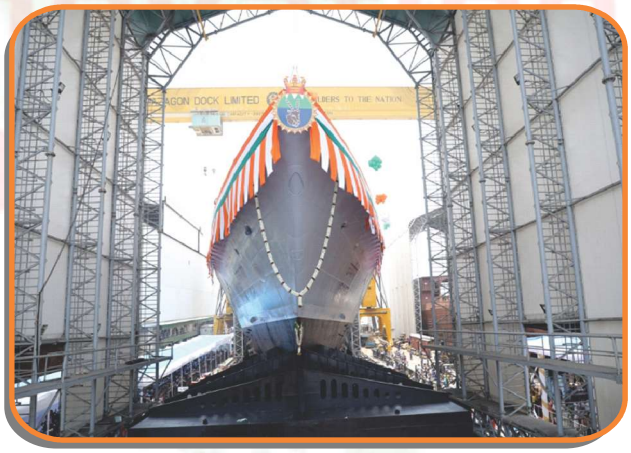
दिनांक 20.04.2022 को एमडीएल में पनडुब्बी वागशीर का जलावतरण करते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि) और नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण



परियोजना–75 की छठवीं स्कोर्पिन पनडुब्बी के जलावतरण समारोह में उपस्थित नौसेना अधिकारी एवं कार्मिक



रियर एडमिरल जी के हरीश, एवीएसएम, वीएसएम, डीजीएनडी ने दिनांक 20.06.2022 को एमडीएल में यार्ड 12654, परियोजना 17ए के चौथे स्टील्थ फ्रिगेट की कील लेइंग करते हुए ।



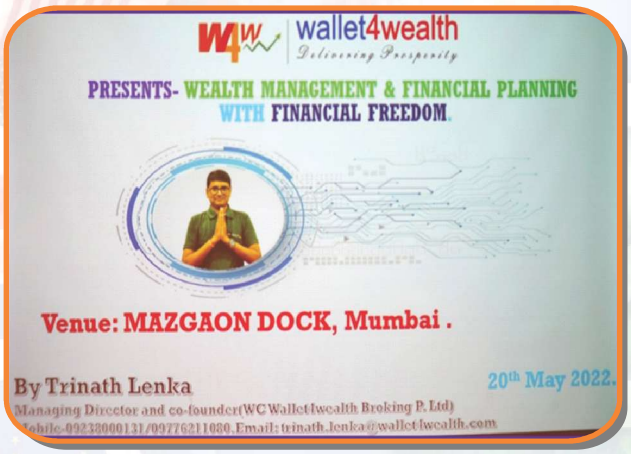
दक्षिण स्लिपवे से समुंदर में जाते हुए पी15बी के चौथे विध्वंसक 'सुरत' का जलावतरण समारोह

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियां





दिनांक 17.05.2022 को सूरत और उदयगिरी का लॉन्चिंग करते हुए माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी के साथ एमडीएल के वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि) और अन्य निदेशकगण





दिनांक 20.05.2022 को एमडीएल के सागरिका सभागार में वेल्थ मैनेजमेंट पर आयोजित एक वार्तालाप



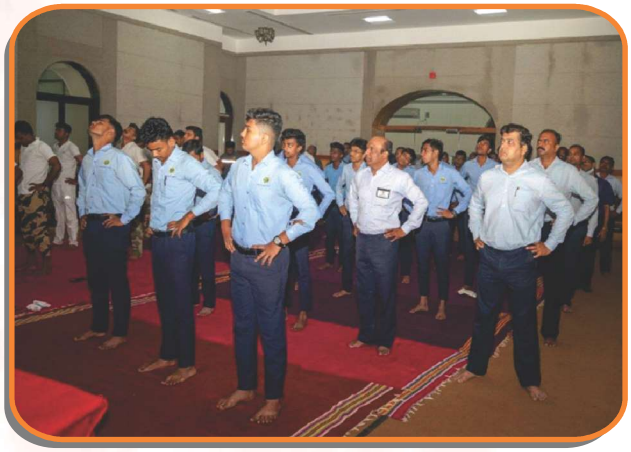
दिनांक 12.06.2022 को एमडीएल के आवासीय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एवीएसएम, भानौ (नि) और अन्य अधिकारीगण



दिनांक 14.06.2022 को एमडीएल में प्रबंधन व्यवस्थापन द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियां





दिनांक 21.06.2022 को एमडीएल द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आयोजन के दौरान योग करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण



दिनांक 28.06.2022 को एमडीएल में यार्ड 12654 का कील लेइंग समारोह पर श्री बीजू जॉर्ज, निदेशक (जहाज निर्माण) सभा को संबोधित करते हुए ।



एमडीएल में 75 वां स्वतंत्रता दिवस का पालन करते हुए सीआईएसएफ़ जवानों के साथ बाएँ से कमांडर वी. आर. पुराणिक, निदेशक (सयो. एवं का.), कमांडर जसबीर सिंह, निदेशक (पन. एवं भा.अभि.), वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री महेश चन्द्रा, मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं श्री संजीव सिंघल, निदेशक (वित्त)



दिनांक 01.07.2022 को फ्यूल सेल इलेक्ट्रिक वेसल के उद्घाटन पर अधिकारियों को संबोधित करते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं निदेशक, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि)



फ्यूल सेल इलेक्ट्रिक वेसल के कार्य का निरीक्षण करते हुए तकनीशियन

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियां



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान टंकण स्पर्धा के प्रतिभागी एवं निर्णायकगण



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित कथा-कथन स्पर्धा



हिन्दी पखवाड़ा के गायन स्पर्धा में उपस्थित बाएँ से कमांडर वी आर पुराणिक, निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक), वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि), और श्री महेश चन्द्रा, मुख्य सतर्कता अधिकारी



हिन्दी पखवाड़ा के गायन स्पर्धा में गीत गाते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि)



दिनांक 29.09.2022 को हिन्दी पखवाड़ा 2022 के कविता स्पर्धा में कविता पढ़ते हुए अधिकारी



एमडीएल परिसर में स्वच्छता अभियान के दौरान सफाई करते हुए कमांडर वी आर पुराणिक, निदेशक (सायो एवं का), के साथ वरिष्ठ अधिकारीगण के साथ कर्मचारी एवं सफाईकर्मी





परियोजना 17ए की तीसरी स्टील्थ युद्धपोत 'तारागिरी' का जलावतरण

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड



एमडीएल निर्मित एसएसके श्रेणी पनडुब्बी 'शल्की'



पी75 की पहली पनडुब्बी 'कलवरी'

राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता